ISSN 2349-6614

नवम्बर 2019

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

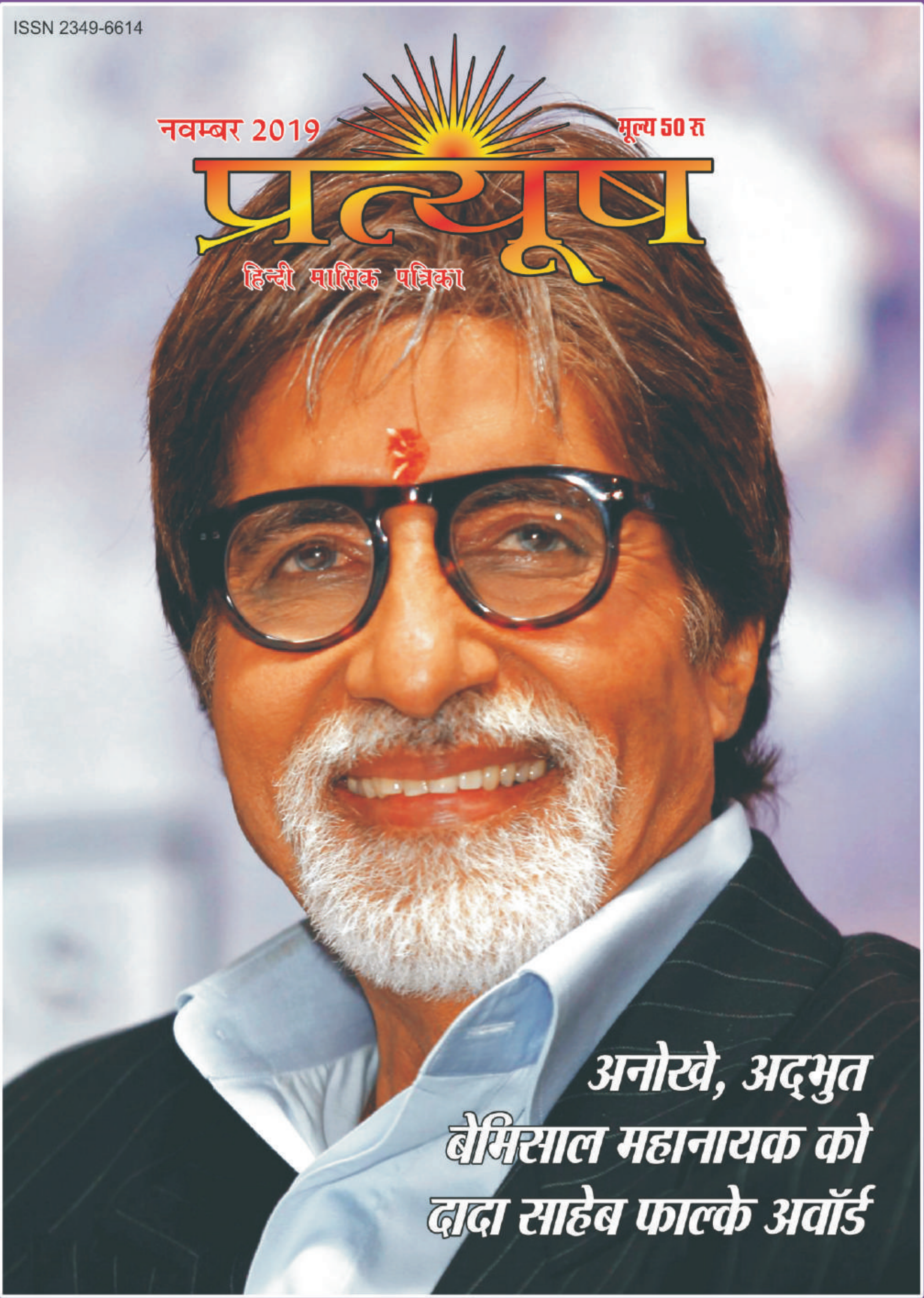

अनोखे, अद्‌भुत बेमिसाल महानायक को दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 17 अंक 9 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

राजस्थान जनजाति क्षेत्रीय विकास सहकारी संघ लि.

"जनजाति विकास भवन" प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)

विकेन्द्रीकृत मत्स्य बीज पालन नर्सरी स्थापना के लिये प्रस्ताव आमन्त्रण सूचना

उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाडा एवं प्रतापगढ जिले क्षेत्र अन्तर्गत उपयोजना क्षेत्र में निवासरत स्थानीय जनजातियों से अपनी निजी भूमि पर मत्स्य बीज पालन नर्सरी कार्य के माध्यम से अतिरिक्त आय का साधन सृजित करने के लिये **"पहले आओ पहले पाओ"** के आधार पर कार्य प्रस्ताव आमन्त्रित किये जाते है। जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:–

स्थानीय जनजातियों की अपनी भूमि पर बीज पालन हेतु गर्मी में पर्याप्त पानी स्त्रोत एवं उपयुक्त किस्म की मिट्टी उपलब्ध होने की स्थिति में लगभग तीन बीघा निजी भूमि क्षेत्र में 600 घन मीटर की प्रति ईकाई से दो मत्स्य बीज पालन नर्सरी निर्माण एवं मत्स्य बीज पालन कार्य के माध्यम से आय का अतिरिक्त साधन सृजन कर सकते है।

योजना अन्तर्गत निर्धारित मात्रा में कार्य के मूल्यांकन के आधार पर ईकाई लागत का 75 प्रतिशत अनुदान राशि का स्थानान्तरण सीधे लाभान्वितों के बैंक खातों में हस्तानान्तरण योग्य रहेगी एवं प्रथम वर्ष के लिये 100 प्रतिशत अनुदान पर मत्स्य बीज वितरण का प्रावधान किया जावेगा।

योजना का सम्पूर्ण लाभ संबंधित जनजाति लाभान्वित को प्राप्त होगा। लाभान्वित के द्वारा नर्सरी से प्राप्त मत्स्य बीज की बिक्री करने के लिये स्वतन्त्र रहेगा। राजससंघ द्वारा भी आवश्यकता अनुसार उक्त बीज क्रय किया जा सकता है।

स्थानीय जनजातियों द्वारा सादे कागज पर महा प्रबन्धक, राजससंघ लि0, उदयपुर के नाम से आवेदन किया जा सकता है। आवेदन के साथ लाभान्वित का आधार कार्ड, बैंक खाते की पासबुक, भूमि की पटवारी नकल व संबंधित ग्राम पंचायत से चयनित भू–भाग पर नर्सरी निर्माण के संबंध में सहमति/अनुशंषा संलग्न करना अनिवार्य है।

विस्तृत जानकारी के लिये संपर्क करे –

मत्स्य विपणन अधिकारी, राजससंघ लि0, उदयपुर
(दूरभाष 0294–2491740)

सहायक मत्स्य विकास अधिकारी, राजससंघ लि0, बांसवाडा
(दूरभाष 02962–254268)

सहायक मत्स्य विकास अधिकारी, राजससंघ लि0, डूंगरपुर
(दूरभाष 02964–232290)

Decentralised_Fish_Seed_Nursery_Construction_Offer

नवम्बर
2019
वर्ष 17, अंक 9

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नही है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक-संस्थापक:
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

07 राजस्थान विशेष

राजस्थान निकाय चुनाव-2019

14 स्मरण

नेहरू का वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विवेकवाद

19 पंच–परमेश्वर

अयोध्या... फैसले का इंतजार

26 शख्सियत

महानायक को महासम्मान

34 सावधानी

कार्बाइड से पके फल-सब्जियां

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Nikunj Bhatt
+919414163030
Neeraj Bhatt
+919414343555
Shiv Bartan & Caterers
■ बिस्तर, बर्तन ■ हलवाई व्यवस्था ■ गीली दाल ■ काजू की पिसाई ■ कॉफी मशीन व एक्स्ट्रा
काउन्टर की व्यवस्था ■ पत्तल-दोने■ डिस्पोजेबल आइटम ■ नेपकिन फ्यूल के विक्रेता
Sutharwara, North Ayad,
Udaipur - 313001 (Raj.)
Phone :- 0294-2410237
Tele/Fax : +91 294 2410237
Email : shivbartan@gmail.com
Website : shivbartancaterers1.getit.in

गिरनार खाद का वादा, उन्नत कृषि सम्पन्न किसान
Rama
रामा फॉस्फेट्स लिमिटेड
गिरनार
ISO
QUALITY CERTIFIED
हमारे उत्कृष्ट उत्पाद
बोरोनेटेड सिंगल सुपर फॉस्फेट
सिंगल सुपर फॉस्फेट
जिंकेटेड सिंगल सुपर फॉस्फेट
मेग्नेशियम सल्फेट
4807/11, उमरड़ा, झामरकोटड़ा रोड, तहसील-गिर्वा, उदयपुर (राजस्थान)
Ph. : 0294-2342010, E-mail : rama.udaipur@ramagroup.co.in visit us : www.ramaphosphates.com

फिर तबाह किए आतंक के गढ़

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के तंगधार सेक्टर में 19 अक्टूबर की रात संघर्ष विराम का उल्लंघन कर पाकिस्तान द्वारा की गई अकारण गोलीबारी का भारत की ओर से करारा जवाब दिया गया। भारत ने पाक अधिकृत कश्मीर(पीओके) में आतंकी ठिकानों पर गोलीबारी कर करीब एक दर्जन पाक सैनिकों ओर दो दर्जन आतंकवादियों को मार गिराने के साथ ही पीओके की नीलम घाटी के जूरा, ऐथमुकाम और कुंदलशाही के तीन आतंकी कैम्पों को ज़मीदोज कर दिया। भारत की इस कार्रवाई से पाकिस्तान की आतंकी संरचना को एक बार फिर भारी नुकसान से रूबरू होना पड़ा है। एलओसी के उस पार इन कैम्पों में रह रहे आतंकियों को कवर देते हुए पाकिस्तानी सेना भारतीय सीमा में घुसपैठ कराना चाहती थी। उल्लेखनीय है कि पीओके में 28 से अधिक लॉचिंग पैड पर करीब 300-400 आतंकवादियों का जमावड़ा है। चूंकि सर्दियां शुरू हो चुकी हैं और सप्ताह भर बाद भारी बर्फबारी भी शुरू हो जाएगी, ऐसे में पाकिस्तानी सेना ज्यादा से ज्यादा संख्या में आतंकियों को भारत में घुसपैठ कराना चाहती है। उसका मकसद जम्मू-कश्मीर में सामान्य होते हालातों को बिगाड़ना और घाटी में खून-खराबा कराना है। पाकिस्तान की ओर से की गई गोलीबारी में दो भारतीय जवान भी शहीद हुए, एक नागरिक मारा गया तथा एक मकान पूरी तरह ध्वस्त हो गया। पाकिस्तान ने इस साल अक्टूबर तक 2300 से ज़्यादा बार संघर्ष विराम का उल्लंघन किया है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने के बाद पिछले दो-तीन महिनों में तो उसने इस तरह की कायराना हरकतें ज्यादा ही की हैं। भारतीय सेना ने पहले सर्जिकल स्ट्राइक, इसके बाद एयर स्ट्राइक और अब आर्टिलरी स्ट्राइक के माध्यम से पाकिस्तान को फिर चेतावनी दी है कि वह अपनी नापाक हरकतें यदि बंद नहीं करेगा तो, उसे ऐसा जवाब मिलेगा कि उठने में घुटने भी साथ नहीं देंगे।

दरअसल, पाकिस्तान व वहां के हुक्मरान कश्मीर में अनुच्छेद-370 को मुद्दा बनाए रखने के लिए घाटी में शांति स्थापित करने के प्रयासों में व्यवधान उत्पन्न करने पर हर पल आमादा हैं। बर्फबारी शुरू हो गई तो आतंकियों को घुसपैठ कराना उसके लिए आसान नहीं रहने वाला। इसलिए वह गाहे-बगाहे घुसपैठियों को मदद देने की ऐसी ही हरकतों को अंजाम देने पर तुला है। बड़ा कारण यह भी है कि कश्मीर मुद्दे पर दुनिया भर में मुंह की खाने के बाद पाकिस्तान के पीएम इमरान खान को सेना के इशारों पर कदमताल करने के अलावा कुछ और सूझ ही नहीं रहा। इसके अलावा अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर नाकाम रहने के बाद वे घरेलू मोर्चे पर भी बुरी तरह घिर गए हैं।

जम्मू और लद्दाख संभाग में पहले भी हमारे लिए कोई चुनौती नहीं थी, सबसे बड़ी चुनौती घाटी थी। वहीं पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों की पैठ होती है और वे अशांति फैलाने का प्रयास करते हैं। हालांकि अलगाववादी संगठनों पर नकेल कसी जा चुकी है, विपक्षी राजनीतिक दलों की गतिविधियां भी शिथिल हैं, इसलिए उनके द्वारा घाटी के आम लोगों को उकसाने की संभावना फिलहाल नहीं दिखती। पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वहां के युवाओं में आक्रोश है। चरमपंथी और अलगाववादी ताकतों व कट्टरपंथी नेताओं के बहकावे में आकर वे पहले भी आजाद कश्मीर की मांग के साथ सड़कों पर उतरते रहे हैं। इसलिए विशेष राज्य का दर्जा समाप्त होने के बाद उनमें बेचैनी है। जिसे रोकने के प्रयास जरूरी हैं। हालांकि सीमा पार से मिल रही मदद रूक जाने से वे अपने पांव नहीं पसार सकते, पर बाहरी मजदूरों, व्यापारियों, अधिकारियों आदि को निशाना बना कर अपना आक्रोश जाहिर करेंगे। अब सरकार और सुरक्षाबलों को इससे पार पाने पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है।

अनुच्छेद 370 को हटाने को लेकर विपक्ष को सरकार का साथ देना चाहिए। यह एक राष्ट्रीय निर्णय है, जिस पर संसद के माध्यम से पूरे देश की जनता ने मोहर लगाई है। विपक्ष ने इस मुद्दे पर वोटों की राजनीति से परे रहते हुए सरकार के हाथ मज़बूत किए तो निश्चय ही इसका उन्हें स्वत: ही सियासी लाभ मिलेगा और वे राष्ट्रवाद की उपेक्षा के आरोप से बच जाएंगे। इस समय दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और हितों को तरजीह दी जानी चाहिए। इसमें कोई संशय नहीं कि जम्मू-कश्मीर में स्वतंत्रता के बाद से ही वहां की राजनीति दो-तीन परिवारों के इर्द-गिर्द लिपटी रही जिन्होंने अपने राजनैतिक फायदों के लिए केसर की घाटी को साम्प्रदायिकता और अलगाववाद की संकीर्ण सोच से खूब सींचा। अब वक्त आ गया है कि 70 साल के इस खूनी नासूर का पक्का इलाज कर देश में शांति, सद्भाव और विकास का माहौल बनाकर आने वाली पीढ़ी को एक समृद्ध और सशक्त भारत सौंपा जाए।

SWACH

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग
द्वारा वित्त पौषित

स्वच्छ परियोजना, उदयपुर

(स्वच्छता जल एवं सामुदायिक स्वास्थ्य परियोजना)
बड़ी रोड, हवाला खुर्द, उदयपुर (राज.)

SWACH

Email ID - swachhoudaipur@gmail.com, Website - www.swachproject.com

जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में संचालित विभिन्न योजनाऐं

2600 माँ–बाड़ी केन्द्रों का संचालन प्रत्येक माँ–बाड़ी केन्द्र पर 6 से 12 वर्ष आयुवर्ग के 30 बालक बालिकाऐं लाभान्वित		
4500 स्वास्थ्यकर्मियों के माध्यम से क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम तथा मातृ एवं बाल पोशण कार्यक्रम का संचालन		
• 1500 माँ–बाड़ी केन्द्र भवन निर्माण • जनजाति हॉस्टल मरम्मत एवं रख रखाव • लिफ्ट सिंचाई योजना • जल परीक्षण प्रयोग" ाला का संचालन		
मेंजर निर्माण योजना	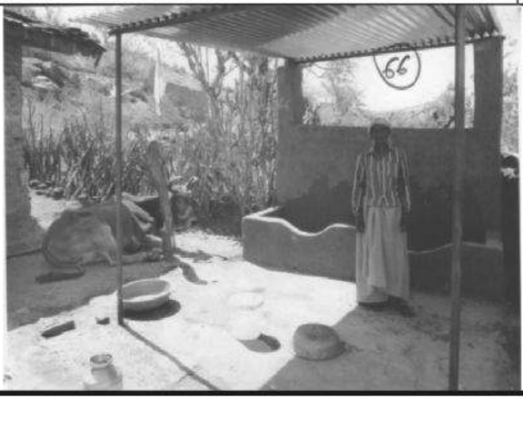	

राजस्थान : शहरी सरकारों का गठन

पार्षद बने बिना ही मुखिया के लिए दावेदारी की सौगात

भारतीय जनता पार्टी मोदी और कांग्रेस सत्ता के भरोसे

✍ जगदीश सालवी

राजस्थान के छोटे-बड़े शहरों और कस्बों में इन दिनों सफेद-कुर्ता पायजामा पहने और आंखों पर काला चश्मा चढ़ाए अपने-आपको राजनीति का महापंडित बताने वाले लोगों की चहल-कदमी लोकसभा और विधानसभा चुनाव के बाद फिर से बढ़ गई है। दरअसल यह गहमा-गहमी इसी माह होने वाले स्थानीय निकाय और उसके बाद पंचायतराज चुनावों को लेकर है।

प्रदेश में वर्तमान में कांग्रेस सत्तारूढ़ है लेकिन उसके लिए मैदान निरापद नहीं है। लोकसभा चुनाव में राज्य में सत्ता के रहते कांग्रेस की बुरी हार को न मतदाता भूले हैं और न ही कांग्रेस के नेता। अतएव कांग्रेस को चोटी से एड़ी तक पसीना बहाना पड़ेगा। सबसे पहले तो गुटबाजी-धड़ेबंदी खत्म करनी पड़ेगी। भाजपा को अब भी विश्वास है कि नरेन्द्र मोदी का जादू मतदाताओं पर कायम है, लेकिन ये चुनाव शहरी सरकार के लिए है और इन्हें स्थानीय मुद्दों पर ही लड़ा जाना है। यदि कांग्रेस एकजुट होकर और जमीनी स्तर के कार्यकर्त्ताओं को लेकर मैदान में उतारती है तो भाजपा के लिए राह उतनी आसान नहीं होगी। लेकिन हाल ही में राज्य सरकार ने मेयर, सभापति अथवा अध्यक्ष के चुनाव को लेकर जो नई व्यवस्था लागू की है, उसके अनुसार इन पदों पर कोई भी व्यक्ति चुनाव मैदान में उतर सकता है। अब यह जरूरी नहीं कि वह पार्षदों में से ही कोई हो। हालांकि इस व्यवस्था को लेकर सत्तारूढ़ कांग्रेस में ही मतभिन्नता है। उपमुख्य मंत्री सचिन पायलट व खाद्य व नागरिक आपूर्ति मंत्री रमेश मीणा सहित कुछ विधायक इससे असहमति जता रहे हैं। राज्य के कुल 152 स्थानीय निकायों में से 49 के चुनाव नवम्बर में होंगे जबकि शेष के अगले वर्ष कराए जाएंगे। जयपुर, जोधपुर और कोटा में अब दो-दो नगर निगम होंगे। इस प्रकार राज्य में निगमों की संख्या 10 हो गई है। निर्वाचन विभाग ने चुनावों की तैयारियां शुरू कर दी हैं। इस बार के निकाय चुनावों में पार्षद प्रत्याशियों से विधानसभा व लोकसभा प्रत्याशियों की तरह ही पार्षद प्रत्याशियों से चल-अचल संपत्ति, आय-व्यय का संपूर्ण विवरण, आय के स्रोत का ब्योरा और अपराध के छह माह या उससे अधिक अवधि के लंबित मामलों का संपूर्ण विवरण मांगा जाएगा।

निगमों में भावी मुखिया

जयपुर ग्रेटर	ओबीसी (महिला)
जयपुर हैरिटेज	ओबीसी (महिला)
जोधपुर उत्तर	सामान्य (महिला)
जोधपुर दक्षिण	सामान्य (महिला)
कोटा दक्षिण	सामान्य
कोटा उत्तर	एससी (महिला)
उदयपुर	ओबीसी
भरतपुर	एससी
अजमेर	एससी (महिला)
बीकानेर	सामान्य (महिला)

आम आदमी के लिए यह चुनाव बहुत महत्वपूर्ण हैं। मतदाताओं को काफी सोच-समझकर क्षेत्र के सुख-दुःख में वास्तविक रूप से भागीदारी करने वाले को अपना प्रतिनिधि चुनना होगा। मतदाताओं की सूझबूझ, परख और आचरण से ही स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव का मार्ग प्रशस्त होगा। लोकतंत्र की सफलता के लिए जरूरी है कि मतदाता पंचायतराज संस्थाओं एवं स्थानीय निकायों में अपने प्रतिनिधि का चुनाव बिना लाग-लपेट भय और लोभ रहित होकर करें। इससे हमें विधानसभा और लोकसभा के लिए बेहतर प्रत्याशी खोजने में सहूलियत होगी।

निकाय चुनाव राजनीति की बुनियाद हैं। इसमें स्वच्छ व ईमानदार जनप्रतिनिधियों को चुनना बहुत जरूरी है। बेदाग प्रतिनिधि चुने जाएंगे तब ही लोकतंत्र की नींव को मजबूत किया जा सकेगा। मजबूत नींव पर ही बुलन्द इमारत का निर्माण संभव हो सकेगा। निकाय चुनाव में एक फायदा यह भी रहता है कि चुनाव लड़ने वाला प्रत्याशी आपके आस-पास का और जाना-पहचाना होता है। प्रत्याशी अपने ही आसपास रहने वाले होने के कारण सही प्रत्याशी का चुनाव करना संभव हो पाता है।

पार्षद जनप्रतिनिधियों में सबसे छोटी और महत्त्वपूर्ण कड़ी होते हैं। यही वजह है कि जनता को जब भी कोई समस्या होती है तो वे सबसे पहले पार्षद के पास जाते हैं। सबसे पहले उन्हें ही अपनी समस्या बताते हैं। पार्षद भी क्षेत्र का होने के कारण समस्या को गंभीरता और बारीकी से समझ पाता है। ऐसे में पार्षद का सक्रिय रहना बहुत जरूरी हो जाता है अपने वार्ड में विकास कार्यों के लिए। वार्ड चुनाव में वर्चस्व कायम करना सभी राजनीतिक पार्टियों के लिए बड़ी चुनौती होती है।

पायलट नाखुश

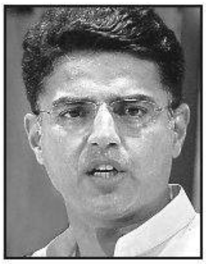

जयपुर, कोटा और जोधपुर में दो-दो मेयर बनाने के सरकार के फैसले पर डिप्टी सीएम सचिन पायलट नाखुश हैं। उन्होंने कहा कि ये निर्णय सही नहीं है। इसमें बैकडोर एंट्री होगी, जो व्यक्ति पार्षद का चुनाव नहीं जीत पा रहा है, उसको हम मेयर का चुनाव कैसे लड़ने दें। मैं समझता हूं कि इससे लोकतंत्र मजबूत नहीं होगा। हमारी पार्टी ने हमेशा कहा है कि लोकतंत्र मजबूत हो। जनता से सीधा जुड़ाव रखें। इस प्रकार का जो निर्णय लिया गया है, मैं इससे सहमत नहीं हूं।

पायलट ने कहा कि बिना चुनाव लड़े मेयर सभापति चुनने की केबिनेट में चर्चा नहीं हुई है। हमने पहले सीधे अध्यक्ष चुनने की बात कही थी लेकिन उसको बाद में बदल दिया गया, वहां तक तो ठीक था लेकिन हाइब्रिड नाम दिया जा रहा है, मैं समझता हूं कि यह निर्णय सही नहीं है। जो पार्षद का चुनाव नहीं जीत सकता, उसको सीधा मेयर बनाना गलत है। मैं इस निर्णय से सहमत नहीं हूं।

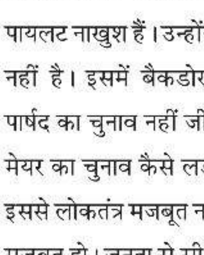

अब तक कहां थे?

स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल ने राज्य सरकार के निर्णय को सही ठहराते हुए कहा कि 31 जनवरी 2019 को सरकार ने भाजपा के नियम को बदल किसी भी व्यक्ति के निकाय प्रमुख का चुनाव लड़ सकने का रूल लागू किया था। अभी 16 अक्टूबर 2019 को वही अधिसूचना चुनाव के समय दुबारा जारी की तो हंगामा क्यों? नौ माह तक मंत्री और नेता कहां गए थे। विभाग के पास शक्तियां हैं। ये मामले कैबिनेट में जाते ही नहीं है।

तीनों शहरों के निगम भंग

नवम्बर में कार्यकाल खत्म होने के बाद प्रशासक लगाए जाएंगे, चुनाव 6 माह में, शेष 49 निकायों के चुनाव यथावत

जयपुर : अब नगर निगमों के 250 वार्ड

1. जयपुर हैरिटेज कुल वार्ड : 100

विधानसभा क्षेत्र : सिविल लाइंस, आदर्श नगर, किशनपोल, हवामहल और आमेर

इसमें 2014 के सीमांकन के आज तक मान्य वार्ड शामिल रहेंगे। सिविल लाइंस के 22 से 31, आदर्श नगर के 61 से 60, किशनपोल के 71 से 79, हवामहल के 80 से 90 और आमेर के 91 वार्ड।

2. ग्रेटर जयपुर कुल वार्ड : 150

विधानसभा क्षेत्र : विद्याधर नगर, झोटवाड़ा, सांगानेर, बगरु, मालवीय नगर

वर्तमान वार्डो के अनुसार सीमांकन कर शामिल किए : विद्याधर नगर के एक से 14, झोटवाड़ा के 15 से 21, सांगानेर के 32 से 44, बगरु के 45 से 51 और मालवीय नगर के 52 से 60 नम्बर वार्ड तक।

जोधपुर : अब 160 वार्ड

1. जोधपुर उत्तर, वार्ड : 80

विधानसभा क्षेत्र : सरदारपुरा, जोधपुर शहर और सूरसागर

वर्तमान वार्डो के अनुसार इस निगम में वार्ड रहेंगे : सरदारपुरा के 44, 45, 46, 49 से 55 एवं 59 से 64 जोधपुर शहर सीट से वार्ड 32 से 38, वार्ड 47 और 48, सूरसागर के वार्ड एक, वार्ड 12 से 19 एवं वार्ड 65 शामिल।

2. जोधपुर दक्षिण वार्ड 80

विधानसभा क्षेत्र : सरदारपुरा, जोधपुर शहर, सूरसागर

वर्तमान वार्डो के अनुसार इस निगम में शामिल वार्ड : सरदारपुरा के 42, 43, 56, 57, 58, जोधपुर सिटी के वार्ड 23 से 31, 39, 40 और वार्ड 41 तथा सूरसागर के वार्ड 2 से 11, 20, 21 और वार्ड 22 को शामिल।

कोटा : अब 150 वार्ड

1. कोटा उत्तर वार्ड : 70

विधानसभा क्षेत्र : कोटा उत्तर और लाडपुरा

इस निगम में वर्तमान वार्डो के अनुसार वार्ड शामिल किए : कोटा उत्तर के 1 से 3, 11 से 19, वार्ड 34 से 43 तथा लाडपुरा के 7 से 10 एवं 30 से 32 वार्ड शामिल किए।

2. कोटा दक्षिण वार्ड : 80

विधानसभा क्षेत्र : कोटा द., लाडपुरा, रामगंज मंडी

वर्तमान वार्डो के अनुसार वार्ड शामिल : कोटा दक्षिण 20 से 23, 26 से 28, 44 से 58, 62, 65 लाडपुरा के वार्ड 6, 29, 33, 59 व 60 से 63 और रामगंज मंडी के वार्ड नं. 4, 5, 24 व 25

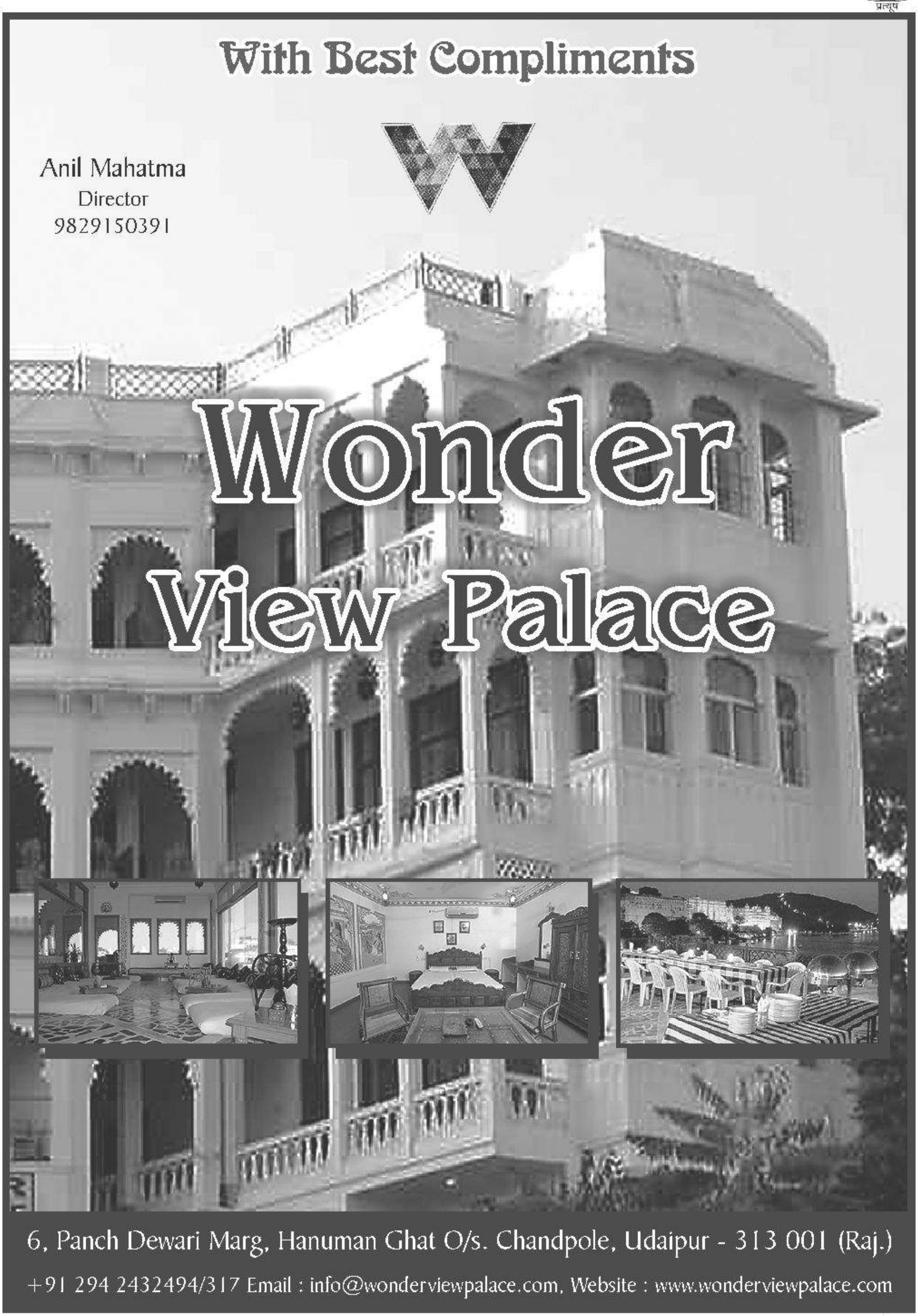
With Best Compliments
Anil Mahatma
Director
9829150391
Wonder
View Palace
6, Panch Dewari Marg, Hanuman Ghat O/s. Chandpole, Udaipur - 313 001 (Raj.)
+91 294 2432494/317 Email : info@wonderviewpalace.com, Website : www.wonderviewpalace.com

मोदी-जिनपिंग वार्ता

रिश्तों को मौजूदा स्तर से बेहतर बनाने की कवायद

चीन और भारत के रिश्ते सदियों पुराने हैं। न केवल दोनों के बीच हजारों साल से व्यापार हो रहा है, बल्कि चीनी लोग भारत आकर यहां की संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं से रूबरू होते रहे हैं। चीन में बौद्ध धर्म गया ही भारत से है जो शांति और सद्भावना पर जोर देता है। ऐसे में किसी भी मुद्दे पर टकराव दोनों देशों के हित में नहीं है। महाबलीपुरम में 11 अक्टूबर को दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के बीच अनौपचारिक वार्ता का दूसरा दौर फिलहाल तो यही संकेत देता है कि मतभेद वाले मसलों को परस्पर हितों में बाधक नहीं बनने दिया जाए।

✍ नंद किशोर

तमिलनाडु के मामल्लपुरम(महाबलीपुरम्)में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच अनौपचारिक वार्ता के दूसरे दौर ने यही संकेत दिया है कि दोनों देश फिलहाल मतभेद वाले मसले छोड़कर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। मौजूदा स्थितियों में यह उचित तो है, लेकिन ऐसे मसलों को सुलझाए बगैर भरोसे के साथ आगे बढ़ते रहना भी संभव नहीं। सच तो यह है कि इन मसलों को सुलझाकर ही आपसी भरोसे की कमी को दूर किया जा सकता है। वुहान(चीन) के बाद मामल्लपुरम में हुई अनौपचारिक बैठक की खास बात यह रही कि उसमें कश्मीर का मुद्दा नहीं उठा। इसका महत्व इसलिए है, क्योंकि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 खत्म करने के भारत के फैसले पर चीन ने न केवल एतराज जताया था, बल्कि इस मसले को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भी ले गया।

इसमें कोई दो राय नहीं कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को निष्क्रिय करने और राज्य को दो हिस्सों में बांट कर जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख को केन्द्र शासित प्रदेश बनाने के भारत के फैसले से चीन खुश नहीं है। उसकी पीड़ा लद्दाख को लेकर ज्यादा इसलिए है कि लद्दाख क्षेत्र में भारत और चीन की विशालकाय सीमा है। चीन इस बात को भी अच्छी तरह समझ रहा है कि कश्मीर के मुद्दे पर भारत का रूख एकदम स्पष्ट है और इस पर वह किसी से कोई समझौता नहीं करेगा या कश्मीर पर वार्ता को लेकर किसी तीसरे पक्ष को बीच में नहीं आने देगा। इसलिए अंदर से चीन भारत के कठोर रूख से बेचैन है। चीन इस हकीकत को भी भलीभांति समझ रहा है कि इस तरह के मुद्दों को लेकर तनाव बनाए रखना न दोनों देश के हित में है, न एशियाई शांति के लिए यह अच्छा है। ऐसे में चीनी राष्ट्रपति की यह भारत यात्रा रिश्तों के नए दौर का संदेश देती है।

जिनपिंग के बीच कई चरणों में तकरीबन साढ़े छह घंटे चली व्यक्तिगत वार्ता में आर्थिक और कारोबारी मुद्दों को लेकर गहन मंथन के बाद एक उच्च स्तरीय वार्ता तंत्र बनाने पर सहमति बनी। हर वर्ष अनौपचारिक तौर पर मिलकर रिश्तों को दिशा देने की यह कोशिश दोनों नेता आगे भी जारी रखेंगे। इसके लिए जिनपिंग ने मोदी को चीन आने का न्योता दिया जिसे उन्होंने स्वीकार किया। आर्थिक सहयोग तंत्र स्थापित करना निश्चित रूप से एक नीतिगत फैसला है, जिसके दूरगामी परिणाम निकल सकते हैं।

चीन के साथ कारोबारी रिश्तों पर बात होनी आवश्यक थी, क्योंकि आपसी व्यापार का पलड़ा चीन के पक्ष में अधिक झुका हुआ है। उसके साथ भारत का व्यापार घाटा करीब 55 अरब डॉलर है। दोनों देश व्यापार और निवेश पर चर्चा के लिए एक नए तंत्र की स्थापना करने और उन सेक्टरों की पहचान को राजी हुए हैं जहां निवेश किया जा सकता है। चीन ने भारतीय कारोबारियों को निवेश का निमंत्रण भी दिया। दरअसल अमेरिका से तनातनी के चलते

अमेरिकी कंपनियां वहां से अपना कारोबार समेटने के लिए तैयार हैं। जो चीन के लिए खतरे की घंटी है, क्योंकि उसकी विकास दर भी घट रही है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि चीनी अर्थव्यवस्था अगले कुछ सालों में डगमगा सकती है। ऐसे में चीन का भारत की ओर देखना स्वाभाविक है। चीन को यह समझना चाहिए कि भारत के साथ कारोबारी और सामाजिक-सांस्कृतिक रिश्तों को नई दिशा देना उसके अपने हित में भी है। भारत और चीन न केवल क्षेत्र और आबादी के लिहाज से बड़े देश हैं, बल्कि दोनों व्यापक विविधता और प्राचीन संस्कृति वाले भी हैं। भारतीय प्रधानमंत्री ने यह सही कहा कि पिछले दो हजार साल में अधिकांश समय भारत-चीन आर्थिक महाशक्ति रहे हैं और वर्तमान सदी में भी दोनों देश इस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

जहां तक रक्षा व सुरक्षा क्षेत्र का सवाल है उसमें पाकिस्तान के साथ चीन के संबंधों को हमें संज्ञान में रखना होगा, क्योंक बीजिंग की प्राथमिकता अपने आर्थिक हितों के संरक्षण की रहेगी, जिन्हें वह बहुत रणनीतिक रूप से पाकिस्तान में बढ़ा रहा है। चीन जिस तरह विश्व में आर्थिक ताकत के रास्ते पर तेजी से बढ़ रहा है, उसमें पश्चिमी देशों के स्थान पर चीन आ गया है और वह पाकिस्तान को अपने साथ लेकर भारत की आर्थिक तरक्की की रफ्तार को सुस्त करना भी चाहता है। अत: चीन से ज्यादा उम्मीद भी नहीं पाली जानी चाहिए। वह कश्मीर के मामले में भी एक शातिर रणनीति पर काम कर रहा है। दक्षिण एशिया में अपना प्रभुत्व जमाने में चीन काफी सक्रिय है। फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दुनिया में आज भारत का भी अच्छा प्रभाव है

और वह आर्थिक व सामरिक ताकत बनने की तरफ कदम बढ़ा रहा है। मोदी-जिनपिंग वार्ता एक ऐसे समय में हुई है जब भारत व पाकिस्तान के बीच रिश्ते तनावपूर्ण चल रहे हैं। इसके कूटनीतिक मायने भी महत्तवपूर्ण हैं। इस मुलाकात का बड़ा मकसद रिश्तों को मौजूदा स्तर से बेहतर बनाना है। दोनों देशों की कोशिश रही है कि पाकिस्तान की वजह से रिश्तों में कोई दरार न आए। इसलिए रिश्तों को मजबूत बनाने की दिशा में तभी बढ़ा जा सकता है जब रणनीतिक संतुलन भी बना रहे। ऐसे में इस तरह की अनौपचारिक मुलाकातें ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

आज जब 21वीं सदी एशिया की सदी मानी जा रही है तब उचित यही है कि भारत-चीन मिलकर काम करें। ऐसा करके वे अपने हितों की रक्षा करने के साथ ही विश्व को भी दिशा दिखा सकते हैं।

Mob.-98280-60789
94141-60789

॥ श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः ॥

प्रतापसिंह सरूपरिया (गोपजी)
R.T.O. एजेंट
यातायात एवं परिवहन सलाहकार

वेलकम यातायात एजेन्सी

हमारे यहां R.T.O. सम्बन्धित परमिट, फिटनैस, रजिस्ट्रेशन, ड्राइविंग लाइसेन्स, कंडक्टर लाइसेन्स, इन्टरनेशनल लाइसेन्स, चालान कम्पाउण्ड व बीमा आदि सभी प्रकार का कार्य किया जाता है।

ऑफिस : R.T.O. ऑफिस रोड, द्वारकेश कॉम्पलेक्स, प्रतापनगर-सुखेर बायपास, उदयपुर
घर :- प्लॉट नं. 27, न्यू डोरेनगर, बजाज सेवाश्रम के पीछे (नदी के पास) उदयपुर (राज.)
Email id :- welcomeyatayat.ps@gmail.com

अंतर्राष्ट्रीय
अहिंसा दिवस
2 अक्टूबर

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

"सत्य-अहिंसा के पुजारी"

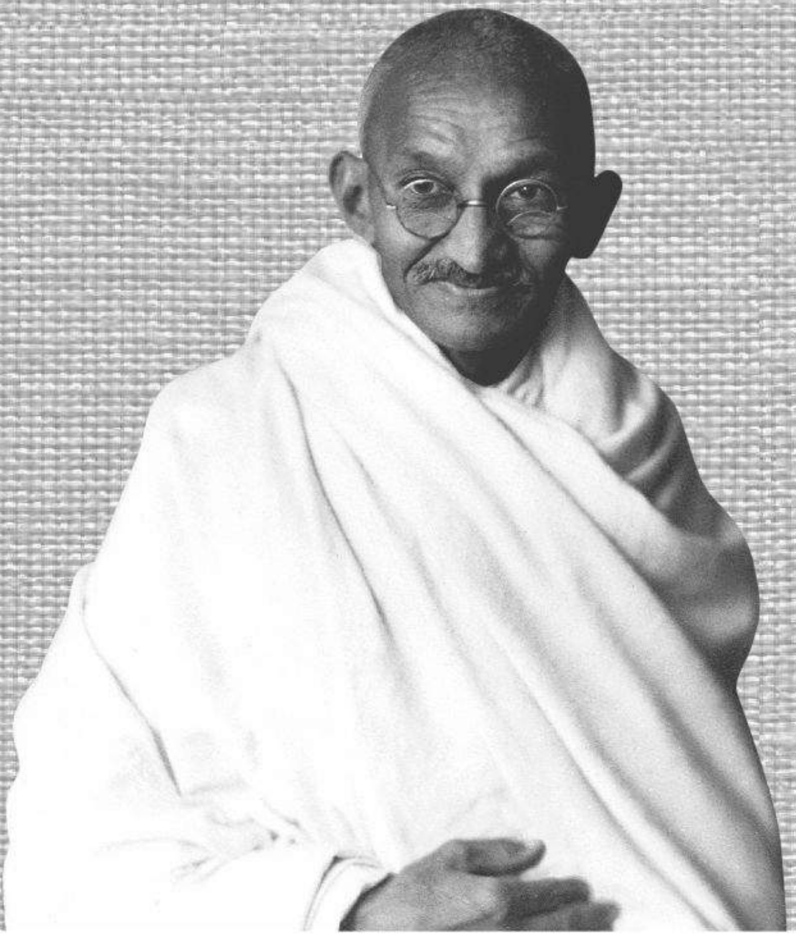

मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा जिसमें गरीब से गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि भारत उनका देश है, जिसके निर्माण में उनकी आवाज़ का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिये कोशिश करूंगा कि जिसमें ऊँचे और नीचे वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध सम्प्रदायों में पूरा मेलजोल होगा। - महात्मा गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर आयोजित

गांधी सप्ताह: 2-9 अक्टूबर, 2019 | जयपुर

2 अक्टूबर, 2019

प्रातःकालीन प्रार्थना सभा प्रातः 7:30-8:15 गांधी स्टेच्यू, सचिवालय, जयपुर	गांधी मूर्ति स्थल पर कार्यक्रम प्रातः 8:30-9:00 गांधी सर्किल, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर	गांधी प्रदर्शनी एवं खादी मेले का उद्घाटन प्रातः 11:00 से अपराह्न 11:45 जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 2-9 अक्टूबर, 2019
गांधी उत्सव ('सहर' संस्था द्वारा) का शुभारम्भ दोपहर 12:00-12:30 सेन्ट्रल पार्क, जयपुर, 2-9 अक्टूबर, 2019	भजन संध्या एवं सरोद वादन : सुनन्दा शर्मा, उस्ताद अमज़द अली खान सायं 6:30-8:00, सेन्ट्रल पार्क, जयपुर	

3 अक्टूबर, 2019

उद्घाटन समारोह प्रातः 10:00 से 11:30 बिड़ला सभागार, जयपुर	सामाजिक कल्याण सत्र प्रातः 11:30 से अपराह्न 1:30 बिड़ला सभागार, जयपुर	गांधी एक्सपो प्रातः 11:00 से सायं 6:00 बिड़ला सभागार, जयपुर
स्वच्छता सम्मेलन दोपहर 3:30 से सायं 5:30 बिड़ला सभागार, जयपुर	खादी हेरिटेज शो (प्रसाद बिड़प्पा द्वारा) की प्रस्तुति सायं 7:00 से रात्रि 8:30 बिड़ला सभागार, जयपुर	

4 अक्टूबर, 2019

महिला स्वयं-सहायता समूहों की कार्यशाला प्रातः 10:30 से अपराह्न 1:00 बिड़ला सभागार, जयपुर	गांधी एक्सपो प्रातः 11:00 से सायं 6:00 बिड़ला सभागार, जयपुर	खादी संगोष्ठी अपराह्न 3:00 से सायं 5:00, बिड़ला सभागार, जयपुर	'भारत भाग्य विधाता' नाटक (श्रीमद् राजचंद्र मिशन द्वारा) का मंचन सायं 7:00 से रात्रि 8:30, बिड़ला सभागार, जयपुर

आप सादर आमंत्रित हैं

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

राष्ट्रपिता बापू के सिद्धांतों पर अमल करते हुए उनके सपनों को साकार करना ही उन्हें हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है।
अशोक गहलोत

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान सरकार

नेहरू का वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विवेकवाद

डॉ. सत्यनारायण सिंह

जन्म : 14 नवम्बर 1889
निधन : 27 मई, 1964

"पं. नेहरू ने भारतवासियों को संकुचित क्षेत्रीयता, भाषावाद, जातिवाद एवं सांप्रदायिक संकीर्णता से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत किया। उन्होंने कहा था कि सबसे पहले हम भारतीय हैं, उसके बाद आप और मैं। उन्होंने कहा था - हिन्दुस्तान मेरे खून में समाया हुआ हैं। उसमें बहुत सी ऐसी बातें है जो मुझे देश सेवा के लिए उकसाती हैं। यदि राष्ट्रीयता का आधार धर्म है तो भारत में न केवल दो धर्म वरन तमाम धर्म मौजूद हैं। उन्होंने कहा था कि राष्ट्रीयता का आधार धर्म नहीं वरन मातृभूमि के प्रति लोगों का स्वाभाविक प्रेम है।"

पं. नेहरू युग प्रवर्तक थे। उनके व्यक्तित्व में उच्च आध्यात्म तथा वैज्ञानिकरण का सम्मिश्रण था। उनके ऊपर दार्शनिक निल, मार्क्स, जार्ज बर्नार्ड शाह, बर्टेंड रसेल का गहरा प्रभाव था। वे व्यक्ति की गरिमा को आर्थिक, सामाजिक विषमता का अन्त कर स्थापित करना चाहते थे। उनके अद्वैतवाद पर बौद्ध धर्म एवं आध्यात्मवाद का भी प्रभाव पड़ा, परन्तु उन्होंने किसी मतवाद का अन्त:करण नहीं किया। उन्हें विद्यार्थी जीवन में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टि मिली।

उन्होंने देश की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का निरीक्षण वैज्ञानिक दृष्टि से ही किया और उसी के आधार पर भारतीय जीवन मूल्यों को निर्धारित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा था – राजनीति मुझे अर्थशास्त्र की ओर घेर ले जाती है और अर्थशास्त्र मुझे जीवन के प्रति वैज्ञानिक मार्ग की ओर ले जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तरीकों से ही हम भारत जैसे समृद्ध देश की भूख, निरक्षरता, अस्वच्छता, अंधविश्वास एवं लोकाचार की समस्याओं को हल कर सकते हैं। यदि संसार को भी इन समस्याओं को हल करना है तो अपरिहार्य रूप से विज्ञान का सहारा लेना होगा।

वैज्ञानिक तरीकों से उनका अर्थ केवल औद्योगिक परिवर्तन, काम के तरीकों को सरल बनाने और आर्थिक उन्नति से ही नहीं था वरन नवीन खोज कर नये सत्य तत्वों का समावेश करने का था। विज्ञान से समाज एवं व्यक्ति को विवेकवादी दृष्टिकोण मिलता है।

पं. नेहरू के भीतर का वैज्ञानिक विज्ञान के पीछे अंधा होकर नहीं दौड़ता, उसे विवेक के आधार पर ही स्वीकार करता है। उनके अनुसार विवेकशील व्यक्ति को मार्मिक दृष्टिकोण से न तो पुरानी परम्पराओं को अपना लेना चाहिए और न ही आंख मूंदकर अनुकरण करना चाहिए। विज्ञान में आस्था रखते हुए वे मानवीय आदर्शों को छोड़ने को तैयार नहीं थे एवं मानववादी, विज्ञानवादी, जीवनवादी विचारक थे। उन्होंने कहा था – अंतोतगत्वा विवेक का प्रभुत्व होना चाहिए। जब मानव मानसिक एवं नैतिक अवनति से त्रस्त होता है तब सभ्यता और संस्कृति की जड़ों में दीमक लग जाती है। विज्ञान जब नैतिकता की सीमा का उल्लंघन करने लगे तो व्यक्ति को उसे अस्वीकार कर देना चाहिए। विज्ञान और नीतिशास्त्र यदि एक साथ नहीं चले तो दुनिया की प्रगति रूक जाएगी।

उन्होंने कहा था कि वे बुद्ध, वाल्टेयर और मार्क्स की तरह अनिश्वरवादी है परन्तु विचित्रता और रहस्यों के साथ इस संसार का निर्माण किसने किया इसका कोई उत्तर नहीं था। बौद्धिक दृष्टि पर उन्होंने कहा था – एकेश्वरवाद की सराहना करता हूं। वे वेदांत और अद्वैतवाद दर्शन से प्रभावित थे, परन्तु अंधविश्वासी परम्पराओं और रूढ़िवादी विश्वासों पर उनका विश्वास नहीं था। वे सभी धर्मों का आदर करते थे। हिंसा और दासता को बुरा मानते थे। पं. नेहरू सामान्यतया अहिंसा के पुजारी थे परन्तु अन्याय का प्रतिकार करने के लिए हिंसा का उपयोग भी उन्हें स्वीकार था।

पं. नेहरू ने प्रत्येक देश की आजादी का समर्थन किया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि धर्मनिरपेक्षता का आधार धार्मिक असहिष्णुता नहीं है, इसका अर्थ है कि राज्य का कोई धर्म नहीं हो और सभी धर्मों का समान रूप से आदर किया जाए। धर्म के आधार पर राज्य अपने नागरिकों से कोई भेदभाव नहीं करे। सभी धर्मों को मानने वालों को विकास के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म का पालन करने को स्वतंत्र हो व अन्य व्यक्तियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचे।

पंडित नेहरू कल्याणकारी राज्य की स्थापना की दिशा में सतत् प्रयत्नशील रहे। उनके कल्याणकारी राज्य में 19वीं सदी के उदारवाद व 20वीं सदी के समाजवाद का संगम है। उनका लोकतंत्र समाजवाद, आर्थिक न्याय व स्वतंत्रता है। लोकतंत्र में उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने कहा था कि लोकतंत्र उनकी शैली है। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा का आदर करते थे। उन्होंने कहा था कि सामाजिक अस्पृश्यता करने वाले और घोर आर्थिक असमानता को बनाये रखने वाले लोकतांत्रिक नहीं हो सकते।

उन्होंने अबाडी कांग्रेस अधिवेशन में कहा था – समाजवाद का अर्थ केवल धन का वितरण नहीं है और न ही केवल जनकल्याणकारी राज्य का निर्माण। समाजवादी अर्थव्यवस्था से ही लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना संभव नहीं है। देश में उत्पादन बढ़े, धन में वृद्धि हो और अर्जित धन का समुचित रूप से वितरण हो। अत: समाजवाद एक जीवन दर्शन है। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है – 'समाजवादी व्यवस्था की स्थापना एकमात्र हल है, उसकी ओर हम अपरिहार्य रूप से बढ़ें। पहले राष्ट्र एवं अंत में समस्त विश्व इसकी परिधि में आ जाता है। सार्वजनिक हित के लिए नियंत्रित उत्पादन एवं धन का समान वितरण आवश्यक है।' परन्तु उन्होंने यह भी कहा था – 'मैं उग्र प्रकार का समाजवाद नहीं चाहता जिसमें राज्य सर्वशक्ति संपन्न होते हैं। सभी कार्यकलापों में संतुलन करना है। मैं आर्थिक विकेन्द्रीकरण को आदर्श रूप से भारत के जनजीवन के लिए आवश्यक मानता हूं। आज के युग में हम सबको बराबर नहीं कर सकते लेकिन सबको समान अवसर की समानता दे सकते हैं। जनता का जीवन स्तर उन्नत करने के लिए भौतिक वस्तुएं एवं आवश्यकता सुविधाएं उपलब्ध कराना ही पर्याप्त नहीं है। संस्कृति और आध्यात्मिक दृष्टि से संकुचित विचारधारा को छोड़ते हुए प्रगति और विकास की ओर ले जाना आवश्यक है।

संभलकर रहें, नहीं तो सताएगा वायरल फीवर

इस बार बारिश ने अक्टूबर के मध्य तक अपने तेवर दिखाए। इससे वातावरण में कई दिनों तक कई तरह के वायरस सक्रिय रहेंगे। इस स्थिति में क्या करें, क्या नहीं बता रही हैं - डॉ. अनिता शर्मा

इस साल हुई झमाझम बरसात कई राज्यों में चिंता और परेशानियों का सबब बनी है। मानसून की विलम्ब से विदाई के कारण वातावरण में नवम्बर के मध्य तक रहने वाली नमी के कारण कई तरहके वायरस और बैक्टीरिया सक्रिय रहेंगे, ऐसी स्थिति में लोग कई तरह की बीमारियों जैसे सर्दी-जुकाम, खांसी, बुखार आदि से परेशान होंगे। ऐसी ही एक समस्या वायरल बुखार भी है।

वायरल बुखार क्या है

जब शरीर पर कोई वायरस हमला करता है तो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता उन वायरस को मारने की कोशिश करती है। इसी दौरान शरीर के बढ़ते तापमान को बुखार कहा जाता है। वायरल बुखार संक्रमित व्यक्ति के छींकने और खांसने से हवा में फैलने वाले वायरस के संपर्क में आने से दूसरे व्यक्ति तक पहुंच जाता है तथा संक्रमित व्यक्ति के शारीरिक संपर्क में आने से भी यह फैल सकता है। इसके अलावा मौसम में आए बदलाव के कारण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है, जिससे लोग वायरस की चपेट में आ जाते हैं। छींकने, खांसने और रोगी के संपर्क में आने के अलावा ऐसे कई वायरल बुखार हैं, जिनमें डेंगू, चिकनगुनिया आादि मच्छरजनित बुखार प्रमुख हैं।

क्या हैं इसके लक्षण

अचानक बुखार आना, सिरदर्द, बदन दर्द, गले में खराश, नाक में खुजली, पानी आना आदि वायरल के सामान्य लक्षण हैं। यह जरूरी नहीं है कि सभी में वायरल के एक जैसे लक्षण ही दिखाई दें। कुछ मामलों में रोगी में सर्दी-खांसी या बलगम जैसे कोई लक्षण नहीं होते, परन्तु उन्हें अजीब तरह की बेचैनी महसूस होती है या उनकी भूख खत्म हो जाती है।

बुखार का इलाज

वैसे तो वायरल बुखार शरीर की प्रतिरोधक क्षमता के अनुकूल 3-4 दिन में खुद ही ठीक हो जाता है, परन्तु बुखार तेज हो तो उसे कम करने की दवाएं जैसे पैरासिटामोल आदि दी जाती हैं। इसके अलावा रोगी को अधिक मात्रा में तरल पदार्थ पीने के साथ भाप लेना और नमक के

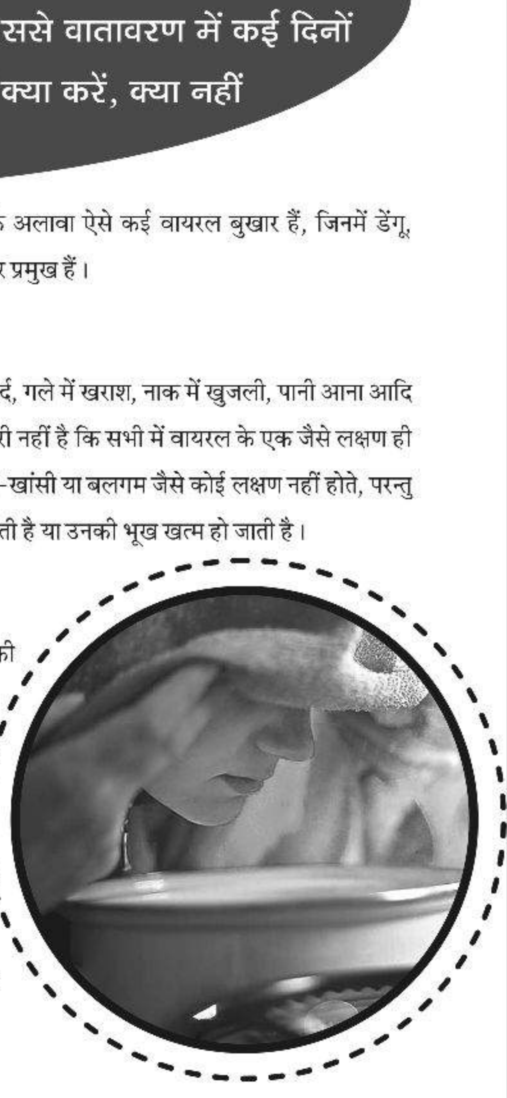

गर्म पानी के गरारे करने की हिदायत दी जाती है। रोगी को वायरल फीवर में खुद से एंटीबायोटिक नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि इसमें एंटीबायोटिक्स का रोगी के इलाज पर कोई असर नहीं होता।

खुद क्या करें

बुखार अगर 102 डिग्री तक है, लेकिन कोई परेशानी नहीं हैं तो मरीज की देखभाल घर पर ही कर सकते हैं। बुखार 3 दिन से अधिक समय तक है तो डॉक्टर से परामर्श लें।

इन बातों का ध्यान रखें

- ❖ साफ-सफाई का पूरा ख्याल रखें। वायरल से पीड़ित मरीज से थोड़ी दूरी बनाए रखें और उसके द्वारा इस्तेमाल चीजें उपयोग में न लाएं।
- ❖ छींकने से पहले नाक और मुंह पर रूमाल या टिश्यू पेपर रखें। इससे वायरल दूसरों में नहीं फैलेगा।
- ❖ सुबह की ठंड से बचाव के लिए शरीर को ढक कर रखें।
- ❖ बुखार आने पर तुरन्त डॉक्टर को दिखाएं।
- ❖ सूप, जूस, गुनगुने पानी आदि का सेवन करें।
- ❖ बुखार तेज होने पर खाना न छोड़ें। तरल पदार्थ का सेवन करते रहें, ताकि शरीर की ताकत बनी रहे।
- ❖ तुलसी के 8-10 पत्तों का रस शहद के साथ मिलाकर लें या 10 पत्तों को एक कप पानी में उबालें, आधा बचने पर पिएं या पिलाएं।

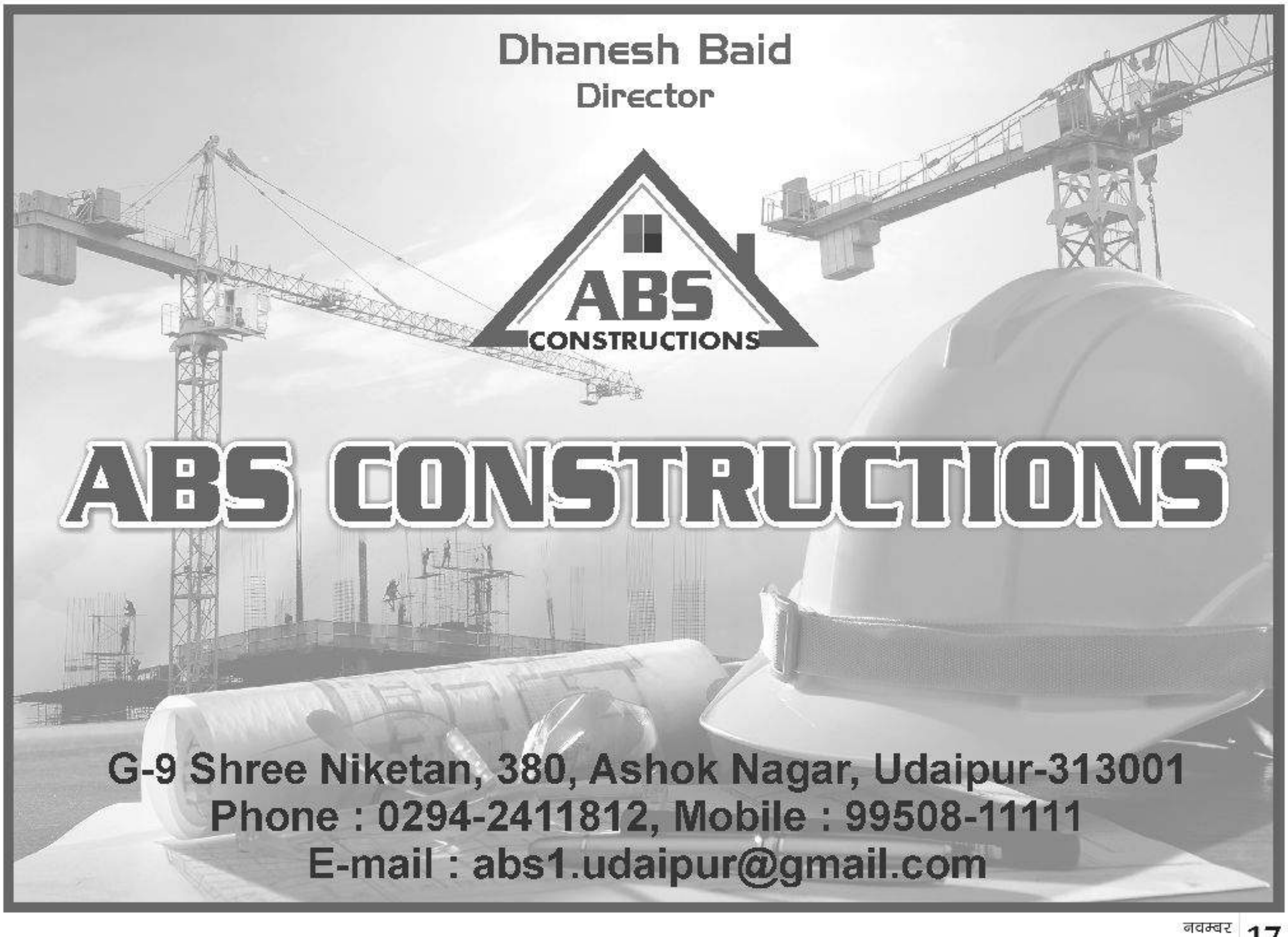

चन्दनवाड़ी फार्म
देवीलाल डांगी
9414164094
9001229362
मांगलिक कार्यों हेतु 35000 वर्गफीट का हरा-भरा लॉन, मनमोहक फव्वारे, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग व्यवस्था, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, दिन भर पानी, बंगाली साज-सज्जा व ठहरने की उचित व्यवस्था।
प्रेम नगर, रूप सागर रोड, उदयपुर (राज.)

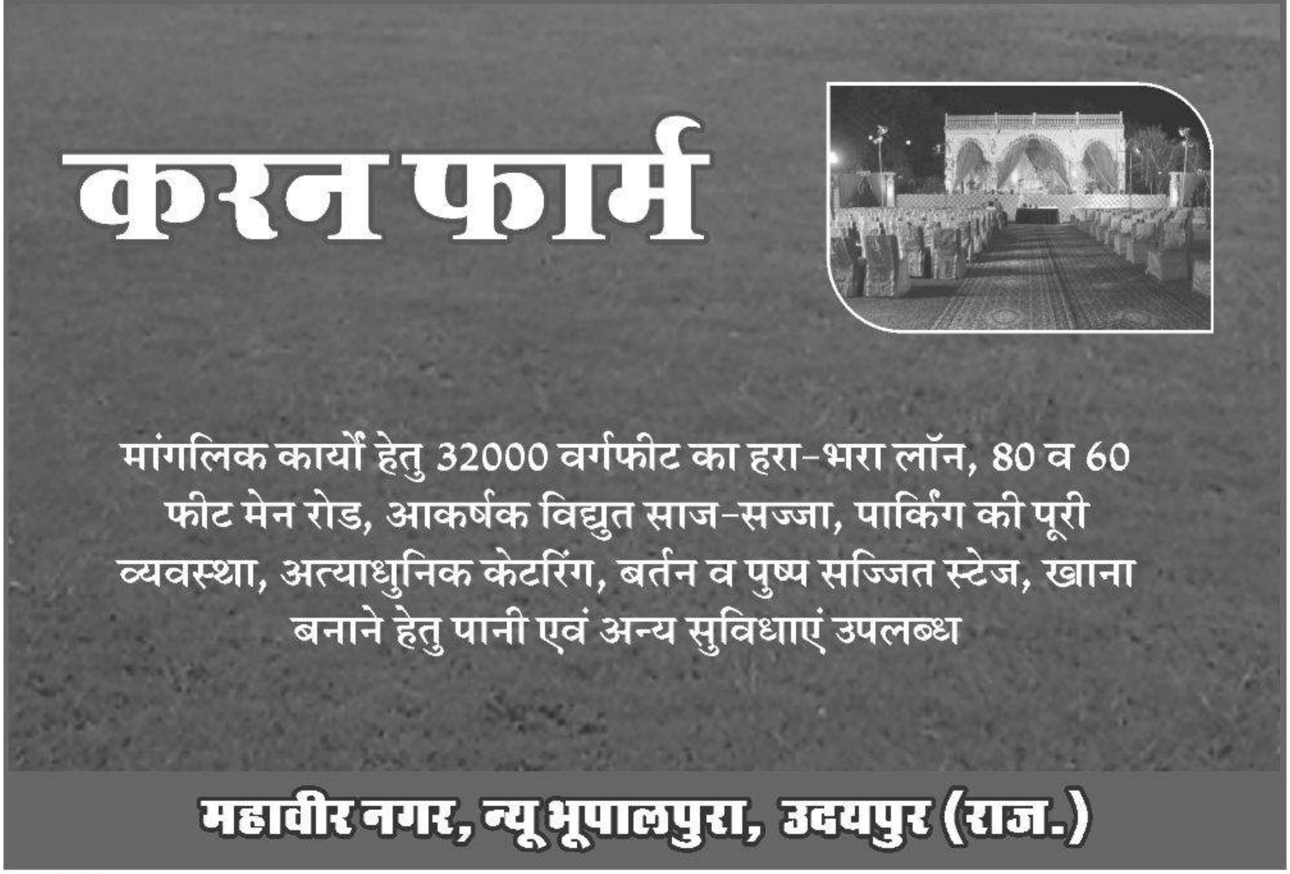
करन फार्म
मांगलिक कार्यों हेतु 32000 वर्गफीट का हरा-भरा लॉन, 80 व 60 फीट मेन रोड, आकर्षक विद्युत साज-सज्जा, पार्किंग की पूरी व्यवस्था, अत्याधुनिक केटरिंग, बर्तन व पुष्प सज्जित स्टेज, खाना बनाने हेतु पानी एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध
महावीर नगर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

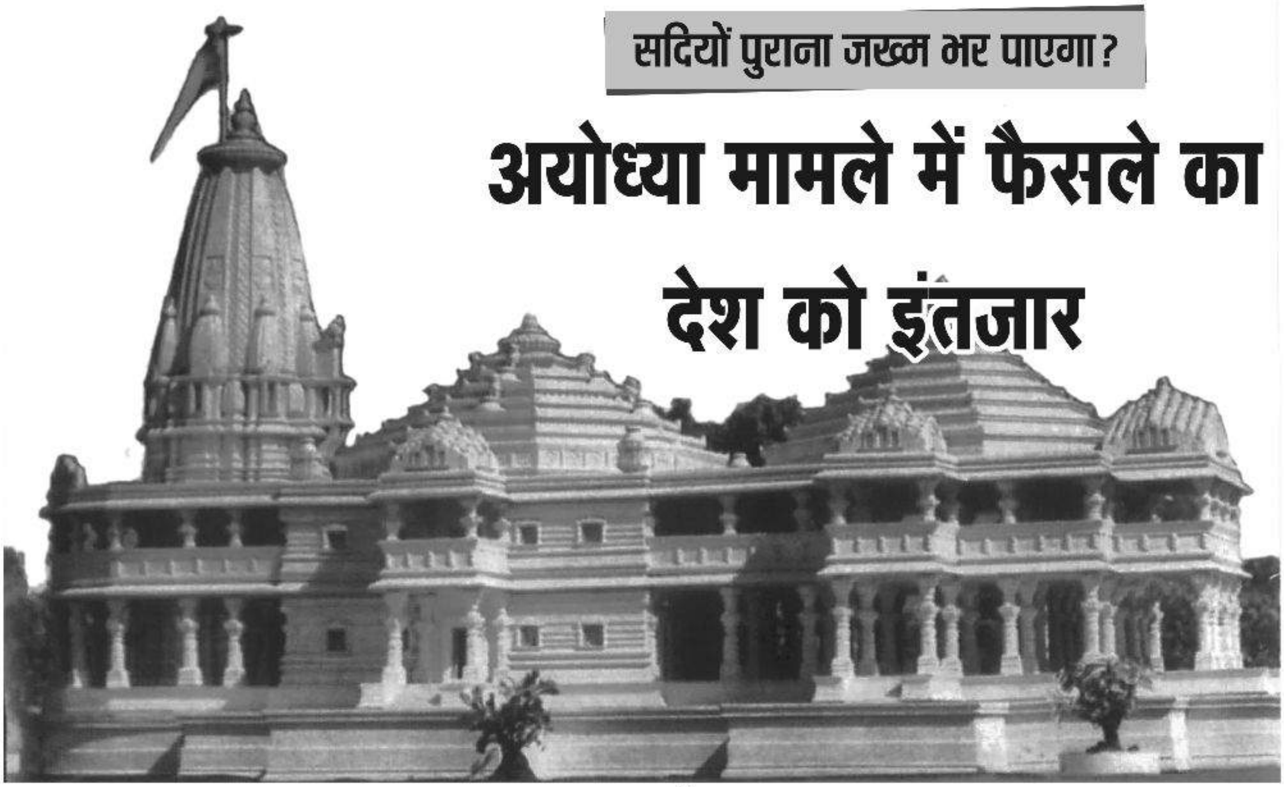

सदियों पुराना जख्म भर पाएगा?

अयोध्या मामले में फैसले का देश को इंतजार

अवतार मीणा

डेढ़ सदी से भी ज्यादा पुरानी राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर अंतिम अदालती फैसले तक पहुंचने का समय अब शायद ज्यादा दूर नहीं है। सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने 17 अक्तूबर को मामले की सुनवाई पूरी कर ली। इसके साथ ही यह उम्मीद भी बंध गई हैकि इस महीने के दूसरे-तीसरे सप्ताह में अदालत का फैसला हमारे सामने होगा। इस उम्मीद की सबसे प्रमुख वजह यह है कि सुनवाई करने वाली संविधान पीठ की अध्यक्षता कर रहे प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई 18 नवम्बर को रिटायर हो जाएंगे। इस पीठ के अन्य सदस्य हैं – जस्टिस एस. ए. बोबड़े, जस्टिस डी. वाई. चंद्रचूड़, जस्टिस अशोक भूषण और जस्टिस एस. अब्दुल नज़ीर। माना यही जा रहा है कि वह अपनी इस पारी का समापन देश के न्यायिक इतिहास के सबसे बड़े मुकदमे के साथ करेंगे। फैसला क्या होगा, यह इंतजार तो सभी को है, क्योंकि मामला अपने आप में काफी उलझा हुआ है।

सुनवाई के अंतिम दिन इस मामले में तब एक ऐसा मोड़ आया, जब अदालत में एक सेटलमेंट रिपोर्ट दायर की गई। सूत्रों का मानना है कि इसमें सुन्नी वक्फ बोर्ड ने कुछ शर्तों के साथ कहा है कि विवादित जमीन सरकार को सौंपने पर उसे कोई एतराज नहीं है। बोर्ड ने मस्जिद के लिए दूसरी जगह मांगी है। इस रिपोर्ट पर संविधान पीठ विचार करेगी। सेटलमेंट कमेटी में सेवानिवृत्त जस्टिस एफएमआई कलीफुल्ला, श्रीराम पंचू और श्रीश्री रवि शंकर शामिल हैं। सेटलमेंट रिपोर्ट पर सुन्नी वक्फ बोर्ड निर्वाण अखाड़ा, हिन्दू महासभा और राम जन्मभूमि पुनरूद्वार के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर है, जबकि मामले में कुल 20 पक्षकार हैं। सेटलमेंट रिपोर्ट में वक्फ बोर्ड की शर्तें ऐसी हैं, जिन पर अदालत व प्रशासन को ही विचार करना है। भगवान राम और अयोध्या का संबंध गहराई तक है और इस पर किसी तरह का विवाद और बहस कोई मायने नहीं रखता। लेकिन वोटों की राजनीति ने हिन्दू-मुसलमान को आमने-सामने कर दिया। अयोध्या विवाद को इतना लंबा खींचने के बीच राजनीतिक स्वार्थ ही ज्यादा जिम्मेदार है। इसकी वजह से ही अयोध्या को अदालती विवाद बनाया गया। पहला मुकदमा 23 दिसम्बर, 1949 को शुरू हुआ था। अयोध्या और राम को लेकर ऐतिहासिक और पौराणिक प्रमाण मौजूद होते हुए भी विवाद को जन्म दिया गया। आस्था के मामले में अदालतें फैसला नहीं ले सकती, इसलिए सुप्रीम कोर्ट ने इसे टाइटिल सूट यानी भूमि विवाद मानते हुए ही सुनवाई का फैसला किया।

यह मामला एक समुदाय की आस्था से जुड़ा है, तो दूसरे की आशंकाओं से। इसके साथ ही अदालत के सामने इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला है, जिसे प्रबंधन की भाषा में आउट ऑफ बॉक्स कहा जा सकता है। इसमें उच्च न्यायालय ने विवादित जमीन का विभाजन करके सभी पक्षों के लिए प्रावधान किया था। हालांकि इस फैसले से कोई भी पक्ष खुश नहीं हुआ, लेकिन कोई पूरी तरह नाराज भी नहीं हुआ था। किसी भी मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उम्मीद यही की जाती है कि सभी पक्ष फैसले को सिर-माथे पर लेंगे। यहीं सभवत: इस मामले में भी होगा।

With Best Compliments From

UI

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Fector Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Fector Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

Authorised Service Contractors
Schneider Electric India Pvt. Ltd.

दोस्ताना व्यवहार से संवारे बचपन

✍ दिलीप सिंह

सभी पेरेंट्स चाहते हैं कि उनके बच्चों की परवरिश अच्छी हो, अच्छी का मतलब सिर्फ उनकी खाने-पीने, पहनने, ओढ़ने और रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करना ही नहीं होता, बल्कि बच्चों में अच्छी आदत से, अनुशासन और नियम पालन की आदत का विकास अच्छी परवरिश है।

बच्चे में शुरू से ही अनुशासित रहने की आदत डालनी चाहिए। यह नहीं सोचना चाहिए कि अभी वह छोटा है बाद में सीख जाएगा। कुछ पेरेंट्स बच्चों को छोटी-छोटी बातों पर डांटते हैं, या उन्हें मारते हैं। यह गलत है, इस तरह के व्यवहार से बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। जब बच्चा गलती करे तो उसे गलती का एहसास कराते हुए दोबारा ऐसा न करने की ताकीद करें। कुछ पेरेंट्स मानते हैं कि बच्चों के प्रति प्रेम-प्रदर्शन का मतलब उनकी हर मांग को पूरा करना है, लेकिन इससे बच्चे जिद्दी हो जाते हैं। बच्चों की जिद पर उन्हें वही चीज दिलाएं जो जरूरी है, जब बच्चे ऐसी जिद करते हैं जिन्हें पूरा नहीं किया जा सकता है तो उन्हें प्यार से समझाएं। कई बार पेरेंट्स बच्चों की बात नहीं सुनते उन्हें डांटकर चुप कर देते हैं, बच्चों पर इसका गलत असर पड़ता है। बच्चे की बात पर ध्यान दें, चिल्लाएं-झल्लाएं नहीं।

बच्चे को उसकी रूचि का काम करने दें। जब उन पर अपनी मर्जी थोपेंगे तो उसका बुरा असर होगा। बच्चे अपनी मनमर्जी के मुताबिक काम करना पसन्द करते हैं। बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए। ऐसा होने पर वे पेरेंट्स से कुछ भी नहीं छिपाएंगे।

पेरेंट्स की चाह होती है कि वे बच्चों को बेहतरीन परवरिश दें। वे कोशिश भी करते हैं, फिर भी ज्यादातर पेरेंट्स बच्चों के बिहेवियर और परफोरमेन्स से खुश नहीं हो पाते। उन्हें अक्सर शिकायत करते सुना जा सकता है कि बच्चे ने ऐसा कर दिया या वैसा कर दिया। इसके लिए काफी हद तक पेरेंट्स ही जिम्मेदार होते हैं क्योंकि किस हालात में क्या कदम उठाना है, वे यह तय ही नहीं कर पाते हैं।

बच्चा आनाकानी करे....

बच्चा स्कूल जाने और पढ़ाई से बचता है तो पेरेंट्स प्रायः उन पर गुस्सा करते हैं। मम्मी कहती है 'तुमसे बात नहीं करूंगी।' पापा कहेंगे 'बाहर खाने-खिलाने नहीं ले जाऊंगा, खिलौना खरीदकर नहीं दूंगा।' बच्चा किशोरवय है तो पेरेंट्स कहेंगे कि 'कम्प्यूटर वापस कर, मोबाइल वापस कर। तुम बेकार हो बेवकूफ हो। अपने भाई-बहन को देखो, वह पढ़ने-लिखने में कितना अच्छा है।' इस तरह की तुलनाएं गलत हैं। जो बच्चे में कुंठा पैदा कर सकती है।

क्या करना चाहिए?

वजह जानने की कोशिश करें कि वह पढ़ने से क्यों बच रहा है। कई वजहें हो सकती हैं। मसलन उसका आईक्यू लेवल कम हो सकता है, कोई टीचर नापसंद हो सकता है, वह उस वक्त नहीं बाद में पढ़ना चाहता हो आदि। बच्चा स्कूल जाने लगे तो उसके साथ बैठकर डिस्कस करें कि कितने दिन स्कूल जाना हैं, कितनी देर पढ़ना है आदि। इससे बच्चे का मानस स्पष्ट रहेगा कि उसे स्कूल जाना ही है। बहाना नहीं चलेगा। उन्हें दोस्तों के बीच रहने, खेलने-कूदने को प्रोत्साहित करें, ताकि उनमें सामूहिकता के भाव पैदा हो सकें।

अगर बच्चा स्कूल से उदास लौटता है तो प्यार से उसकी वजह पूछें। टीचर ने डांटा या साथियों से झगड़ा हुआ? अगर बच्चा बताए कि फलां टीचर या बच्चा परेशान करता है तो उससे कहें कि हम स्कूल जाकर बात करेंगे। स्कूल जाकर बात करें भी लेकिन सीधे टीचर को दोष न दें।

जो बच्चे हाइपरऐक्टिव होते हैं, उन्हें अक्सर टीचर शैतान मानकर इग्नोर करते हैं। ऐसे में टीचर से रिक्वेस्ट करें। बच्चे को एक्टिविटीज में शामिल करें और उसे मॉनिटर जैसी जिम्मेदारी दें। इससे वह जिम्मेदार बनता है।

बिना बताए चीजें उठा लें तो

बच्चे किसी की चीजें उठा लें, तो पेरेंट्स बच्चे को पीटने डांटने लगते हैं। भाई-बहनों के आगे उसे जलील करते हैं। अपनी चीजें संभालकर रखना क्योंकि यह चोर है। कई बार कहते हैं कि तुम हमारे बच्चे नहीं हो सकते। अगर कोई दूसरा ऐसी शिकायत लाता है तो वे मानने को तैयार नहीं होते कि हमारा बच्चा ऐसा कर सकता है। वे पर्दा डालने की कोशिश करने लगते हैं। ऐसा करने पर सजा जरूर दें, लेकिन सजा मार-पीट के रूप में नहीं, बल्कि बच्चे को पसंदीदा प्रोग्राम नहीं देखने देना, उसे आउटिंग पर नहीं ले जाना, खेलने नहीं देना जैसी सजा दे सकते हैं। जो चीज उसे पसंद है, उसे कुछ देर के लिए उससे दूर कर दें।

लेखक मीरिण्डा सी. सै. स्कूल, उदयपुर के निदेशक हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. (आर्थो)
अस्थि रोग विशेषज्ञ
मो. 94141 62139

S H R C

डॉ. श्रीमती सुमन परिहार
एम.एस. (सर्जरी)
महिला शल्य चिकित्सक
मो. 98297 91760

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधायें

- आर्म (टेलिविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा।
- स्तन सम्बन्धी रोगों (गाठ, केंसर) का इलाज व निदान।
- एपेन्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चेदानी का ऑपरेशन।
- हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन।
- नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि।
- जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन।
- प्लास्टर
- एक्स-रे

ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध

3-नवरत्न कॉम्पलेक्स, महावीर कॉलोनी पार्क,
80 फीट रोड, एवरेस्ट, आशियान के सामने, उदयपुर

कल्कि भगवान के आश्रमों पर छापे

चेन्नई/तिरूपति

आयकर विभाग ने स्वयंभू संत 'कल्कि भगवान' के आश्रमों समेत उनके 40 ठिकानों पर 16 अक्टूबर को छापेमारी की। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु में एकसाथ छापे मारे गए। कर चोरी और करोड़ों की बेहिसाब संपत्ति होने की कथित खुफिया रिपोर्ट के आधार पर यह छापेमारी की गई।

तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की सीमा पर चित्तरू स्थित 70 वर्षीय 'कल्कि भगवान' के मुख्यालय में भी तलाशी ली गई। इसके अलावा उनके बेटे कृष्णा के कारोबारी सहयोगियों के चेन्नई स्थित ठिकानों पर भी छापेमारी की गई। चेन्नई में कुल छह जगह तलाशी ली गई। छापेमारी के दौरान कल्कि भगवान और उनकी पत्नी पद्मावती नहीं मिले।

दर्शन का शुल्क 25 हजार : कल्कि भगवान और उनकी पत्नी के सामान्य दर्शन करने का शुल्क पांच हजार रुपये है तो दोनों के विशेष दर्शन का शुल्क 25 हजार रुपये है।

मोक्ष प्रदाता होने का दावा : स्वयंभू कल्कि भगवान तुरंत निर्वाण या मोक्ष प्रदान करने का दावा करते हैं। वह बहुत से भारतीयों और अप्रवासी भारतीयों के बीच लोकप्रिय हैं। उनके भक्त उन्हें चमत्कारी पुरुष बताते हैं तो आलोचक उनकी निन्दा भी करते हैं।

2008 में भी सुर्खियों में रहे : कल्कि भगवान 2008 में भी सुर्खियों में रहे जब उनके चित्तूर स्थित आश्रम में भगदड़ के कारण पांच की मौत हो गई व कई लोग घायल हो गए।

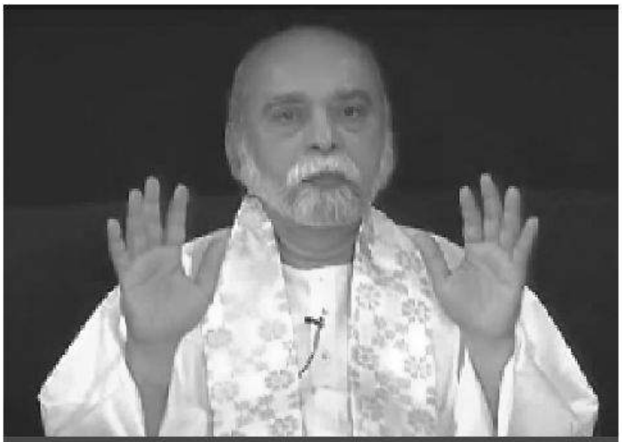

परिचय

जन्म : 7 मार्च, 1949, गुडियाथम, वेल्लोर, तमिलनाडु

पूर्व नाम : विजय कुमार नायडू

स्नातक : डीजी वैष्णव कॉलेज से गणित में स्नातक

पहला पेशा : एलआईसी में क्लर्क फिर 1984 में नौकरी छोड़ शिक्षा संस्थान खोला

दिवालिया : 1989 में आर्थिक घाटे से भूमिगत हो गए

कल्कि अवतार : लम्बे समय तक भूमिगत रहने के बाद विजय नायडू ने चित्तूर जिले में खुद को 'कल्कि भगवान' घोषित कर खुद को भगवान विष्णु का 10वां अवतार बताया और अपनी पत्नी को भगवान की स्वामिनी घोषित किया।

हजारों करोड़ की संपत्ति

कल्कि ट्रस्ट कुल नौ तरह के कारोबार से जुड़ा है। 'भगवान कल्कि' के बेटे और कारोबारी कृष्ण अकेले 3,000 करोड़ रुपये के मालिक हैं।
कल्कि ट्रस्ट की कुल संपत्ति कई हजार करोड़ है।
कल्कि भगवान पर जमीन कब्जा करने के आरोप हैं। 2010 में आंध्रप्रदेश हाईकोर्ट में उनके खिलाफ एक याचिका दायर की गई थी।

प्रदेश में बनेगी फिजियाथैरेपी कौंसिल

चिकित्सा व जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने पिछले दिनों अपने उदयपुर दौरे के दौरान महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय में जनरल नर्सिंग प्रशिक्षण केन्द्र के नवनिर्मित भवन व एम्बुलेन्स का लोकार्पण किया। एमबी चिकित्सालय परिसर में शर्मा ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की ओर से 3 करोड़ की लागत से तैयार नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया।

अत्याधुनिक एम्बुलेन्स : आरएसएमएमएल की ओर से सीएसआर मद से दी गई 50 लाख कीमत की अत्याधुनिक एम्बुलेन्स का भी उन्होंने लोकार्पण किया। उन्होंने एम्बुलेन्स का पूजन कर एम्बुलेन्स सौंपी।

फिजियाथैरेपी काउंसिल का गठन : राजस्थान विद्यापीठ में आयोजित थर्ड इंटरनेशनल फिजियोथैरेपी कांग्रेस व इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस के समापन समारोह में डॉ. शर्मा बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने प्रदेश में फिजियोथैरेपी काउंसिल के गठन को मंजूरी दी।

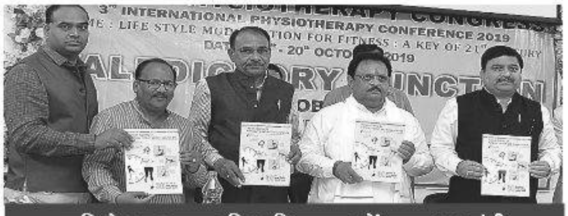

राविजेआर नागर विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य मंत्री

समापन समारोह में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर, डॉ. नीलिमा पटेल, डॉ. के. के. सिंह, डॉ. आनन्द मिश्रा, डॉ. शबनम अग्रवाल, डॉ. सवीता रवीन्द्रन, डॉ. सैफी मोहम्मद, डॉ. एसबी नागर, डॉ. विनोद नायर भी मौजूद थे। संचालन डॉ. प्रज्ञा भट्ट, डॉ. आरुषि टंडन ने किया।

आरसीए में छाया वैभव

हम साथ-साथ है : नव निर्वाचित अध्यक्ष वैभव और मुख्य संरक्षक डॉ. सी. पी. जोशी

रामेश्वर डूडी गुट के चौधरी हारे
सभी 6 स्थानों पर जोशी पैनल की जीत
उदयपुर के महेन्द्र शर्मा सचिव निर्वाचित

✍ जयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत राजस्थान क्रिकेट संघ के निर्वाचित अध्यक्ष बन गए हैं। उन्होंने 4 अक्टूबर को सम्पन्न राजस्थान क्रिकेट संघ(आरसीए) के चुनावों में 19 मतों से जीत हासिल की। चुनाव में उन्हें 25 मत मिले जबकि प्रतिद्वंदी रामप्रकाश चौधरी को केवल 6 मत ही मिले। चौधरी ने कांग्रेस नेता रामेश्वर डूडी गुट से चुनाव लड़ा। डूडी अध्यक्ष पद के दावेदार थे, लेकिन नागौर जिला क्रिकेट संघ को मतदान के अयोग्य करार देने के बाद उनका नामांकन खारिज कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने चौधरी को वैभव से मुकाबले के लिए मैदान में उतारा।

चुनाव में आरसीए के निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी गुट का पैनल अध्यक्ष सहित सभी 6 पदों पर विजयी रहा। अमीर पठान उपाध्यक्ष, महेन्द्र शर्मा सचिव, महेन्द्र नाहर संयुक्त सचिव, कृष्ण कुमार निमावत कोषाध्यक्ष तथा देवाराम चौधरी सदस्य निर्वाचित घोषित किये गये। 32 मतदाताओं में से 31 ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

> सबको साथ लेकर राज्य में क्रिकेट के विकास के लिए प्रयत्न किए जाएंगे। मैं जिलों में युवाओं को क्रिकेट में आगे बढ़ाने और बिना भेदभाव काम करूंगा। जोधपुर व उदयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट की भावभूमि को जल्दी से जल्दी तैयार करना है। निवर्तमान अध्यक्ष(अब मुख्य संरक्षक) डॉ. सी. पी. जोशी ने लम्बे समय तक आरसीए पर लगे बीसीसीआई के प्रतिबंध को हटवाया। उन्हीं के मार्गदर्शन में हम आगे का उपलब्धिमूलक सफ़र तय करेंगे।
>
> **- वैभव गहलोत**

कांग्रेस नेता रामेश्वर डूडी गुट ने चुनाव परिणाम की घोषणा के बाद निर्वाचन प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग, मतदाताओं पर दबाव बनाने तथा प्रॉक्सी वोट के आरोप लगाये जबकि निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी ने कहा है कि आरसीए के चुनाव में कोई राजनीति एवं दखलअंदाजी नहीं हुई है। चुनाव के बाद एक प्रस्ताव पारित कर डॉ. सी. पी. जोशी को आरसीए का मुख्य संरक्षक मनोनीत किया गया। चुनाव के बाद जोधपुर व उदयपुर में क्रिकेटप्रेमियों ने खुशी जाहिर की। वैभव गहलोत जोधपुर से हैं, जबकि सचिव महेन्द्र शर्मा उदयपुर से हैं।

वैभव गहलोत के निर्वाचन से उम्मीद है कि आरसीए में उनके नाम के अनुरूप वैभव छाया रहेगा। आरसीए ने लम्बे समय तक संकट झेला है। खिलाड़ियों के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह था तो कर्मचारियों के परिवार वेतन की अनियमिततता से दुःखी रहे। अब सब कुछ ठीक होगा, ऐसी आशा की जा सकती है।

मेघवाल-दम्पत्ती की सेवा यात्रा

सेवा-समर्पण

समाज सेवा में अपनी अलग पहचान रखने वाला डॉ. भूपेन्द्र कुमार मेघवाल चैरिटेबल ट्रस्ट अगले वर्ष विभिन्न सेवा कार्यों के साथ रजत जयंती वर्ष मनाएगा। ट्रस्ट मुख्य रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य खेल आदि क्षेत्रों में सहायता करता है। ट्रस्ट सरकारी अथवा गैर सरकारी स्तर पर कोई भी आर्थिक मदद नहीं लेता। इसकी स्थापना 5 अप्रेल 1996 में डॉ. भूपेन्द्र कुमार मेघवाल ने की। जिसकी मुख्य ट्रस्टी उनकी अर्द्धांगिनी पुष्पा मेघवाल हैं। ट्रस्ट ने गरीब, निराश्रित व एचआईवी पीड़ित अनेक बच्चों की ज़िंदगी को संवारा है। अपने स्थापना वर्ष से ही ट्रस्ट उदयपुर, जयपुर, कोटा, बांसवाड़ा, अजमेर, पुष्कर और अहमदाबाद के अनेक स्कूलों में बालक-बालिकाओं को स्टेशनरी, पोशाक, पोषाहार, खेल सामग्री वितरण के साथ, स्वास्थ्य परीक्षण, पौधारोपण सहित स्कूलों व छात्रावासों में ज़रूरी सामान उपलब्ध कराता रहा है। ट्रस्ट चेयरमैन डॉ. बी. के. मेघवाल(जयपुर) देश के जाने-माने क्षय एवं अस्थमा रोग विशेषज्ञ हैं। मेवाड़ से इनका गहरा रिश्ता होने से 'मेवाड़ रत्न' के साथ ही अनेक राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। मुख्य ट्रस्टी पुष्पा मेघवाल उदयपुर के एक विद्यालय में 11 वर्ष तक शिक्षिका रही हैं, यही वजह है कि इन्हें स्कूली बच्चों से बेहद लगाव है। क्षय रोग पर लिखी इनकी एक पुस्तक का विमोचन तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने किया था।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

कालूराम मीणा

सरपंच

ग्राम पंचायत, मसारों की ओबरी,
पंचायत समिति, ऋषभदेव

देहात जिला कांग्रेस महासचिव

पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष-ऋषभदेव

इंटक प्रदेश संगठन सचिव

महानायक को महासम्मान

"बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन को कॅरियर के पांचवें दशक में साल 2018 का दादा साहब फाल्के अवॉर्ड देने की घोषणा की गई है। फिल्मों में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारत सरकार की ओर से दिया जाने वाला यह सर्वोच्च सम्मान है। 77 की उम्र में भी इस शहंशाह का 'सात हिन्दुस्तानी' से लेकर 'सईरा नरसिम्हा रेड्डी' तक का सफ़र बेहद कामयाब रहा है। इसीलिए तो उन्हें सदी का महानायक कहा गया है।"

✍ अमित शर्मा

मनोरंजन की दुनिया के दो माध्यम हैं, सिनेमा और टेलीविजन। इन दोनों क्षेत्रों के अपने-अपने सितारे हैं। यह और बात है कि अब फिल्मी सितारे भी टेलीविजन के परदे पर नजर आने लगे हैं और टेलीविजन के सितारे फिल्मी दुनिया का हिस्सा बन रहे हैं। इन्हें अपने काम के अनुसार, लोकप्रियता भी मिल रही है, लेकिन इन सबके बीच एक नाम ऐसा है, जो वक्त को चुनौती देते हुए फिल्मों के साथ छोटे परदे पर भी छाया हुआ है। यह नाम है उस शख्सियत का जो सदी के महानायक, सितारों के सितारे और सबसे बड़े जलवागर के रूप में जाने जाते हैं। ये हैं- बिग बी यानी अमिताभ बच्चन, जिनके लिए समय थम गया है, लेकिन नहीं थम रहा है उनका जलवा। वे एक ऐसे कलाकार हैं, जिनकी हर फिल्म के साथ उनका कद बढ़ जाता है। फिल्म में स्टार छोटे हों या बड़े, अमिताभ बच्चन की मौजूदगी का अर्थ है कि तमाम दर्शकों की निगाहों का उन पर ही टिके रहना। इस बात का एक बार फिर प्रमाण बनने जा रही है, जल्दी ही रिलीज होने वाली फिल्म 'सईरा नरसिम्हा रेड्डी'। जिसमें उनके साथ तेलंगू फिल्मों के सुपरस्टार चिरंजीवी भी होंगे। अभिताभ बच्चन का इसमें अहम किरदार होगा। 'सईरा नरसिम्हा रेड्डी' आंध्रप्रदेश के फ्रीडम फाइटर उय्यलावाडा नरसिम्हा रेड्डी की बायोपिक है। जिनका नाम भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से दर्ज है। फिल्म के हाल ही रिलीज ट्रेलर को लोगों ने खूब सराहा है।

देश के ख्यातनाम कवि-साहित्यकार डॉ. हरिवंश राय बच्चन और तेजी बच्चन के दो बेटों अमिताभ और अजिताभ में अमिताभ बड़े हैं। इनका जन्म 11 अक्टूबर, 1942 को इलाहाबाद(प्रयागराज)में हुआ। कहा जाता है कि जब ये माता के गर्भ में थे, हरिवंश जी ने एक रात स्वप्न देखा कि उनके पिता 'रामायण' पाठ कर रहे हैं और वे पास बैठे हैं। तभी पत्नी तेजी बच्चन के पेट में दर्द की कराहट से उनकी आंख खुल गई। पत्नी को तुरन्त अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने शिशु को जन्म दिया। संयोगवश उन्हीं दिनों प्रकृति के महाकवि पं. सुमित्रानन्दन पन्त भी हरिवंश जी के घर में ही ठहरे हुए थे। अमिताभ नाम उन्हीं का सुझाया था। हरिवंशजी परिवार में बालक की किलकारी से इतने प्रसन्न थे कि तत्काल एक कविता की रचना कर डाली।

फुल्ल कमल/गोद नवल-मोद नवल/गेह में विनोद नवल/बाल नवल-लाल नवल/दीप में ज्वाल नवल/दूध नवल-पूत नवल/वंश में विभूति नवल।/नवल दृश्य-नवल दृष्टि/जीवन का नव भविष्य,/जीवन की नवल सृष्टि........।

उन्हें तभी यह अनुमान भी लग गया था कि बालक निश्चय ही कुछ विशेष उद्देश्य को लेकर आया है।

अमिताभ बच्चन एक ऐसे सितारे हैं, जो 50 बरसों से रूपहले परदे पर शासन कर रहे हैं। ये राजपाट उन्हें उस वक्त मिला, जब बॉलीवुड में स्टारडम की हवा चल रही थी और लोग राजेश खन्ना के दीवाने थे। इस लोकप्रियता की लहर को अपने पक्ष में करना नामुमकिन लगता था, लेकिन अमिताभ के 'एंग्री यंग मेन' की छवि ने उसे मुमकिन में बदल दिया। लोग अमिताभ के कायल होने लगे। उनके डायलॉग और उनकी स्टाइल को अपनाने लगे। उनके जैसे बालों और कपड़ों का फैशन चल निकला उनकी हर फिल्म बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचाने लगी।

सुसंस्कृत परिवार में जन्मे अमिताभ ने कला और विज्ञान विषय में दो बार स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। पिता नहीं चाहते थे कि अमिताभ फिल्मों की ओर रूख करे लेकिन उनके रूझान को मां ने पंख दिये और आयु के बीसवें दशक में अमिताभ ने फिल्मों में अपना करियर बनाने के लिए कलकत्ता की एक शिपिंग फर्म 'बर्ड एण्ड कम्पनी' की नौकरी छोड़ दी। संघर्ष के दिनों में ये कई दिनों तक परिचयवश हास्य अभिनेता मेहमूद के घर में रहे। चूंकि डॉ. हरिवंश राय बच्चन(राज्यसभा सदस्य) के नेहरू-गांधी परिवार से निकट के रिश्ते थे, सो इन्दिरा गांधी ने भी फिल्म निर्माता-निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास से अमिताभ की मदद करने का इशारा किया।

उन दिनों ख्वाजा अहमद अब्बास 'सात हिन्दुस्तानी' फिल्म बना ही रहे थे, अमिताभ को उसमें मौका मिला और उन्हें सर्वश्रेष्ठ नवागंतुक अभिनेता की श्रेणी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इसके बाद सुनील दत्त की फिल्म 'रेशमा और शेरा' में गूंगे भाई की भूमिका में इन्होंने दर्शकों का दिल जीत लिया और उसके बाद तो 1971 में 'आनन्द' फिल्म में काका (राजेश खन्ना) के रूबरू अभिनय का मौका मिला और छाप छोड़ी। इसके बाद की इनकी यात्रा कहीं नहीं रूकी। अमिताभ बच्चन ने 1970 के दशक में 'जंजीर', 'दीवार' और 'शोले' जैसी फिल्मों के माध्यम से व्यवस्था के खिलाफ युवा पीढ़ी के गुस्से को अभिव्यक्ति दी और उन्हें 'एंग्री यंगमैन' कहा गया। 1973 में इन्होंने प्रसिद्ध अभिनेत्री जया भादुड़ी के साथ बंगाली परम्परा से विवाह किया। अभिषेक और श्वेता इनके पुत्र-पुत्रियां हैं, जबकि विश्व सुन्दरी ऐश्वर्या राय पुत्रवधू और आराध्या पौत्री।

खुशहाल बच्चन परिवार

जब अमिताभ नौजवान पीढ़ी के आदर्श बन चुके थे, तभी फिल्म 'कुली' की शूटिंग के दौरान उन्हें चोट लगी और उनकी जिंदगी खतरे में पड़ गई। सारे देश में उनके लिए प्रार्थनाएं होने लगीं और जलवागर अमिताभ मौत को हराकर फिर मैदान में लौट आए।

... शेष पेज 29

अमिताभ हमारी इण्डस्ट्री के पिलर हैं। वे जिस तरह सोचते हैं, वैसे बहुत कम लोग होते हैं। भगवान ने उन्हें ऐसा कुछ दिया है कि उन्हें देखकर कभी ऐसा नहीं लगता कि वे थक गए हैं या उनको अब काम नहीं करना चाहिए। जब भी देखो, ऊर्जावान दिखते हैं। ऐसी एनर्जी हमने बहुत कम लोगों में देखी है। उनका काम करने का ढंग बहुत कमाल का है। अमिताभजी को ढेर सारी बधाई देती हूं। उनको यह अवार्ड इससे पहले ही मिल जाता तो और अच्छा होता। उन्हें यह प्रतिष्ठित अवार्ड मिलना बहुत जरूरी था। मैं सरकार के फैसले से बहुत खुश हूँ।

- लता मंगेशकर, भारत-रत्न

महके और महकाएं
CHITTORA AGARBATTI INDUSTRIES
CAI
UDAIPUR
गुलाब
चंदन
KANCHAN
Mogra
राजेश चित्तौड़ा
9414160914
CHITTORA
AGARBATTI INDUSTRIES
Mfg. : Handmade Agarbatti 'N' Perfumers
Glass Bottles etc.
1,2 Central Jail Colony Nr. Central Jail, Tekri Road Udaipur (Raj.)
Email : rajeshchittora27@gmail.com

With Best Compliments from
NAHAR
COLOURS & COATING LTD.
Certified ISO 9001 by
BVQi
UKAS
QUALITY MANAGEMENT
NCCL, House, G-1, 90-93, Sukher Industrial Park
Udaipur-313004 INDIA
Tel. : +91-294-2440307-309 | Fax : +91-294-2440310
E-mail : ramesh@naharcolours.net

... शेष पेज 27

अमिताभ फिल्म जगत के भाग्य निर्माता बन चुके थे। तभी एक दौर आया, जब उनकी फिल्में फ्लॉप होने लगीं। उनकी कंपनी एबीसीएल पर करोड़ों का कर्जा हो गया। ऐसा वक्त भी आया, जब उनके दरवाजे के बाहर लगने वाली प्रोड्यूसर्स की लाइन गायब हो गई। सबको लगा कि सितारा अस्त हो गया, लेकिन अमिताभ ने वर्ष 2000 में दोबारा एंट्री की और इस बार बड़े परदे के साथ छोटे परदे पर भी उनका जलवा नजर आने लगा। 'कौन बनेगा करोड़पति' और अमिताभ एक-दूसरे के पर्याय बन गए। बड़े परदे पर भी अमिताभ बदले अवतार में लोगों का दिल जीतने लगे। फ्रेंच कट दाढ़ी में अधपके बालों के साथ अमिताभ की दूसरी पारी जो शुरू हुई, तो 'मोहब्बतें', 'कभी खुशी कभी गम', 'बागवान', 'चीनी कम', 'अक्स', 'आंखें', 'बाबुल', 'अलादीन', 'कभी अलविदा न कहना' जैसी फिल्मों से अमिताभ ने फिर अपना जलवा दिखाया।

इसी बीच 2005 में 'ब्लैक' और 2009 में फिल्म 'पा' और उसके बाद के वर्षों में अनेक ऐसी फिल्में आईं जिनमें अमिताभ के 'लार्जर देन लाइफ' रोल को देख लोगों पर उनका जादू कायम रहा वे उनके दीवाने हो गए। अमिताभ बच्चन अनेक राष्ट्रीय अभियानों से भी जुड़े। पोलियो उन्मूलन अभियान के लिए यूनिसेफ ने उन्हें 'गुडविल एम्बेसेडर' बनाया। तम्बाकू निषेध, एचआईवी/एड्स अभियानों से भी जुड़े और इस समय वे राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। अमिताभ संघर्षों से गुजरे संवेदनशील व्यक्ति हैं। वे हमेशा फिल्मों की चकाचौंध में नहीं रहते। सामाजिक सरोकारों से हर वक्त जुड़े रहे। आम आदमी के दुःख-सुख से परिचित हैं। बिना किसी प्रचार और दिखावे के कर्ज में डूबे किसानों, निराश्रित व्यक्ति और महिलाओं, विद्यार्थियों और समाज के व्यापक हितों के लिए आर्थिक योगदान देते ही रहे हैं। हाल ही में बिहार में आई भयंकर बाढ़ से पीड़ित लोगों की मदद की। अहंकार और अभिमान से बहुत दूर अमिताभ और उनका पूरा परिवार शालीन विनम्र और सादगी से रहने वाला है।

पद्म विभूषण के राष्ट्रीय सम्मान के साथ अब तक चार राष्ट्रीय फेयर फिल्म और पांच बार फिल्म फेयर के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के अवार्ड पुरस्कार से नवाजे गए अमिताभ बच्चन की निभाई भूमिकाओं में कहीं हमारी खुशी है तो कहीं गम, कहीं हमारी उपलब्धियां हैं तो कहीं लापरवाहियां भी, कहीं असन्तोष हैं तो कहीं हमारी कुंठाएं भी, हमारी मासूमियत तो हमारे छल भी, कहीं हमारे संस्कार बोलते हैं तो कहीं रूढ़ियों से संघर्ष कर नई राह बनाने का माद्दा भी। कुल मिलाकर अमिताभ बच्चन में हर आम आदमी अपना अक्सर देखता है। 'दादा साहब फालके अवार्ड' पर उन्हें बहुत-बहुत मंगलकामनाएँ।

दादा साहब फालके

कहते हैं कि जब तक जिद न हो तब तक सपने पूरे नहीं होते। ऐसी ही जिद थी धुंढीराज गोविन्द फाल्के यानी दादा साहब फाल्के में। वे पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत में सिनेमा की शुरुआत की। फिल्मों में आधुनिक तकनीक, पारंपरिक फिल्मों के तरीके से अलग हट कर कुछ नया करने और रचने की काबिलियत थी उनमें। फिल्मों के लिए उनके के पास पैसा नहीं था, पर सपने थे। सोचते थे कि विदेशों में जैसी फिल्में बनती हैं, क्या वैसी भारत में नहीं बन सकतीं। इसी उधेड़-बुन में उन्होंने एक बार ईसा मसीह पर आधारित फिल्म देखी। फिल्म को देखने के बाद उन्होंने भी फिल्म बनाने की सोची और उसके लिए पटकथा ढूंढने लगे। इसी के फलस्वरुप उन्होंने मुंबई के पांच व्यापारियों के सहयोग से हिन्दुस्तान फिल्म कंपनी बनाई। उसी कंपनी के बैनर तले उन्होंने 1913 में पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' बनाई। इस फिल्म को बनाने के लिए उन्होंने सिनेमा से जुड़े सभी तकनीकी और व्यावहारिक पक्ष सीखे।

उन्होंने 95 फिल्में और 26 लघु फिल्में बनाईं। दादा साहब ने सिनेमा में कई नए प्रयोग किए। इन्हीं प्रयोगों में एक प्रयोग उन्होंने सन 1913 में किया, जब पहली बार एक अभिनेत्री को सिनेमा में उतारा। तब अभिनय का पेशा महिलाओं के लिए अच्छा नहीं माना जाता था। पुरुष ही महिलाओं की भूमिका निभाते थे।

इसके बाद उन्होंने महाभारत और रामायण के किरदारों को चलचित्र के पात्रों के रूप में उतारा। उनका जन्म महाराष्ट्र में 30 अप्रेल, 1870 को हुआ। उनके पिता संस्कृत के विद्वान थे ओर मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ाते थे। फालके की शिक्षा मुंबई में ही हुई।

उन्होंने फिल्मों की अधुनातन तकनीक का विदेशों में अध्ययन किया। इस वजह से उन्हें आर्थिक बोझ भी झेलना पड़ा। मूक फिल्मों से बोलती फिल्मों की ओर ले जाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। उन्होंने भारत की पहली स्वदेशी फीचर फिल्म का निर्माण किया। फिल्म क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए उनकी स्मृति में 'दादा साहेब फाल्के' नामक पुरस्कार की घोषणा की गई। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में इस प्रकार हैं -

राजा हरिश्चन्द्र(1913), मोहिनी भस्मासुर(1913), सत्यवान सावित्री(1914), लंका दहन(1917), श्री कृष्णा जन्म(1918) और कालिया मर्दन(1919)।

दादा साहब फाल्के की अंतिम फिल्म 'गंगावतारम' के बाद उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और उन्होंने फिल्मों से अवकाश ले लिया। 16 फरवरी, 1944 को उन्होंने इस दुनिया से विदा ली।

अबी अहमद को शांति का नोबेल पुरस्कार

अफ्रीकी देशों में सबसे युवा राष्ट्राध्यक्ष अबी अहमद के पास जो उपलब्धियां हैं, वे उनकी उम्र से कहीं ज़्यादा बड़ी हैं। उन्होंने हिंसा प्रभावित अफ्रीका में सकारात्मकता की नई लहर पैदा की।

✍ शिल्पा नागदा

इथियोपिया के प्रधानमंत्री अबी अहमद अली(43) को 2019 का नोबेल शांति पुरस्कार दिया जाएगा। उन्हें यह पुरस्कार पड़ोसी देश इरिट्रिया के साथ सीमा संबंधी विवाद में 22 साल से चला आ रहा गतिरोध दूर करने और उनकी सुधारवादी दूरदृष्टि को देखते हुए दिया जा रहा है। उन्हें इथियोपिया का 'नेल्सन मंडेला' भी कहा जाता है।

अप्रैल 2018 में गृहयुद्ध से जूझ रहे इथोपिया की सत्ता संभालने के बाद से ही अहमद ने इरिट्रिया से संबंध सुधारने की कवायद तेज कर दी थी। जुलाई में एरिट्रिया की राजधानी असमारा में हुई ऐतिहासिक मुलाकात में उन्होंने अफवेर्की के साथ मिलकर दो दशक पुराना सीमा विवाद हल करने का ऐलान किया।

साल के अंत में दोनों देशों ने शांति समझौते पर मुहर लगाई। इसी के साथ दोनों के बीच हवाई सेवा बहाल हो गई। दोनों देशों में एक-दूसरे के दूतावास दोबारा खुल गए। नोबेल समिति ने इरिट्रिया के राष्ट्रपति इजैज अफवर्की की कोशिशों को भी सराहा है।

300 से अधिक दिग्गजों को पछाड़ा

अहमद ने स्वीडन की मशहूर पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग सहित 300 से अधिक दिग्गजों को पछाड़कर नोबेल शांति पुरस्कार अपने नाम किया। 16 वर्षीय थनबर्ग ऑनलाइन सट्टा बाजार में सबसे आगे चल रही थीं। उन्हें एमनेस्टी इंटरनेशनल के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा जा चुका था। 'वैकल्पिक नोबेल' का दर्जा रखने वाले 'राइट लाइवलिहुड अवॉर्ड' पर भी वह कब्जा जमा चुकी थी। ऐसे में सट्टेबाज नोबेल शांति पुरस्कार के लिए सबसे ज्यादा दांव उन्हीं पर लगा रहे थे।

इथोपिया में उदारवादी सुधार शुरू किए : अहमद ने प्रधानमंत्री काल के शुरुआती सौ दिनों में देश से इमरजेंसी हटाई। हजारों राजनीतिक बंदियों को रिहा किया। जिन असंतुष्ट नेताओं और कार्यकर्ताओं को इथोपिया से निर्वासित किया गया था, उन्हें स्वदेश लौटने की इजाजत दी। मीडिया पर लागू सेंसरशिप खत्म की। अपनी सरकार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाते हुए मंत्रिमंडल में रक्षा मंत्री सहित आधे पद महिलाओं को सौंपे। उन्होंने केन्या और सोमालिया में समुद्री इलाके को लेकर चले आ रहे संघर्ष को खत्म करने में मध्यस्थता की। सूडान के सैन्य शासन और प्रदर्शनकारियों के बीच सुलह करवाने में भी वह निर्णायक भूमिका में रहे।

मंडेला के प्रशंसक : अहमद अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ आंदोलन चलाने वाले मंडेला के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। वह अक्सर उनकी तस्वीर वाली टी-शर्ट पहने नजर आते हैं। मंडेला जब जेल से निकले तब अबी अहमद मात्र 13 वर्ष के थे। उनके पिता मुस्लिम और मां ईसाई हैं। नौ साल पहले उन्होंने राजनीति में कदम रखा था और महज आठ साल के भीतर वह इस पिछड़े, गरीब और जातीय युद्ध में उलझे अफ्रीकी देश के प्रधानमंत्री बन गए। पिछले वर्ष जब उन्होंने प्रधानमंत्री पद संभाला, तो दशकों से अजीबोगरीब जटिलता वाले गृह युद्ध में फंसे इथियोपिया के लिए वह लोकतंत्र का एक आश्वासन बनकर आए। बदलाव के लिए उन्होंने 'हथियार नहीं, विचार' का जो नारा दिया, उसने सभी जातीय समूहों को आकर्षित किया। हालांकि खुद अपने जीवन की शुरुआत उन्होंने सरकार के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध लड़ रहे संगठन के सैनिक के रूप में की थी।

लोकतंत्र में अटूट आस्था

लोकतंत्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का सबसे बड़ा उदाहरण तब मिला, जब उन्होंने न सिर्फ सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया, बल्कि 18 महीनों तक इथियोपिया की जेल में रहने के बाद अमेरिका में निर्वासित जीवन बिता रहीं लोकतंत्र समर्थक इथियोपियाई नेता बिरटुकन मिडेस्का को न सिर्फ वापस बुलाया, बल्कि उन्हें चुनाव आयोग का अध्यक्ष भी बनाया।

देश के भीतर और बाहर के तनावों को कम करने का सीधा फायदा भी इथियोपिया को मिला। वे संसाधन, जो तमाम झगड़ों में खर्च हो रहे थे, विकास के लिए उपलब्ध हो गए। इसके साथ ही अबी अहमद ने पिछली मार्क्सवादी सरकार की अर्थव्यवस्था को बदला। न सिर्फ निजीकरण का दौर शुरू किया, बल्कि उदारवाद को व्यापक स्तर पर विस्तार दिया। परिणामस्वरूप, इस समय इथियोपिया की गिनती दुनिया में सबसे तेजी से विकास कर रही अर्थव्यवस्थाओं में होने लगीहै। हालांकि यह भी सच है कि बदहाली ने अभी भी इस देश का पीछा नहीं छोड़ा है और वहां बेरोजगारों की एक बड़ी फौज है, जो कभी भी किसी राजनीतिक संकट का कारण बन सकती है। तमाम अफ्रीकी देशों की तरह इथियोपिया में भी बदहाली की जड़ें काफी गहरी हैं, इसलिए हल आसान नहीं है। पर अनिश्चय के इसी सूखे के बीच अबी अहमद अली एक उम्मीद भरे बादल के रूप में सामने आए हैं।

टेरेसा व सत्यार्थी को मिल चुका है यह सम्मान

- 1901 से 2018 तक शांति का नोबेल 106 लोगों को दिया गया। 19 बार इसकी घोषणा नहीं हुई।
- 17 महिलाएं, 89 पुरुषों को यह पुरस्कार दिया गया।
- पाकिस्तान की मलाला यूसुफजई सबसे कम उम्र(17) और ब्रिटेन के जोसेफ रोटब्लाट सबसे उम्रदराज(87) हैं।
- शांति का नोबेल अब तक दो भारतीयों मदर टेरेसा को 1979 में और कैलाश सत्यार्थी को 2014 में दिया जा चुका है।

अर्थशास्त्री अभिजीत भी पुरस्कृत

निर्धनता का अर्थशास्त्र लिखने वाले भारतीय मूल के अमरीकी अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी को भी नोबल पुरस्कार मिला है। भारत के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि पिछले 21 साल के दौरान अर्थशास्त्र के क्षेत्र में दो भारतीय अर्थशास्त्रियों को यह सम्मान मिला। 1998 में अमर्त्य सेन नोबल पुरस्कार से सम्मानित हुए थे। अभिजीत बनर्जी को उनकी फ्रांसीसी मूल की पत्नी एस्थर डुफ्लो और अमेरिकी अर्थशास्त्री माइकल क्रेमर के साथ संयुक्त रूप से नोबल पुरस्कार देने की घोषणा की है। अभिजीत ने भारत की आर्थिक नीतियों पर भी काम कने के साथ ही अनेक शोध पत्रों को तैयार किया है जिनसे गरीबी से लड़ने की नई ताकत मिली है। इन तीनों ही अर्थशास्त्रियों के प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण ने विकास के अर्थशास्त्र के स्वरूप को बदला है। उनके अध्ययनों और प्रयोगों के निष्कर्षों से गरीब और मध्य आय वाले देशोंमें नीति निर्माण में काफी मदद मिल सकती है। इन तीनों ने ही गरीबी, असमानता और जन कल्याण जैसे समान विषयों पर शोध किए हैं, जो तीसरी दुनिया के देशों के लिए बेहद अहम साबित हो सकते हैं।

अभिजीत इस मत के रहे हैं कि गरीबी से निपटने के लिए सरकारें जो नीतियां बनाती हैं, उनका गरीबों के जीवन की बुनियादी समझ से कोई वास्ता नहीं होता। आंकड़ों में गरीबी को कम करने के दावे भले ही बढ़ा-चढ़ा कर पेश किए जाएं, लेकिन हकीकत इसके उलट ही होती है। जिस सिद्धांत पर इन अर्थशास्त्रियों ने काम किया, वह यह है कि सिर्फ स्कूल खोल देने से बेहतर शिक्षा या अस्पताल खोल देने से बेहतर स्वास्थ्य उपलब्ध नहीं होगा। छात्र-शिक्षक अनुपात तो ठीक हो ही, शिक्षकों की नियुक्ति भी परफॉर्मेंस आधारित हो। स्वास्थ्य केन्द्र ज्यादा खोलने के बजाय स्वास्थ्य सुविधाएं घर-घर पहुंचानी होंगी।

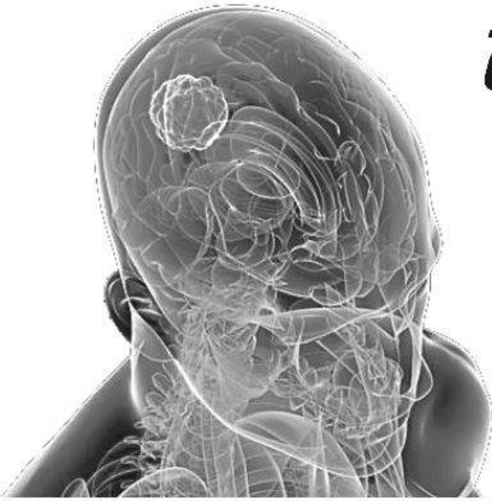

कहीं जानलेवा न बन जाए गले और सिर का कैंसर

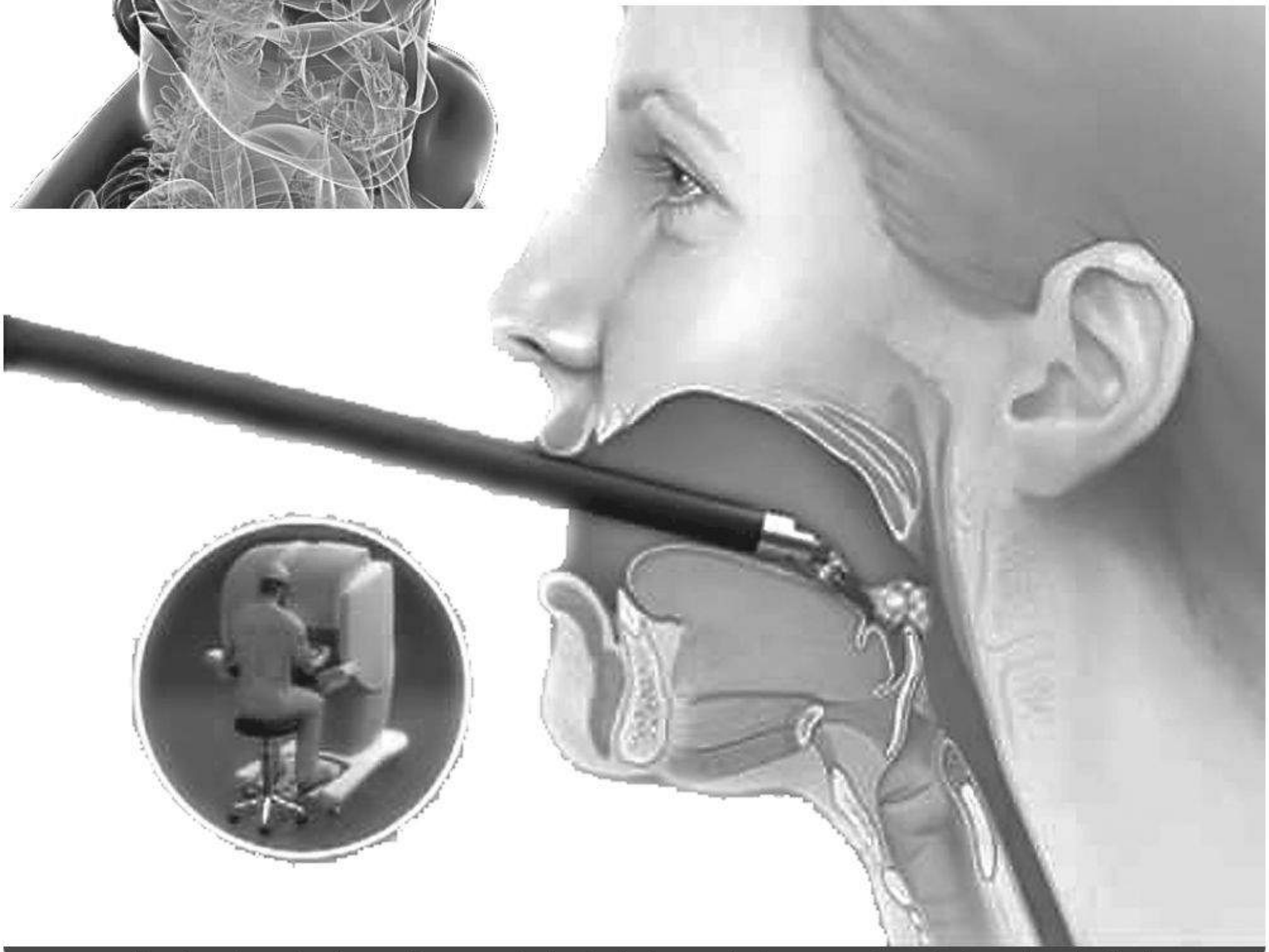

गले और सिर के कैंसर के मामले तेजी से फैल रहे हैं। इस बीमारी के प्रति लोगों में जागरुकता के लिए प्रस्तुत है - निधि गोयल का आलेख

आधुनिक युग में सुख-सुविधाओं की कमी नहीं है। आज कोई भी कार्य काफी आसान हो गया है। इसके साथ ही बीमारियों में भी वृद्धि हुई है। यदि कैंसर की बात की जाए तो इसके रोगी काफी बढ़ गए हैं। गले और सिर के कैंसर रोगियों में भी काफी बढ़ोतरी हुई है। यह तंबाकू और अल्कोहल के अधिक सेवन से होता है।

सिर और गर्दन पर कैंसर ट्यूमर से फैलता है। ये कैंसर ओरल कैविटी, ग्रसनी, गला, नाक कैविटी, पैरानेजल साइनस, थाइरॉएड और सेलिवरी ग्लैंड में होता है। भारत में मुंह और जीभ का कैंसर सिर और गर्दन के कैंसर से अधिक सामान्य है। यह भी देखा गया है कि गले और सिर के कैंसर से प्रभावित होने वालों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक होती है।

क्या है इसके लक्षण

सिर और गले के कैंसर के अधिकतर मामलों में प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते हैं। इसके लिए किसी को भी इसेक संभावित कारणों की पहचान करनी आनी चाहिए, ताकि कैंसर कोशिकाओं का उपचार उनके फैलने से पहले किया जा सके। सिर और गले के कैंसर का कारगर उपचार उतना ही सफलतापूर्वक हो सकता है, जितनी शुरुआत में इसकी पहचान हो जाए।

मुंह में सूजन अथवा मुंह से खून आना, गले में सूजन रहना, आवाज कर्कश होना, लम्बे समय से चली आ रही खांसी अथवा खांसी के साथ खून आना, कान में दर्द, सुनने में दिक्कत होना इसके प्रमुख लक्षण है।

कारण को जानें

- ❖ तम्बाकू (धूम्रपान अथवा खाने में) सिर और गले के कैंसर के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से माना जाता है। तम्बाकू के साथ अगर एल्कोहल का सेवन किया जाए तो खतरा और बढ़ जाता है।
- ❖ ह्यूमन पेपिलोमा वायरस (एचपीवी) को भी सिर और गले के कैंसर का एक कारक माना गया है। सिर और गले का कैंसर मुख्य रूप से एचपीवी के टॉन्सिल और तालू पर हमले से होता है। इसके साथ ही रेडिएशन, सुपारी चूसने या चबाने, कुछ खास विटामिनों की कमी, मसूढ़ों की बीमारी इसके लिए उत्तरदायी होते हैं। इनसे मुक्ति पाने के लिए धूम्रपान और तम्बाकू उत्पाद, एल्कोहल, सनस्क्रीन और लिप बाम आदि का इस्तेमाल करना कम करें अथवा छोड़ ही दें।

इलाज के बाद

- ❖ इलाज के बाद मरीज को चबाने, खाने और बात करने में परेशानी हो सकती है। अगर ऐसा होता है तो रिहैबिलिटेशन की जरूरत पड़ती है, जिसमें डॉक्टर अन्य जरूरी कदम उठाते हैं।

तम्बाकू से 16 प्रकार के कैंसर

सिगरेट के हर कश के साथ व्यक्ति 7000 प्रकार के हानिकारक रासायनिक पदार्थों को जाने-अनजाने ग्रहण करता है, जिनमें से 70 कार्सिजोनस पदार्थ हैं। जब ये खतरनाक रसायन शरीर में प्रवेश करते हैं, तो उनमें डीएनए को बदलने और धूम्रपान करने वाले के शरीर में अनेक प्रकार के कैंसर जैसे रोग को उत्पन्न करने की क्षमता होती है। फेफड़े के कैंसर के 10 में से 9 मामलों में तंबाकू ही प्रमुख कारण माना जाता है। एक अनुमान के अनुसार, 16 प्रकार के कैंसर होने का प्रमुख कारण तंबाकू का इस्तेमाल है। मुंह का कैंसर भी इनमें प्रमुखता से शामिल है, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रतिवर्ष 70 लाख लोग तंबाकू के इस्तेमाल के कारण मारे जाते हैं, जो तंबाकू का इस्तेमाल करने वाले कुल लोगों में से आधे होते हैं।

इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के अनुसार, पिछले 26 वर्षों में भारत में स्तन, गला व मुंह के कैंसर और फेफड़ों के कैंसर की घटनाओं में दोगुनी वृद्धि हुई है। तंबाकू चबाने के कारण मुंह, ग्रासनली और अग्नाशय के कैंसर होते हैं। कार्डियो वेस्कुलर से जुड़ी समस्याओं से होने वाली मौतों के लिए भी तंबाकू एक जिम्मेदार कारक है।

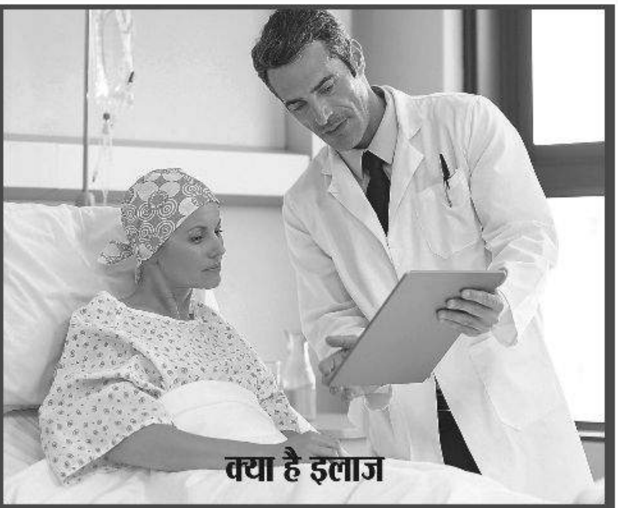

क्या है इलाज

सिर और गले के कैंसर का इलाज ट्यूमर की स्थिति, पोजिशन, चरण और मरीज की सेहत पर निर्भर करता है। इलाज की प्रक्रिया में मुख्य रूप से एक अथवा अधिक उपाय अपनाए जाते हैं।

सर्जरी : कैंसर को हटाने के लिए डॉक्टर सर्जरी का सहारा ले सकते हैं। इसमें कैंसर प्रभावित क्षेत्र के आसपास स्थित कुछ स्वस्थ कोशिकाओं को भी हटाना पड़ सकता है। यदि डॉक्टर कैंसर के फैलने को लेकर शंकित हो तो वह गले के लिम्फ नोड को भी हटा सकता है।

कीमोथेरेपी : कीमोथेरेपी एक पारिभाषिक शब्द है, जिसका संबंध कैंसर को पूरे शरीर से खत्म करने वाली दवाओं के समूह से होता है। इस इलाज के कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी हो सकते हैं, जैसे भूख कम होना, बालों का झड़ना, मुंह में सूजन, थकान आदि। कीमोथेरेपी करवाने से पहले मरीज को डॉक्टर से इन प्रतिकूल प्रभावों और उनसे निबटने के तरीकों के बारे में बात कर लेनी चाहिए।

रेडिएशन थेरेपी : रेडियोथेरेपी में उच्च क्षमतायुक्त किरणों के जरिये कैंसर कोशिकाओं को समाप्त किया जाता है। यह रेडिएशन आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार से दिया जा सकता है।

आधुनिक उपचार

ट्रांसोरल रोबोटिक सर्जरी : इस प्रकार की सर्जरी उन रोगियों के लिए विशेष रूप से डिजाइन की जाती है, जिन्हें सिरऔर गले का कैंसर है। टीओआरएस प्रक्रिया के दौरान रोबोटिक इन्स्ट्रूमेन्ट्स मुंह से डाले जाते हैं और सर्जन उन्हें नियंत्रित करता है।

एक्साइजन : यह कैंसरग्रस्त ट्यूमर और उसके आसपास के कुछ स्वस्थ ऊतकों, जिन्हें मारजिन कहा जाता है, को निकालने का ऑपरेशन है।

लिम्फनोड डिसेक्शन या नेक डिसेक्शन : अगर डॉक्टर को संदेह है कि कैंसर फैल चुका है तो डॉक्टर लिम्फनोड को निकाल सकता है। इससे कंधों में, थोड़ा कड़ापन आ सकता है। इसे एक्साइजन के साथ ही किया जा सकता है।

कार्बाइड से पके फल-सब्जियां ना.....रे......ना

✍ रेणु शर्मा

बाजार में फलों तथा सब्जियों की अधिक कीमत पाने के लिए इन्हें ताजा रखा जाता है। इसके लिए उत्पादक तोड़ते समय ही फलों तथा सब्जियों पर रसायनों का छिड़काव कर देते हैं। डीडीटी ऐसा ही खतरनाक संचयी रसायन है, जो शरीर में एक बार प्रवेश कर लेने के बाद बाहर नहीं आता।

अल्पकाल में ही अधिक लाभ कमाने के लिए फल और सब्जियों को समय से पहले कृत्रिम रूप से शीघ्र पकाने और उनका रंग मोहक बनाये रखने के लिए ऐसे रसायनों का इस्तेमाल किया जा रहा, जो सेहत के लिए बहुत नुकसानदायक होते हैं। ये रसायन शरीर में पहुंच कर लम्बे समय तक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

फलों को शीघ्र पकाने के लिए फल व्यापारी कैल्शियम कार्बाइड का उपयोग धड़ल्ले से करने लगे हैं। यह रसायन सेहत के लिए बहुत ही घातक है। पहले फलों को पकाने के लिए कागज लपेट कर घास की पाल लगाने की विधि अपनाई जाती थी, परन्तु अब फलों में कागज की छोटी-छोटी पुड़ियां कैल्शियम कार्बाइड सहित रख दी जाती हैं। इससे फल जल्दी पक जाते हैं। साथ ही, उनका रंग भी सुंदर हो जाता है। लेकिन स्वाद, सुपाच्य और पौष्टिक तत्वों से भरपूर ये फल कैल्शियम कार्बाइड के कारण जहरीले और नुकसानदायक हो जाते हैं। कैल्शियम कार्बाइड से एसीटिलीन गैस निकलती है, जो जहरीली होती है। इसका हृदय जैसे नाजुक अंग पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे ही ऐसीटिलीन गैस पानी के संपर्क में आकर विनायल अल्कोहल तथा एसीटिल डिहाईड्राइड बनाती है, जो शरीर के लिए हानिकारक होती है। कैल्शियम कार्बाइड द्वारा गोदामों में आम, पपीता, केला आदि फलों को पकाना तो आम बात है, लेकिन अब व्यापारी अपने लाभ के लिए हरे टमाटर को लाल करने तथा नींबू को पीला करने में भी

इस रसायन का इस्तेमाल कर रहे हैं। पोषण वैज्ञानिकों के अनुसार, कैल्शियम से पके फलों तथा सब्जियों से महत्वपूर्ण विटामिन, थियामिन, नायमिन जैसे खनिज तत्व नष्ट हो जाते हैं। ऐसे फल और सब्जियां शरीर में गर्मी उत्पन्न करते हैं। वे शरीर और सेहत को कई तरह से नुकसान पहुंचाते हैं। बाजार में फलों तथा सब्जियों पर जो ताजगी नजर आती है, वह उन पर डीडीटी, बीएचसी तथा अन्य घातक रसायनों के इस्तेमाल के कारण होती है। बाजार में फलों तथा सब्जियों की अधिक कीमत पाने के लिए इन्हें ताजा रखना होता है। इसलिए उत्पादक तोड़ते समय फलों तथा सब्जियों पर उक्त रसायनों का छिड़काव कर देते हैं। डीडीटी ऐसा खतरनाक संचयी रसायन है, जो शरीर में एक बार प्रवेश कर लेने के बाद कभी नहीं निकलता। इससे शरीर के विभिन्न अंगों पर बुरा असर पड़ता है। यही नहीं, इस रसायन का उपयोग धड़ल्ले से अनाज के गोदामों में भी किया जा रहा है। डीडीटी रसायन के हानिकारक होने के कारण पश्चिमी देशों में इस पर पूरी तरह से प्रतिबंध है।

खाद्य मिलावट निवारण अधिनियम, 1954 के तहत कैल्शियम कार्बाइड से फल पकाना निषिद्ध है। बावजूद इसके ऐसा किया जा रहा है। इससे कैंसर, लकवा, जिगर के रोग, विकलांगता आदि की आशंका रहती है।

इन पर दें ध्यान

❖ जब भी बाजार से फल-सब्जी लेने जाएं, तो जरूरत से ज्यादा ताजे दिखने और मोहक रंगों वाली सब्जियों-फलों को न खरीदें।

❖ जहां तक संभव हो, डाल के पके फल अथवा प्राकृतिक रूप से घास-फूस में पके फलों को ही खरीदें।

❖ फलों को खरीदते समय सूंघ कर उनकी नैसर्गिक सुगंध का पता भी अवश्य करें।

❖ जिन फल-सब्जियों में कृत्रिम रसायनों की गंध हो, उन्हें कदापि न लें।

❖ फल और सब्जी को हमेशा स्वच्छ पानी में भली-भांति धोने के बाद इस्तेमाल करना चाहिए।

मरियम थ्रेसिया को संत का दर्जा

पोप फ्रांसिस ने वेटिकन सिटी में एक भव्य समारोह में भारतीय नन मरियम थ्रेसिया और चार अन्य को 13 अक्तूबर को संत घोषित किया। मई 1914 में केरल के त्रिसूर में 'कॉन्ग्रिगेशन ऑफ द सिस्टर्स ऑफ द होली फैमिली'(सीएचएफ) की स्थापना करने वाली मरियम थ्रेसिया को सेंट पीटर्स स्क्वायर में एक समारोह के दौरान सदियों पुराने इस संस्थान के सबसे ऊंचे पद का सम्मान दिया गया।

केरल की नन के साथ ही ब्रिटिश कार्डिनल जॉन हेनरी न्यूमैन, स्विस लेवुमन मार्गरेट बेज, ब्राजील की सिस्टर डुल्स लोप्स और इतालवी सिस्टर ग्यूसेपिना वानीनि को भी संत की उपाधि से विभूषित किया गया। समारोह के दौरान सेंट पीटर्स के बैसिलिका से पांच नए संतों की विशाल तस्वीरें लटकाई गई।

केरल के साइरो-मालाबार चर्च के संतों की संख्या अब चार हो गई। सबसे पहले 2008 में सिस्टर अल्फोंसा को संत घोषित किया गया था। इसके बाद फादर कुरियाकोस एलियास चाबरा और सिस्टर यूफारसिया को 2014 में संत घोषित किया गया। मरियम थ्रेसिया को उनके जीवन के आधे समय तक केवल थ्रेसिया नाम से जाना जाता था। यह नाम उन्हें तीन मई, 1876 को नामकरण संस्कार के दौरान दिया गया।

इसके बाद, वर्ष 1904 उन्होंने इच्छा जताई कि उन्हें मरियम थ्रेसिया पुकारा जाए क्योंकि उनका मानना था कि एक सपने में ब्लेस्ड विर्जिन मेरी ने उन्हें उनके नाम में 'मरियम' जोड़ने को कहा था। उन्हें 1914 में यह नाम दिया गया। चर्च ने उन्हें एक असाधारण पवित्र व्यक्ति घोषित किया। ईसा मसीह का अनुसरण करते हुए उन्होंने गरीबों की मदद की, बीमारों की सेवा की और अकेले पड़े लोगों का दर्द दूर किया। उन्होंने दुनिया के पाप मिटाने के लिए खुद दुख झेला। सिस्टर थ्रेसिया का आठ जून, 1926 को 50 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। पोप जॉन पॉल द्वितीय ने नौ अप्रैल 2000 को उन्हें 'धन्य' घोषित किया था। सिस्टर थ्रेसिया ने 50 साल के अपने छोटे से जीवनकाल में ही मनवता की भलाई के लिए जो कार्य किए, वो पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल है। सिस्टर थ्रेसिया ने जो भी कार्य किया, उसे निष्ठा और लगन के साथ पूरे समर्पण भाव से पूरा किया। समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र से उनका अद्भुत लगाव था। उन्होंने कई स्कूल, छात्रावास और अनाथालाय खुलवाए।

रसोई की दिशा से बनते-बिगड़ते हैं रिश्ते

पं. हीरालाल नागदा

> वास्तु शास्त्र का मूल आधार भूमि, जल, वायु एवं प्रकाश है, जो जीवन के लिए अति आवश्यक है। इनमें असंतुलन होने से नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। लेकिन कई बार वास्तु के नियमों का पालन न करने पर व्यक्ति विशेष का स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि उसके रिश्ते पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार रसोईघर, भट्टी, धुएं की चिमनी आदि मकान के विशेष भाग में निर्धारित की जाती है ताकि हवा का वेग धुएं तथा खाने की गंध को अन्य कमरों में न फैलाए तथा इससे घर में रहने व काम करने वालों का स्वास्थ्य न बिगड़े।

- यदि रसोईघर नैरत्य कोण में हो तो यहां रहने वाले हमेशा बीमार रहेंगे।
- यदि घर में अग्नि वायव्य कोण में हो तो यहां रहने वालों में अक्सर झगड़ा रहेगा। मन में शांति की कमी और कई अन्य परेशानियों का भी सामना करना पड़ेगा।
- यदि अग्नि उत्तर दिशा में हो तो यहां रहने वालों को धन हानि होगी।
- यदि अग्नि ईशान कोण में हो तो बीमारी और झगड़े अधिक होते हैं। साथ ही धन हानि और वंश वृद्धि में भी कमी होती है।
- यदि घर में अग्नि मध्य भाग में हो तो यहां रहने वालों को हर प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

कहां होनी चाहिए रसोई

- रसोईघर हमेशा आग्नेय कोण में ही होना चाहिए
- रसोईघर के लिए दक्षिण-पूर्व क्षेत्र सर्वोत्तम रहता है। वैसे यह उत्तर-पश्चिम में भी बनाया जा सकता है।
- यदि घर में अग्नि, आग्नेय कोण में हो तो यहां रहने वाले कभी भी बीमार नहीं होते, ये लोग हमेशा सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।
- यदि भवन में अग्नि पूर्व दिशा में हो तो यहां रहने वालों का ज्यादा नुकसान नहीं होता है।
- रसोईघर हमेशा आग्नेय कोण, पूर्व दिशा में होना चाहिए या फिर इन दोनों के मध्य में होना चाहिए वैसे तो रसोईघर के लिए उत्तम दिशा आग्नेय ही है।

क्या करें, क्या न करें

- उत्तर-पश्चिम की ओर रसोई का स्टोर रूम, फ्रिज और बर्तन आदि रखने की जगह बनाएं।
- रसोईघर के दक्षिण-पश्चिम भाग में गेहूं, आटा, चावल आदि अनाज रखें।
- रसोई के बीचों-बीच कभी भी गैस, चूल्हा आदि नहीं जलाएं और न ही रखें।
- कभी भी उत्तर दिशा की तरफ मुख करके खाना नहीं पकाना चाहिए, सिर्फ थोड़े दिनों की बात है ऐसा मान कर किसी भी हालत में उत्तर दिशा में चूल्हा रखकर खाना न पकाएं।

इन बातों का रखें ध्यान

- रसोई में तीन चकले न रखें, इससे घर में क्लेश हो सकता है।
- रसोईघर में हमेशा गुड़ रखना सुख-शांति का संकेत माना जाता है।
- टूटे-फूटे बर्तन भूलकर भी उपयोग में न लाएं, ऐसा करने से घर में अशांति का माहौल रहता है।
- रसोई घर पूर्व मुखी अर्थात् खाना बनाने वाले का मुंह पूर्व दिशा में ही होना चाहिए। उत्तर मुखी रसोई खर्च ज्यादा करवाती है।
- यदि आपका किचन आग्नेय या वायव्य कोण को छोड़कर किसी अन्य क्षेत्र में हो, तो कम से कम वहां पर बर्नर की स्थिति आग्नेय अथवा वायव्य कोण की तरफ हो।

झाड़ू को दें सम्मान

साफ़-सफ़ाई में आपकी मदद करने वाली झाड़ू आपके घर की आर्थिक स्थिति को बदलने में अहम भूमिका निभा सकती है।

धन की देवी लक्ष्मी को सफ़ाई भाती है, इसलिए झाड़ू भी उनकी प्रिय मानी जाती है। झाड़ू को लक्ष्मीजी का प्रतीक भी स्वीकार किया गया है, इसलिए घर के आर्थिक हालात और झाड़ू के बीच का गहरा रिश्ता माना गया है। इन बातों पर ग़ौर करें ....

आदर की दरकार : घर बुहारने के बाद हमेशा झाड़ू को अच्छी तरफ साफ़ करके नियत स्थान पर रखें। झाड़ू पर पैर कभी न मारें।

नियत स्थान : घर की पश्चिम दिशा में झाड़ू रखना उत्तम फलदायी है। घर के ईशान कोण(उत्तर-पूर्व) और अग्नि कोण(दक्षिण-पूर्व) में झाड़ू कदापि न रखें अन्यथा गृह क्लेश और धन हानि की स्थिति बन सकती है। ख़्याल रहे, झाड़ू को खड़ा करके रखना भी वर्जित है। इसे लिटाकर रखें।

नज़रों से दूर : घर में आने-जाने वालों की दृष्टि से जिस तरह धन छिपाकर रखते हैं, वैसे ही झाड़ू को भी रखना चाहिए। इससे घर की सम्पन्नता को किसी की नज़र नहीं लगेगी। झाड़ू को किसी रैक, सोफे या पलंग के नीचे रखा जा सकता है। दो झाड़ू कभी एक साथ न रखें।

नए घर में : नए घर में शिफ्ट हो रहे हैं, तो इस्तेमाल हो रही झाड़ू पुराने घर में ही छोड़ दें। नए घर की साफ़-सफ़ाई नई झाड़ू से करेंगे, तो समृद्धि और सम्पन्नता के द्वार खुलेंगे।

✍ **पं. रमेश बी. त्रिवेदी**

जुझारू व्यक्तित्व
रामजी मेनारिया

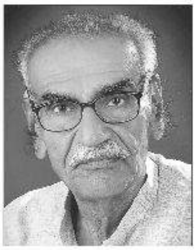

उदयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं श्रमिक नेता रामचन्द्र मेनारिया (85) का 3 अक्टूबर को देहावसान हो गया। इन्होंने नगर पालिका उदयपुर में 1955 में सेवाएं प्रारम्भ की। यहीं से राजस्व निरीक्षक के पद से 1990 में सेवानिवृत्त हुए।

श्रद्धांजलि

सन् 1945 में उदयपुर में 'देशी लोक राज्य परिषद' के अधिवेशन में कांग्रेस सेवादल के स्वयंसेवक के तौर पर राजनैतिक जीवन शुरू करने वाले रामजी अप्रेल, 1948 में मेवाड़ धारा सभा के चुनाव के दौरान मेवाड़ प्रजामण्डल के सामन्तशाही विरोधी आन्दोलन में सक्रिय रहे। 1957 में उदयपुर के प्रसिद्ध जगदीश मन्दिर में हरिजन प्रवेश का नेतृत्व किया। सन् 1952 से 1998 तक विधानसभा, लोकसभा तथा स्थानीय निकायों के चुनावों में पार्टी द्वारा प्रदत्त दायित्वों को निभाने के साथ ही उदयपुर विधानसभा के चुनाव में बतौर संयोजक पार्टी को सफलता दिलाई। पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया, हरिदेव जोशी, हीरालाल देवपुरा, गुलाब सिंह शक्तावत के सान्निध्य में संगठन को मजबूत करने और बाद में अशोक गहलोत, डॉ. गिरिजा व्यास, डॉ. सी. पी. जोशी आदि नेताओं के सान्निध्य में भी समर्पण भाव से पार्टी में सक्रिय रहे। सन् 1952 से 1967 तक सुखाड़ियाजी के विधानसभा चुनाव व 1980 में लोकसभा चुनाव में गिरिधारीलाल शर्मा के संयोजकत्व में मिली सफलता में योगदान दिया। 1960 में नगर कांग्रेस कार्यकारिणी में चुने गए। सन् 1983 से 1992 तक महामंत्री रहने के बाद 1992 से 1997 तक अध्यक्ष रहे। सन् 1956 से 1990 तक उदयपुर म्युनिसिपल कर्मचारी संघ के महामंत्री के रूप में स्थानीय निकाय कर्मचारियों के कल्याण के कई कार्य किए। सन् 1958 में राजस्थान म्युनिसिपल एम्पलाईज फेडरेशन का गठन कर उसके प्रथम प्रदेश महामंत्री चुने गए। राज्य श्रम सलाहकार मंडल में सदस्य भी रहे।

दिसम्बर, 1982 से मई 1984 तक उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लिमिटेड में उपाध्यक्ष रहने के बाद मार्च, 1987 से 1990 तक अध्यक्ष रहने के बाद 1995 तक भण्डार के संचालक मंडल में रहे।

स्वतंत्रता सेनानी गुलाबसिंह शक्तावत द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित ''प्रगति'' साप्ताहिक का इन्होंने लम्बे समय तक प्रकाशन-सम्पादन भी किया। शक्तावत के राजस्थान सरकार में मंत्री बनने के बाद 'प्रगति' का दायित्व उन्होंने स्वतंत्रता सैनानी दुर्गेश जोशी को दिया। करीब दो दशक तक सम्पादन के बाद दुर्गेश जी ने सम्पादन का दायित्व रामजी मेनारिया को सौंपा। मेरे पिता के भीमेश्वर प्रिन्टिंग प्रेस में छपने वाले उस समय के इस लोकप्रिय साप्ताहिक को वरिष्ठ पत्रकार बृजमोहन गोयल, विष्णु शर्मा हितैषी आदि की लेखनी का सम्बल भी मिला।

रामजी ने 'मेनारिया ब्राह्मण समाज' के अध्यक्ष के रुप में शिक्षा प्रसार के साथ ही कुरीतियों को समाप्त कर समाज में सहयोग एवं सद्भाव की स्थापना में सक्रिय योगदान दिया। मेनारिया दर्पण न्यास के माध्यम से सैकड़ों बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित किया।

उनका जन्म 15 अगस्त, 1934 को नंदराम मेनारिया-गंगा देवी के घर हुआ। उनके पिता समाजसेवी एवं श्रमिक नेता रहे। उन्हीं संस्कारों का रामजी पर भी प्रभाव पड़ा और वे आजीवन श्रमिक आन्दोलन, समाज सेवा एवं राजनीति से जुड़े रहे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी मोहन देवी व पुत्र मोहित सहित समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व विधानसभाध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी ने 6 अक्टूबर को उनके आवास पर जाकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

ज़िंदगी बचाने को प्लास्टिक का मरना ज़रूरी

देश के कई राज्यों में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने के आदेश तो जारी कर दिए गए हैं लेकिन इन राज्यों की सरकारों के ढुलमुल रवैए और नीति व नियम के स्तर पर खामियों की वजह से प्लास्टिक के खात्मे पर परिणाममूलक सफलता अभी तक नहीं मिल पा रही है। ऐसे में इन सरकारों को जागरूकता अभियान तेज करने के साथ ही सिंगल यूज प्लास्टिक के ऐसे विकल्प की भी तलाश करनी है, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से निरापद हो।

✍ **ओम शर्मा**

आज प्लास्टिक मानव जीवन का अहम अंग बन चुका है। सुबह की शुरुआत प्लास्टिक ब्रश से और रात फाईव स्टार में प्लास्टिक थाली में किए जाने वाले भोजन से खत्म होती है। आज भारत में इस्तेमाल होने वाले कुल प्लास्टिक में चालीस फीसद हिस्सा एक बार इस्तेमाल करके फेंक दिए जाने वाले(सिंगल यूज) प्लास्टिक का है। प्लास्टिक इंसान से लेकर पर्यावरण और समुद्री जीव जन्तुओं को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा रहा है।

प्लास्टिक का बढ़ता इस्तेमाल लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर रहा है। इससे कैंसर जैसी कई गंभीर बीमारियां पैदा हो रही हैं। ऐसे में धरती पर अगर प्लास्टिक रहेगा तो जिंदगी नहीं बचेगी। इसलिए अगर जिंदगी चाहिए तो प्लास्टिक को खत्म करना होगा। सिंगल यूज प्लास्टिक को प्रतिबंधित कर पाना कोई मुश्किल काम नहीं है, बस लोगों को इसके खतरों के बारे में समझना होगा। प्लास्टिक की उपयोगिता को कम करने के लिए हमें बाजारों में अपने खादी कपड़ों से बने झोले को लेकर निकलना पड़ेगा। आज सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल सबसे अधिक ऑनलाइन मार्केट में हो रहा है। सरकार को चाहिए कि ऑनलाइन सामान की डिलिवरी के समय पॉलिथिन की पैकेजिंग को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करे।

भारत में प्लास्टिक कचरे का निबटान एक बड़ी समस्या बना हुआ है। ये समस्या अब और ज्यादा विकराल इसलिए हो रही है कि कई कंपनियां और पुनर्चक्रण इकाइयां चोरी-छिपे विदेशी प्लास्टिक कचरे का आयात कर रही हैं। एक मोटे अनुमान के मुताबिक हर साल एक लाख इक्कीस हजार टन से ज्यादा प्लास्टिक कचरा पश्चिम एशिया, यूरोप और अमेरिका सहित देशों से भारत लाया जा रहा है। पचपन हजार टन प्लास्टिक कचरा तो पाकिस्तान और बांग्लादेश से ही आ रहा है। पिछले एक वर्ष के दौरान उत्तर प्रदेश में अट्ठाईस हजार आठ सौ छियालीस टन, दिल्ली में उन्नीस हजार पांच सौ सत्रह टन और महाराष्ट्र में उन्नीस हजार तीन सौ पचहत्तर टन से ज्यादा प्लास्टिक कचरा आयात किया जा चुका है।

इस बात से शायद ही किसी को असहमति होगी कि प्लास्टिक के बढ़ते बेलगाम इस्तेमाल ने आज समूचे पर्यावरण के सामने एक बड़ा संकट खड़ा कर दिया है। इससे न केवल जल, वायु और जमीन को दीर्घकालिक नुकसान हो रहा है, बल्कि इससे उपजी मुश्किल को आम लोग रोजमर्रा की जिंदगी में भी महसूस कर रहे हैं। इसके बावजूद न तो लोगों के स्तर पर इसके प्रयोग से बचने की कोशिश होती है, न सरकार की ओर से इस पर कोई ठोस

कार्ययोजना अमल में आ पाती है। हाल के वर्षों में प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले व्यापक नुकसान के मुद्देनजर इस पर प्रतिबंध लगाने का मुद्दा दुनिया भर में चर्चा का विषय बना है। इसी क्रम में हमारे देश में भी स्वच्छ भारत अभियान के तहत दो अक्तूबर यानी गांधी जयंती के दिन से एक बार इस्तेमाल में आने वाले प्लास्टिक पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने की घोषणा हुई थी। लेकिन इस महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम के पीछे अच्छी मंशा होने के बावजूद यह सच है कि पाबंदी और उससे उपजी स्थितियों का आसानी से सामना करने की तैयारी अभी पूरी नहीं हो पाई थी। इसलिए फिलहाल सरकार ने प्लास्टिक के इस्तेमाल को हतोत्साहित करने के लिए जन-जागरूकता अभियान पर जोर दिया है।

हैरानी की बात तो यह है कि जिन राज्यों में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर रोक लगाने की घोषणा कर दी गई है उन राज्यों में इस घोषणा पर अमल ही नहीं किया गया है। प्लास्टिक के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए सबसे पहली जरूरत इसका विकल्प सामने लाने की थी। लेकिन राज्य सरकारों ने इसे पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। इसी का नतीजा है कि प्रतिबंध के बावजूद प्लास्टिक का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है। प्लास्टिक के इस्तेमाल पर पूरी रोक के लिए उस प्लास्टिक पर भी गंभीरता से विचार किए जाने की जरूरत थी जो कई तरह के सामान की पैकिंग में उपयोग किया जाता है। इसमें दूध, मक्खन, तेल, घी, बिस्कुट, चिप्स, नमकीन, कुरकुरे और डिटर्जेंट पाउडर जैसे सामान हैं।

एक बार इस्तेमाल में आने वाले प्लास्टिक पर आम लोगों से लेकर बाजार तक जिस पैमाने पर निर्भर हो गया है, उसमें इस पर अचानक पाबंदी के बाद जटिल हालात पैदा होना स्वाभाविक है। इसके बावजूद यह तथ्य है कि प्लास्टिक से सामानों और खासतौर पर एक बार प्रयोग आने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान का दायरा काफी बड़ा हो चुका है। शहरों-महानगरों के नालों के जाम होने से लेकर चारों तरफ पसरा कचरा एक पक्ष है तो इससे होने वाले वायु प्रदूषण से लेकर जमीन तक के बंजर होने का सवाल ज्यादा गंभीर है। इसलिए समय रहते कम से कम एक बार इस्तेमाल में आने वाले प्लास्टिक के सामान पर से निर्भरता खत्म कर दूसरे विकल्प की खोज होनी ही चाहिए अन्यथा इसके गंभीर दुष्परिणाम सबको भुगतने पड़ेंगे। लोग प्लास्टिक का इस्तेमाल खुद छोड़ें और इस उद्योग में लगे लोगों को रोजगार का विकल्प मिले, इसके लिए एक बड़ी योजना बनाने और उस पर ईमानदारी से अमल की जरूरत है। इसके लिए केन्द्र सरकार को गंभीरता से विचार कर सुदृढ़ नीति व कारगर कार्ययोजना तैयार करनी होगी और कड़े कानून बना कर प्रभावी ढंग से लागू करना होगा।

With Best Compliments

RT RISHABH® BUS PVT. LTD.

UDAIPUR

Town Hall : 7, Town Hall Road, Nr. ICICI Bank, Udaipur (Raj.) 313001
Tel. : 0294-2418369, 2419237, 2421918
Sardarpura : 4/5, Nr. Gumaniawala Petrol Pump, Sardarpura, Udaipur
Tel. : 0294-2422582, 2425024, 2528644
RK Circle : Shobhagpura Road, M. 9460630000, Parcel : 8302369369
Udaipole : S. No. 4, Under Hotel Sangam, Tel. : 0294-2417274, 2418183

NEW DELHI

Filmistan : 2, Shah Bhawan, Behind Filmistan Fire Station, Chamelion Rd., Near Idgah Gol Choraha, New Delhi, Tel. : 011-23519724, 23512299, Parcel : 8010712160
Parcel : Shop No. 6, Old Punjab Bus Stand, Old Delhi-6, Tel. : 011-23981235, 23977301

2x1 2x2 3x2 A/C Buses, Tempo Travelers for Group/ Marriages, Contact Nearest **RISHABH BUS PVT. LTD.** or Call : **98290 66369**

Cargo Service (Luggage & Parcel Service) : Door to Door Delivery, Expert in Intitutional Cargo Services : **98290-66369**

ओपन रुफ डबल डेकर बस द्वारा
उदयपुर दर्शन

किट्टी पार्टी, बर्थ-डे पार्टी आदि के लिए संपर्क करें
+98290 66369, 97829 55222
Visit us : www.udaipursightseeing.com

JAIPUR-RISHABH TRAVELS 0141-5103830, 5104830
RISHABH TRAVELS, D-57, Fateh Singh mkt. Opp. Hotel Rajputana Sheraton
AJMER-RISHABH TRAVELS 0145-2620064, 2620926
C/o KAMLA TRAVELS, 48, Kutchery Road
BHILWARA-RISHABH TRAVELS 01482-237037, 237034
C/o NAMEDEV TRAVELS, Near hotel Land Mark, Basant Vihar
MUMBAI (VT office)-RISHABH TRAVELS 022-22697921.22626841
C/o ASHAPURA TRAVEL, 62-66. Joshi Bldg, Sunder Goa Street. Nr. GPO. VT Fort
HARIDWAR - GANESH YATRA SANGH 08449914477, 01334-220633
MUMBAI (Andheri office)-RISHABH TRAVELS 022-66848686.26844454
C/o MUKESH TRAVELS, Wazir Glass Compound, Western Express highway
BIKANER-RISHABH TRAVELS 0151-2525105, 2209209
C/o MILAN TRAVELS, Near Hotel Mumal, Panchasati Circle
JODHPUR-RISHABH TRAVELS 0291-5103227. 5103226
C/o JAKHAR TRAVELS,Near Barkhatulla Stadium. Main Pat Road M. 99296-22229
JHALAWAD-RISHABH TRAVELS 07432-233135, 233330
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Bus Stand
JHALARAPATAN-RISHABH TRAVELS 07432-240424, 240324
C/o OSHO TRAVEL, Opp. Bus Stand
KOTA-RISHABH TRAVELS 0744-2440313. 2401125
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Allanddal Park, Keshavpura
NATHDWARA-RISHABH TRAVELS 02953-230058, 230320
C/o ASHAPURA TRAVELS. Opp. Private Bus Stand, Nr. Kadayata Bhawan
RAJSAMAND-RISHABH TRAVELS 02952-225392, 223281
C/o DARSHAN TRAVELS, Near Ramdev Temple
PILANI-RISHABH TRAVELS 01596-245949. 245249. 9413366999
C/o AJAYRAJ TRAVELS. Opp. Bus Stand

E-Mail : info@rishabhbus.com
Web : www.rishabhbus.com

भूलेंगे नहीं, इस दाल का स्वाद

प्रायः गृहणियां इस सोच से परेशान रहती हैं कि रोज सब्जी क्या बनाएं। बाज़ार में मिलने वाली सब्जियां भी सुबह-शाम, एक दिन छोड़कर दूसरे दिन बन ही जाती हैं। इस परेशानी से निजात पाने के लिए आप कुछ नया ट्राई करें। साधारण तरीके की जगह कुछ अलग ही तरह से दाल पकाकर परिवार का स्वाद बढ़ाएं। स्वाद भी ऐसा कि भूल न पाएं।

- कमला गौड़

दाल बुखारा

सामग्री : उड़द दाल- 1 कप, प्याज-1, टमाटर-1, मक्खन-1, हरी मिर्च-2, लहसुन-अदरक का पेस्ट-1 चम्मच, गुड़-1 बड़ा चम्मच, जीरा-1 चम्मच, भुना जीरा पाउडर - 1 चम्मच, तेज पत्ता-1 नग, धनिया पाउडर-1 चम्मच, कसूरी मेथी-1 छोटा चम्मच, हल्दी पाउडर-आधा चम्मच, हरा धनिया-कटा हुआ, हींग-2 चुटकी, नमक-स्वादानुसार।

विधि : सबसे पहले उड़द की दाल को धो लें और फिर 7-8 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। दाल भीगने के बाद उसे एक बार और धो लें। फिर दाल को प्रेशर कुकर में डालें। साथ ही 3 कप पानी, तेज पत्ता और 1 छोटा चम्मच नमक मिलाकर मीडियम आंच पर चढ़ा दें। कुकर में 3-4 सीटी लगने के बाद गैस बंद कर दें और कुकर की गैस अपने आप निकलने दें। कुकर की गैस निकलने के बाद उसे खोलें और फिर उसे चम्मच की मदद से मैश कर लें। अब एक फ्राई पैन में घी डालकर गर्म करें। घी गरम होने पर इसमें जीरा और हींग डालें ओर हल्का सा फ्राई कर लें। जीरा चटकने पर पैन में प्याज, हरी मिर्च डालें और हल्का सा भूनें। इसके बाद पैन में अदरक-लहसुन का पेस्ट डालें और सभी मसालों को सुनहरा होने तक भून लें।

अब कटे हुए टमाटर और स्वादानुसार नमक पैन में डालें और टमाटर के गलने तक पका लें। इसके बाद पैन में 1 कप पानी डालें और आंच को तेज करके 5 मिनट तक पका लें। इसके बाद पैन में टमाटर प्यूरी, गुड़, भुना जीरा पाउडर, हल्दी पाउडर और धनिया पाउडर डाल दें और ढक कर 6-7 मिनट तक पकाएं। अब ग्रेवी में उड़द की दाल मिला दें और पैन को ढककर धीमी आंच पर 7-8 मिनट तक पकाएं। इसके बाद कसूरी मैथी के पत्ते दाल में डालें और चलाकर गैस बंद कर दें। स्वादिष्ट बुखारा दाल तैयार है। इसमें ऊपर से मक्खन डालें और गर्मा-गरम रोटियों के साथ पूरे परिवार के साथ आनंद लें।

ढाबा स्टाइल तड़का दाल

सामग्री : अरहर दाल-2 कप, टमाटर-3, प्याज-2, हरी मिर्च-3, धनिया पाउडर-2 छोटे चममच, हल्दी पाउडर-1 छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-1 चम्मच, जीरा-1 छोटा चम्मच, अदरक-लहसुन का पेस्ट-1 चम्मच, हींग-1 चुटकी, साबुत लाल मिर्च-1, मक्खन-2 चम्मच, नमक-स्वादानुसार।

विधि : सबसे पहले दाल को धोकर 20 मिनट के लिए भिगो कर रख दें। भीगी हुई दाल को कुकर में डाल कर उसमें आवश्यकतानुसार पानी, हल्दी और नमक मिलाकर दाल को पकाएं। कुकर में दो सीटी आने के बाद आंच को धीमी कर दें और तीसरी सीटी लगने के बाद गैस बंद कर दें। अब कड़ाही में एक चम्मच मक्खन डाल कर गर्म करें। मक्खन गर्म होने पर उसमें प्याज, अदरक-लहसुन पेस्ट और हरी मिर्च डालकर भूनें। प्याज सुनहरा होने पर कड़ाही में टमाटर डालें और मुलायम होने तक पकाएं। इसके बाद उसमें लाल मिर्च और धनिया पाउडर डालें और मध्यम आंच पर दो मिनट तक पकाएं। अब कड़ाही में उबली हुई दाल डालें और मध्यम आंच पर दो मिनट पकाएं। उसके बाद गैस बंद कर दें। अब एक पैन में बचा मक्खन गर्म करें।

दाल फ्राई

सामग्री : तुअर दाल-50 ग्राम, चने की दाल-50 ग्राम, हल्दी पाउडर-एक चौथाई चम्मच, प्याज-2, टमाटर-2, लहसुन कलियां-5, अदरक-1 टुकड़ा, सूखी लाल मिर्च-2, जीरा-आधा चम्मच, धनिया पाउडर-1 चम्मच, हींग-आधा चम्मच, जीरा पाउडर-1 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-1 चम्मच, गरम मसाला-आधा चम्मच, नमक-स्वादानुसार, घी-2 चम्मच, हरा धनिया-कटा हुआ।

विधि : दोनों दालों को अलग-अलग एक घंटा भिगो दें। प्रेशर कुकर में भीगी हुई दालें, नमक, हल्दी पाउडर और पानी डाल कर 2 सीटी आने तक उबाल लें और प्रेशर कुकर को अपने आप ठंडा होने दें।

अब दाल फ्राई करने के लिए मसाला तैयार करें। इसके लिए एक पैन में घी डालकर गर्म करें और इसमें हींग और जीरा डाल कर तड़का लें। फिर इसमें अदरक और लहसुन डाल कर हल्का भूरा होने दें।

जब यह भूरा हो जाए तो इसमें प्याज डाल कर धीमी आंच पर गुलाबी होने तक फ्राई करें। अब इसमें हरे धनिये को छोड़कर बाकी बची हुई सभी सामग्री डालें और धीमी आंच पर टमाटर नर्म होने तक पकाएं।

अब प्रेशर कुकर खोलिए और दाल इस पैन में डालकर 2 मिनट के लिए उबलने दें और फिर हरे धनिये से सजा कर सर्व करें।

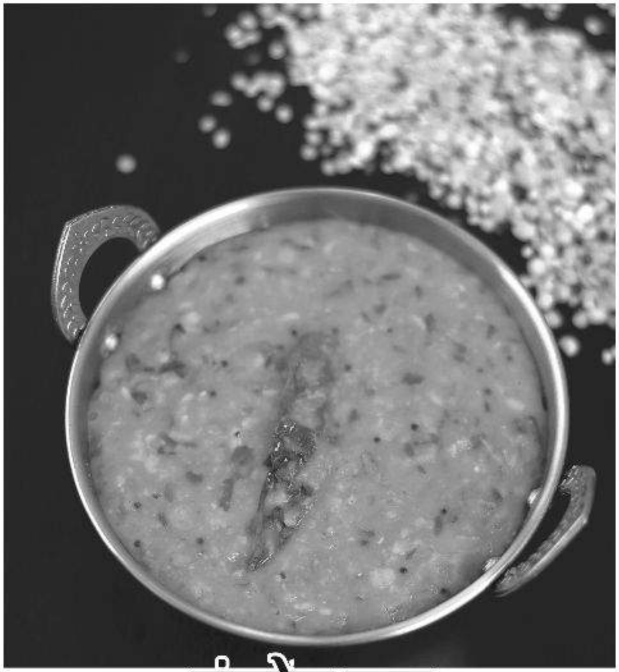

पंचमेल दाल

सामग्री : चना दाल - 30 ग्राम, अरहर(तूअर दाल) - 30 ग्राम, उड़द दाल-30 ग्राम, मूंग दाल-30 ग्राम, मसूर दाल-30 ग्राम, घी-2-3 चम्मच, हर धनिया-कटा हुआ, जीरा-आधा छोटा चम्मच, हींग-आधी चुटकी, हल्दी पाउडर-आधा छोटी चम्मच, धनिया पाउडर-1 छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-एक चौथाई छोटी चम्मच, टमाटर-1, अदरक-1 टुकड़ा, बड़ी इलायची-1, लौंग-2, काली मिर्च-8-10, करी पत्ता-8-10, साबुत लाल मिर्च-2, हरी मिर्च-2, नमक-स्वादानुसार।

विधि : सारी दालों को साफ करें धोइये और 1 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। अतिरिक्त पानी हटा कर लें। सारी दालों को कुकर में डालें और कुकर में दाल से 1 इंच ऊपर तक पानी डाल दें। 1 छोटी चम्मच नमक और आधी हल्दी डाल दें। कुकर का ढक्कन बन्द कर दाल को 1 सीटी आने तक पका लें। इसके बाद गैस धीमी करके दाल को 2 मिनिट और पकने दें और इसके बाद गैस फ्लेम बन्द कर दें। कुकर का प्रेशर खत्म होने के बाद कुकर खोलें।

टमाटर को बारीक काट कर लें। पैन में 2-3 टेबल स्पून घी डाल कर गर्म करें, गरम घी में जीरा डाल लें। इसके बाद हींग डाल दें, बची हुई आधी हल्दी, धनिया पाउडर, बारीक कटा हुआ अदरक, बारीक कटी हरी मिर्च, करी पत्ते, साबुत लाल मिर्च और लम्बाई में कटी हरी मिर्च डालकर हल्का सा भून लें। फिर, इसमें बारीक कटा हुआ टमाटर डालकर मिक्स करें। मसाले को तब तक भूनिए जब तक कि मसाले से घी न अलग होने लगें।

साबुत मसाले में बड़ी इलायची को छीलकर इसके बीज निकाल लें और इन बीजों को काली मिर्च और लौंग के साथ दरदरा कूट कर लें। इसे भी टमाटर के मसाले में डाल दें। साथ ही लाल मिर्च पाउडर भी डाल दें। मसाले में से घी अलग होने पर मसाला भूनकर तैयार है। उबाली हुई दाल को मसाले में डाल दें। दाल को अच्छी तरह से मिला लें और थोड़ा सा हरा धनिया डालकर मिक्स करें। दाल को 1-2 मिनिट और पका लें। दाल पककर तैयार है, गैस बंद करें और दाल को प्याले में निकालें। गरमागरम पंचमेल दाल को और भी टेस्टी बनाने के लिए ऊपर से थोड़ा सा घी डाल दें। दाल पर हरा धनिया डालकर सर्व करें।

31 लाख में बिका मालाणी घोड़ा

विविध

राजस्थान के सायला कस्बे के निकटवर्ती गांव में चार साल का 5 फीट 4 इंच लम्बाई का मालानी नस्ल का घोड़ा 31 लाख रुपए में बिका है। घोड़े को सिरोही पिंडवाड़ा के बंटू भाई राजपुरोहित ने खरीदा है।

मजबूत कद काठी, लंबाई व खूबसूरती के कारण इस घोड़े की बड़ी कीमत मिली है। घोड़े के मालिक भंवरसिंह बताते हैं कि जब यह घोड़ा छः माह का था तब से लगातार खरीदारों का तांता लग गया था। तब खरीदारों ने इसकी कीमत नौ लाख लगाई थी, लेकिन हमने अपने यहीं इसे पालने की सोची। भंवरसिंह खुद किसान हैं और घोड़े पालने का शौक है। इनके पास चार-पांच घोड़े हैं। मालाणी घोड़ों की किस्म अनमोल है। यह दिलबाग, पोषाणा नाम के घोड़े की ब्लड लाइन है। इनकी लम्बी कद काठी और इनकी स्फूर्ति इन्हें अलग पहचान दिलाती है। सुकड़ी व जवाई नदी से जुड़े क्षेत्र इनके उत्पत्ति क्षेत्र है। सायला, रानीवाड़ा, भीनमाल तहसील में इनकी अच्छी संख्या है। इन घोड़ों को बाड़मेर के प्रसिद्ध तिलवाड़ा पशुमेला में ले जाकर बेचा जाता था। तभी से इनका नाम मालाणी पड़ा। ये स्वभाव से काफी तेज और सेंसेटिव होते हैं। इनके दोनों कान मिलने पर हार्ट जैसा शेप दिखता है जो इन्हें काफी खुबसूरती देता है। ये गुस्सैल स्वभाव के होने की वजह से इनकी देखभाल परिवार के सदस्य की भांति की जाती है। ऐसा नहीं होने पर इनका स्वभाव अक्सर उग्र हो जाता है।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का उत्तरार्द्ध सुकून भरा रहेगा, इच्छित की प्राप्ति होगी लेकिन बेवजह की यात्राएँ परेशानी में डाल सकती हैं। भौतिक सुख में वृद्धि की संभावना, व्यापार में नए प्रयोग और वैवाहिक जीवन में उलझनें। स्वास्थ्य में नरमी, पारिवारिक मसलों से तनाव का सामना करना पड़ सकता है।

वृषभ

आपका आक्रामक रूख नुकसानदेह साबित हो सकता है। आर्थिक पक्ष से जूझना पड़ेगा। मित्रों से सावधान रहें। सन्तान के प्रति चिन्ता रहेगी। व्यापारिक कार्यों में नया प्रयोग न करें, वायु रोग तकलीफदेह होगा। कर्म में विश्वास रखें, भाग्य के भरोसे कुछ भी न करें।

मिथुन

शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास आपको सफलता दिलाएंगे। स्थाई महत्व के कार्य जैसे भवन निर्माण आदि सम्पन्न होंगे, शासकीय एवं न्यायिक मामले भी पक्ष में रहेंगे, राजनीति से जुड़े जातकों को नई दिशा मिलेगी। आर्थिक पक्ष सामान्य, व्यापार एवं नौकरी में सावधानी बरतें, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, दाम्पत्य जीवन में तनातनी।

कर्क

यह माह मान-सम्मान दिला सकता है, लम्बी यात्रा के योग, जिससे आर्थिक लाभ भी मिल सकता है। जिनके प्रशासकीय एवं राजकीय मामले लम्बित हैं, उन्हें खुशखबरी मिल सकती है, अपनी ऊर्जा का प्रयोग सकारात्मकता के लिये करें, आर्थिक पक्ष मजबूत, शारीरिक पीड़ाओं का शमन होगा और व्यापार में नए अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह

माह के उत्तरार्द्ध में नये अनुबन्ध संभव, नौकरी एवं पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि, शासकीय एवं न्यायिक मामलों में प्रगति एवं स्थिति पक्ष में रहने के संकेत मिलेंगे, भौतिक वस्तुओं पर खर्च अधिक, आर्थिक पक्ष मजबूत एवं धनागम के नए स्रोत बनेंगे। दाम्पत्य जीवन में स्थिरता, व्यवसाय के लिए अनुकूल समय परन्तु नौकरीपेशा जातक संयम बरतें।

कन्या

नए लोगों से मुलाकात जीवन में परिवर्तन का संकेत देगी। वाणी एवं वित्तीय लेन-देन में सावधानी जरूरी, आर्थिक दृष्टि से यह माह सन्तोषप्रद, व्यापार में उतार-चढ़ाव। दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ रहेगा, संतान पक्ष सुकूनदायक, भाग्य पूर्ण साथ देगा।

तुला

कोई भी कार्य करने से पहले रूपरेखा अवश्य बनाएं। प्रारूप के अनुसार कार्य से सफलता मिलेगी। सहकर्मियों का भरपूर सहयोग मिलेगा, आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा एवं आय के नए स्रोत खुलेंगे, जोड़ों का दर्द परेशान कर सकता है, नौकरी में तरक्की एवं व्यवसाय में नए निवेश के योग हैं।

वृश्चिक

माह का उत्तरार्द्ध आत्मविश्वास में वृद्धि करेगा साथ ही क्रोध में भी वृद्धि होगी, अतिआत्मविश्वास में गैर-जिम्मेदाराना कदम न उठायें। आर्थिक पक्ष सामान्य, व्यवसाय में मंदी, दाम्पत्य जीवन आनन्दमय रहेगा।

धनु

यह माह उत्साह एवं आनन्दभरा रहेगा, राजनीति के क्षेत्र में काम करने वालों को नए अवसर प्राप्त होंगे, परिवार के साथ अधिक व्यस्त रहेंगे एवं खर्च भी अधिक होगा, धन के मामले में कोई भी निर्णय लेने से पहले दस बार सोचकर कार्य करे, संतान की ओर से हर्षोल्लास, वैवाहिक जीवन में स्थिरता, परिवार में अनबन रहे।

मकर

मान-सम्मान के अवसर बनेंगे, पूर्व निर्धारित यात्रा एनवक्त पर टल सकती है, वित्तीय लाभ के भरपूर अवसर प्राप्त होंगे, मुमकिन है कि अतीत से जुड़ा कोई शख्स आपसे सम्पर्क करे। व्यवसाय के प्रति सचेत रहें, उधार की प्रवृत्ति से बचें, नौकरी में तरक्की के अवसर, वात रोगों से परेशानी संभव।

कुम्भ

बौद्धिक क्षमता का विकास, धर्म-कर्म में रूचि, सन्तान पक्ष से सुखद समाचार, सामाजिक दायित्वों की पूर्ति रहेगी। किसी के भरोसे कार्य नहीं करें, व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा जातकों के लिए समय अनुकूला। दाम्पत्य जीवन में तनातनी।

मीन

समय पक्ष में है, भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी, राजकीय एवं शासकीय पक्ष से हर्षदायी समाचार, समय एवं ऊर्जा परोपकार में अधिक खर्च होगी, शत्रुओं से सावधान रहें, फिजूलखर्च कम करें नहीं तो आर्थिक परेशानियों से झूझना पड़ सकता है। नौकरी के लिए प्रयासरत जातकों को सफलता मिलेगी।

हार्दिक शुभकामनाएं सहित
DAAWAT
THE BASMATI SPECIALIST
94141-60671 (Sirumal)
94141-57343 (Dilip)
94141-62036 (Lakhmichand)
99503-00412 (Lakhmichand)
POPULAR
ब्राण्ड
दलिया, बेसन, बाटी–आटा के निर्माता
MP का आदित्य आटा
एवं
पापुलर ब्राण्ड हलवाई
स्पे. मैदा उपलब्ध है
मोहन ट्रेडिंग कम्पनी
अधिकृत विक्रेता : दावत बासमती चावल
हर प्रकार के चावल, दालें, मैदा, सूजी, बेसन, पौहा के होलसेल व्यापारी
153, कृषि उपज मण्डी यार्ड, उदयपुर (राज.) Phone : 0294-2483671, 2464036 (R)
प्लांट : जी–1, 414, सिक्योर मीटर के पीछे, कैम्बे होटल के पहले वाली गली, भामाशाह इण्ड. एरिया, कलड़वास, उदयपुर (राज.)

आर्बिट्रेशन कानून में संशोधन की मांग

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के डायरेक्टर डॉ. अरविन्दर सिंह चार्टेड इंस्टीट्यूट ऑफ आर्बिट्रेटर लंदन के बुलावे पर चौथी अंतरराष्ट्रीय आर्बिट्रेशन कांफ्रेंस में भाग लेने नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी जोधपुर गये। पिछले दिनों आर्बिट्रेशन कानून के संशोधन की समीक्षा में मेडिकल प्रोफेशन को आर्बिट्रेशन में प्रत्यक्ष मान्यता नहीं मिलने पर डॉ. सिंह ने प्रश्न उठाया। जिसके उत्तर में पैनल ने बताया कि हालांकि मेडिकल प्रोफेशन का नाम सीधे तौर पर तो नहीं है पर साइंटिफिक व टेक्निकल फील्ड के अंदर मेडिकल प्रोफेशन को रखा जा सकता है। यह आवश्यक है कि आर्बिट्रेटर बनने के लिए कम से कम दस साल का अनुभव तथा विभिन्न कानूनों की जानकारी आवश्यक है। जैसे की लेबर लॉ, कॉमर्शियल लॉ, टोर्ट तथा कॉन्ट्रैक्ट लॉ इत्यादि। इस कानून से आर्बिट्रेटर यानी प्राइवेट जज द्वारा कोर्ट के बाहर आसानी से मुकदमे सुलझाए जा सकेंगे जिसमें कम समय तथा कम पैसे में जनता को लाभ मिलेगा। डॉक्टर्स के आर्बिट्रेटर बनने पर मेडिकल मुकदमों का समाधान आसानी से हो सकेगा।

महिला समृद्धि बैंक को तीन अवार्ड

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड ने सहकारिता क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ तीन अवॉर्ड प्राप्त कर रिकॉर्ड बनाया। बैंक अध्यक्ष विद्याकिरण अग्रवाल ने बताया कि सहकारिता, आइटी एवं बैंकिंग की राष्ट्रीय स्तर की एकमात्र एवं प्रतिष्ठित मेग्जीन बैंकिंग फ्रंटियर मुंबई की ओर से बैंक को उत्तर भारत का सर्वश्रेष्ठ महिला सहकारी बैंक अवार्ड, बेस्ट मोबाइल बैंकिंग एप एवं बेस्ट डाटा सिक्यूरिटी अवार्ड से सम्मानित किया गया। गोवा में हुए समारोह में अवार्ड लेने वालों में उपाध्यक्ष सुनीता मांडावत, बैंक निदेशक विमला मूंदड़ा, मीनाक्षी श्रीमाली, विशेष आमंत्रित सदस्य डॉ. किरण जैन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत एवं आईटी हेड निपुण चित्तौड़ा थे।

एजुकेशन वर्ल्ड रैंकिंग में सीपीएस

उदयपुर। एजूकेशन वर्ल्ड मैगजीन ने स्कूल रैंकिंग में सेन्ट्रल पब्लिक सीनियर सैकंडरी स्कूल, न्यू भूपालपुरा को प्रथम, राजस्थान में तृतीय व भारत में छब्बीसवें स्थान पर घोषित किया है। स्कूल को प्रथम स्थान सहशिक्षा तथा छात्रावास सुविधा युक्त विद्यालय की श्रेणी में प्राप्त हुआ। इसके लिए निदेशिका अलका शर्मा को दिल्ली में सम्मानित किया गया।

राजमल अध्यक्ष, अक्षय महामंत्री

उदयपुर। उदयपुर रेडिमेड होजरी एसोसिएशन के चुनाव में अध्यक्ष राजमल जैन निर्विरोध चुने गए। वे छठी बार इस पद पर चुने गए हैं। वरिष्ठ उपाध्यक्ष ललित लोढ़ा, जसवन्त दोशी, महामंत्री अक्षय जैन, उपाध्यक्ष भरत सिंघवी, सहमंत्री मदन सियाल, कोषाध्यक्ष मदनलाल वालावत, संगठन मंत्री मोईज अली, सांस्कृतिक मंत्री सोनू नागपाल निर्वाचित घोषित हुए।

मॉडल्स ने दिखायी प्रतिभा

उदयपुर। दिनकर ग्रामीण विकास संस्थान व बीसीडी कॉलेज ऑफ डिजाइनिंग में पिछले दिनों फैशन शो का आयोजन किया गया। जिसमें 70 से अधिक मॉडल्स ने संस्थान की महिलाओं द्वारा निर्मित परिधान पहन कर रेम्प पर कैटवॉक किया।
फैशन शो में गुजराती, कडिया, डिजाइनर कुर्ते, लहंगा चुन्नी, इंडो वेस्टर्न व बच्चों के परिधान संस्था प्रधान मीना शर्मा, राजेश शर्मा व रिमझिम शर्मा द्वारा डिजाइन किए गए थे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. स्वीटी छाबड़ा, श्रद्धा गट्टानी, मोनिका मेवाड़ा, सुलभ, अख्तर सिद्दीकी व बीसीडी कॉलेज के अंकुर मेहता थे। संचालन राजीव सिंह राव ने किया। राजेश शर्मा ने बताया कि शीघ्र ही राष्ट्रीय स्तर पर फैशन शो का आयोजन किया जाएगा।

वजीरानी बेस्ट एम.डी. अवार्ड से सम्मानित

चित्तौड़गढ़। अरबन को-ऑपरेटिव बैंक की प्रबन्ध निदेशक वन्दना वजीरानी को राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट एम.डी. अवार्ड से गोवा में आयोजित राष्ट्रीय सहकारी बैंकिंग समिट में सम्मानित किया गया। प्रबन्धक जे. पी. जोशी के अनुसार 18 व 19 सितम्बर को गोवा में आयोजित कार्यक्रम में देश भर से लगभग 600 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में यह

गरिमामय अवार्ड वजीरानी को प्रदान किया गया। इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आई. एम. सेठिया, बैंक चेयरपर्सन विमला सेठिया एवं निदेशक राधेश्याम आमेरिया भी उपस्थित थे। अवार्ड गोवा के सहकारिता मंत्री गोविन्द गोडे एवं बैंकिंग फ्रन्टियर के प्रतिनिधि ने प्रदान किया।

सुपर-30 अवाडर्स से सम्मानित

उदयपुर। परफेक्ट इवेंट्स के सूर्य प्रकाश सुहालका और आईटी गुरुकुल के संतोष कालरा ने संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों शहर के चुनिन्दा क्षेत्रों के 30 जाने-माने लोगों को सुपर-30 अवार्ड्स से सम्मानित किया। मुख्य अतिथि अर्थ डायग्नोस्टिक्स के एमडी डॉ. अरविन्दर सिंह थे। पुरस्कृत होने वालों में प्रशासनिक अधिकारी(दिनेश कोठारी, मुकेश कलाल) समाजसेवी(जितेन्द्र सिंह राठौड़, प्रभुदास पाहुजा, डॉ. राजमती सुराणा) शिक्षाविद्(स्व. विजय श्रीमाली को मरणोपरांत), व्यवसायी(छोगालाल भोई, रामप्रसाद सुहालका, पुष्पेन्द्र परमार, जय वलेचा दिल फरियाद) शिक्षक एवं प्रशिक्षक(राहुल मेघवाल, डॉ. रंजना जोशी, विनोद साहू, सुशील सेन) विश्व रिकॉर्डधारी(इकबाल सक्का, विनय भाणावत, मुकेश परिहार) योग प्रशिक्षक हनुवंत सिंह, पर्यावरण प्रेमी भुवनेश ओझा, प्रोफेशनल(सीए ओपी चपलोत व डॉ. उपवन पंड्या) शामिल थे।

आनंद वृद्धाश्रम में सामाजिक उत्थान दिवस

उदयपुर। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर सामाजिक, न्याय एवं अधिकारिता विभाग एवं तारा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में सेक्टर 14 स्थित आनंद वृद्धाश्रम में सामाजिक उत्थान दिवस मनाया गया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक मान्धातासिंह ने कहा कि माता-पिता का आशीर्वाद जिसने भी प्राप्त कर लिया मानो उसने पूरी दुनिया जीत ली। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस सचिव पंकज कुमार शर्मा ने कहा कि जैसे-जैसे हम साधन सम्पन्न होते हैं, अपने माता-पिता को उपेक्षित करने लगते हैं। आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर डॉ. हरीश माथुर ने भी विचार व्यक्त किए। तारा संस्थान की संस्थापक-अध्यक्ष कल्पना गोयल ने कहा कि मुझे खुशी है कि भगवान ने हमें वृद्धों के सेवा कार्य की जिम्मेदारी सौंपी है। संयोजन सीईओ दीपेश मित्तल ने किया।

कारागृह में स्वास्थ्य जांच कक्ष का उद्‌घाटन

उदयपुर। केन्द्रीय कारागृह के महिला सुधारगृह में स्वास्थ्य जांच कक्ष का उद्घाटन इनरव्हील डिस्ट्रिक्ट 305 की चेयरमैन रचना सांघी ने किया। क्लब अध्यक्ष रेखा भाणावत ने बताया कि कक्ष में दवाइयां रखने के लिए अलमारी, बैंच व नेबुलाइजर मशीन भेंट की गई। संयोजक मधु सरीन ने बताया कि जांच कक्ष में टीकाकरण, गर्भावस्था में खानपान संबंधी, लंबाई, वजन और अनेक स्वास्थ्य जागरूकता संबंधी सूचनाएं भी कक्ष की दीवारों पर लगाई गई।

आर. के. मॉल में जूडिओं का पहला स्टोर

उदयपुर। टाटा समूह के जूडिओं ने उदयपुर के पंचवटी स्थित आर. के. मॉल में अपना पहला स्टोर खोला है। आर. के. मॉल के प्रबंध निदेशक कोमल कोठारी ने बताया कि जूडिओं ब्रांड आमजन की पहुंच में है, क्योंकि टाटा समूह का यही उद्देश्य है कि ब्रांड ऐसा हो जिसका आमजन आसानी से उपयोग कर सके। निदेशक राजू कोठारी ने कहा कि स्टोर में हर आइटम की रेंज 999 रुपये से कम है।

गौरव गोयल ने संभाला कार्यभार

उदयपुर। पिछले दिनों खान एवं भूविज्ञान निदेशालय में नवनियुक्त निदेशक गौरव गोयल ने पदभार संभाल लिया। उन्होंने अधिकारियों के साथ अपनी पहली बैठक में निदेशालय के विभिन्न प्रभागों की प्रगति की जानकारी लेने के साथ राजस्व वृद्धि पर चर्चा की। उन्होंने उन तमाम खदानों का ब्यौरा उन्हें देने के निर्देश दिए जो निरस्त की जा चुकी हैं और कब्जा विभाग के पास है। उन्होंने प्रदेश में नए खनिजों के एक्सप्लोरेशन के चल रहे कामों की जानकारी लेते हुए। खनिज अभियन्ताओं को अपने जिम्मे का काम समय पर करने को कहा।

बिजनेस नेटवर्क इंटरनेशनल के अध्यक्ष बने डॉ. गुप्ता

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापारियों को जोड़कर एक-दूसरे का साथी बनकर बिजनेस को बढ़ावा देने के क्षेत्र में कार्यरत बिजनेस नेटवर्क इंटरनेशनल यनि बीएनआई के सफायर चैप्टर की नवगठित कार्यकारिणी में डॉ. आनन्द गुप्ता अध्यक्ष, वैभव सिंह राठौड़ उपाध्यक्ष और पूजा जैन कोषाध्यक्ष चुने गए। डॉ. गुप्ता ने बताया कि बीएनआई दुनिया की सबसे बड़ी नेटवर्क रेफरल संस्था है। उदयपुर के बीएनआई की शुरुआत चंद महीने पहले हुई और एक साल में इसकी सदस्यता 110 तक पहुंच गई।

मानव को 'भीण्डर रत्न' सम्मान

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' को भीण्डर में नगर पालिका द्वारा आयोजित नवरात्रि समारोह में 'भीण्डर रत्न' से सम्मानित किया गया। सम्मान प्रदान करते हुए क्षेत्रीय विधायक गजेन्द्र सिंह शक्तावत ने कहा कि भीण्डर में जन्मे मानव ने अपनी सेवा यात्रा से न केवल भीण्डर अपितु देश-प्रदेश का नाम रोशन किया है। मानव को विधायक शक्तावत, पालिकाध्यक्ष हेमन्त साहू व उपाध्यक्ष गिरीश सोनी ने अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मान प्रदान किया। समारोह का संचालन महिम जैन ने किया।

राव राजस्थान बार के उपाध्यक्ष

जोधपुर(प्रब्यू)। बार कौंसिल ऑफ राजस्थान की साधारण सभा की पिछले दिनों हाईकोर्ट परिसर स्थित बीसीआर मुख्यालय के सभागार में अध्यक्ष चिरंजीलाल सैनी की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें उदयपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता रतनसिंह राव को नया उपाध्यक्ष व चार अन्य को को-चेयरमैन मनोनीत किया गया। बैठक में कौंसिल के वर्ष 2019-20 के वार्षिक बजट का अनुमोदन भी किया गया।

पेपर बैग निर्माण पर कार्यशाला

उदयपुर। रोटरी मीरा ने सिटी प्राइड पब्लिक स्कूल में वेस्ट पेपर बैग बनाने की कार्यशाला का आयोजन किया। मुख्य अतिथि उपमहापौर लोकेश द्विवेदी थे। स्कूल की प्राचार्या ज्योत्सना जैन ने बताया कि कार्यशाला में नो टू प्लास्टिक बैग का संदेश दिया गया। उन्होंने बताया कि वेस्ट पेपर बैग के लिए राधिका राठौड़ एवं जितेन्द्र भट्ट को सम्मानित किया गया। रोटरी मीरा की अध्यक्षा हर्षा कुमावत, कविता बलदेव, डॉ. उर्मिला जैन आदि मौजूद थी। संचालन तरुणा एवं चंचल ने किया।

ज्योतिष केन्द्र का शुभारम्भ

उदयपुर। शिवाजी नगर स्थित रश्मि पुंज ज्योतिष वास्तु परामर्श केन्द्र और केजी ट्यूर एण्ड ट्रेवल्स का गत दिनों उद्घाटन हुआ। ज्योतिषाचार्य डॉ. अलकनन्दा शर्मा और पं. कृष्णगोपाल शर्मा ने बताया कि उद्घाटन एडिशनल कमिश्नर इनकम टैक्स एम रघुवीर, राजस्थान विद्यापीठ के वीसी एस एस सारंगदेवोत व ज्वाइंट डायरेक्टर इन्वेस्टिगेशन इनकम टैक्स राजेश कुमार ने किया।

जलपरी गौरवी का सम्मान

जयपुर(प्रब्यू)। इंग्लिश चैनल पार करने वाली उदयपुर की जलपरी गौरवी सिंघवी का पिछले दिनों राज्यपाल कलराज मिश्र ने सम्मान किया। सबसे कम उम्र में ये उपलब्धि अर्जित करने वाली गौरवी की मां शुभ सिंघवी ने बताया कि राज्यपाल ने गौरवी को भविष्य में इस तरह की उपलब्धियां अर्जित करते रहने के लिए शुभकामनाएं दी।

संदीप बने सभापति

चित्तौड़गढ़। नगर परिषद में राज्य सरकार द्वारा नेता प्रतिपक्ष संदीप शर्मा को सभापति मनोनीत किया गया है। स्वायत्त शासन विभाग के निदेशक एवं संयुक्त सचिव उज्जवल राठौड़ ने सितम्बर के दूसरे सप्ताह में जारी आदेश में नगर परिषद के वार्ड संख्या 40 के पार्षद एवं नेता प्रतिपक्ष संदीप शर्मा को आगामी चुनाव तक सभापति नियुक्त किया है। सभापति सुशील शर्मा और उपसभापति भारत जागेटिया के विरूद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगने के बाद राज्य सरकार द्वारा उनके निलंबन के आदेश जारी किए गए थे।

शिवांगी ने संभाला कार्यभार

उदयपुर। आईएएस शिवांगी स्वर्णकार ने 9 अक्टूबर को जनजाति आयुक्त का पदभार संभाला। उन्होंने कहा कि उनकी प्राथमिकता हर योजना का लाभ लोगों तक पहुंचाने की है। वे जनजाति अंचल में लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगी। उन्होंने कहा कि कई नवाचारों व विशेष प्रोजेक्ट्स के माध्यम से फील्ड मॉनिटरिंग व लक्ष्य पूर्ति पर जोर देंगी।

गजनेर पैलेस को बेस्ट हेरिटेज होटल सम्मान

उदयपुर। विश्व पर्यटन दिवस पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हुए राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार वितरण समारोह में एचआरएच ग्रुप उदयपुर के गजनेर पैलेस को बेस्ट हेरिटेज होटल के सम्मान से नवाजा गया। मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति एम. के. वेंकैया नायडू थे।

समारोह में एचआरएच ग्रुप के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय के राज्यमंत्री प्रहलाद सिंह पटेल से सम्मान ग्रहण किया।

एस-प्रेसो की लॉन्चिंग

उदयपुर। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड टेक्नो मोटर्स ने पिछले दिनों टेक्नो मोटर्स आरीना शोरूम पर नई गाड़ी एस-प्रेसो लॉन्च की। इस अवसर पर कंपनी के एरिया मैनेजर सौरभ हिंगले, महिन्द्रा फाइनेंस कम्पनी के गिरिधर पारीक, दिनेश जैन आदि मौजूद थे।

विनय भाणावत सम्मानित

उदयपुर। लेकसिटी के करेंसी मेन के नाम से मशहूर विनय भाणावत को दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम, द्वारका (नई दिल्ली) में इंडियन लिजेंड अवार्ड 2019 से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि महिमा चौधरी ने प्रमाण पत्र एवं विशिष्ट अतिथि रक्षा विशेषज्ञ जी. डी. बक्षी ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

खेल जगत

बेडमिंटन प्रतियोगिता

उदयपुर। डॉ. अनुष्का विधि महाविद्यालय के तत्वावधान में पिछले दिनों मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय अन्तर महाविद्यालयी (महिला/पुरुष) बेडमिंटन प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। जिसका उद्घाटन कर्नल दीपक रामपाल ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के निदेशक डॉ. एस. एस. सुराणा, प्राचार्य डॉ. क्षेत्रपाल सिंह, विश्वविद्यालय क्रीड़ा मंडल के सचिव भीमराज पटेल व पर्यवेक्षक डॉ. ए. के. शुक्ला भी उपस्थित थे। डॉ. अनुष्का मेमोरियल एज्यूकेशनल सोसायटी के सचिव राजीव सुराणा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रतियोगी खिलाड़ियों से खेल की भावना से खेलते हुए भाईचारे को बढ़ाने की अपील की। आयोजन सचिव डॉ. के. के. त्रिवेदी के अनुसार प्रतियोगिता में कुल 26 टीमों ने भाग लिया, जिनमें 11 टीमें महिलाओं की थीं।

राज्य स्तरीय लॉन टेनिस स्पर्द्धा

उदयपुर। 64वीं राज्य स्तरीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयी 17 और 19 वर्ष छात्र/छात्रा लॉन-टेनिस प्रतियोगिता पिछले दिनों विट्टी इंटरनेशनल स्कूल में सम्पन्न हुई। जिसमें व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में 19 वर्ष छात्रा वर्ग में जयपुर की अनुष्का शर्मा विजेता रही, जबकि अजमेर की जिज्ञासा दूसरे और उदयपुर की अनुष्का अग्रवाल तीसरे स्थान पर रहीं। वहीं 17 वर्ष छात्रा वर्ग में जयपुर की सानिया खान विजेता रही। जबकि जयपुर की ही मानसी दूसरे और जयपुर की अर्पिता तीसरे स्थान पर रहीं। 19 वर्ष छात्र वर्ग में जयपुर के आयुष विजेता रहे। अलवर के रजत दूसरे और जयपुर के वेदांत तीसरे स्थान पर रहे। इसी तरह 17 वर्ष छात्र वर्ग में अलवर के लक्ष्य विजेता रहे, जबकि जोधपुर के शफात अली दूसरे और अलवर के वर्धन भाटिया तीसरे स्थान पर रहे। इसी तरह 17 वर्ष छात्र वर्ग में अलवर की टीम विजेता रही। जिला स्तर दलीय स्पर्धा में जयपुर ने तीन वर्ग में पहला स्थान हासिल किया।

निवेदन

'प्रत्यूष' हिन्दी मासिक का नया अंक डाक एवं हॉकर के माध्यम से प्रति माह 27-28 को अपने ग्राहकों को भिजवाया जाता है। यदि सप्ताह भर में 'प्रत्यूष' आपके पते पर नहीं पहुंचती है, तो कृपया फोन नं. : **7597911992, 9414157703** पर सूचना दें। यदि पता बदल गया है, तब भी इस फोन नम्बर पर जानकारी दें ताकि नये पते पर पत्रिका भेजी जा सके।

शोक समाचार

उदयपुर। स्वतंत्रता सेनानी एवं राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री स्व. गुलाब सिंह जी शक्तावत की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाश कुंवर जी का 18 अक्टूबर को उनके उदयपुर स्थित आवास पर निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र देवेन्द्र सिंह शक्तावत(पूर्व अध्यक्ष, नगर पालिका, भीण्डर) व गजेन्द्र सिंह शक्तावत(विधायक, वल्लभनगर) पुत्रियां श्यामा कुंवर, गोविन्द कुंवर, गोपाल कुंवर, नितिका कुंवर तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं। उनका अन्तिम संस्कार भीण्डर में 19 अक्टूबर को हुआ। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी, उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, पूर्व गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया, किरण माहेश्वरी सहित अनेक वरिष्ठ नेताओं ने शक्तावत परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

उदयपुर। श्रीमती एन. तंगमणी धर्मपत्नी श्री विजय कुमार जी जनार्दन का 29 सितम्बर 2019 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र अनिल व सुनील जनार्दन, पुत्री आशा डेविड सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र सहित भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। एएमजी बिल्डर्स एण्ड डवलपर्स प्रतिष्ठान के जनाब अब्बास अली मोटागांव वाला की धर्मपत्नी श्रीमती फातिमा मोटागांव वाला का 8 अक्टूबर, 2014 को असामयिक इंतेकाल हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा मोटागांव वाला व सलोदा वाला परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। भगवतीलाल जी कोठारी(सुपुत्र स्व. पूर्व जिला प्रमुख भंवरलाल जी कोठारी, भीण्डर) का 8 अक्टूबर, 2019 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती मंजू देवी, पुत्र मुकेश कोठारी, पुत्रियां किरण मेहता, रेखा दाणी, संगीता फांफरिया, पायल गिलुण्डिया, दीपिका कुदाल सहित पौत्र, दोहित्र-दोहित्रियों एवं भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

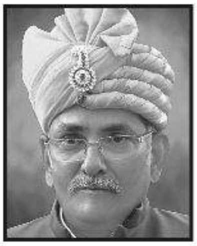

उदयपुर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता स्व. रोशनलाल जी नागदा(सिसारमा) के पुत्र रमेशचन्द्र जी नागदा का 1 अक्टूबर 2019 को आकस्मिक निधन हो गया। वे 62 वर्ष के थे। अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती रूपवती जी, पुत्र यश नागदा, भ्राता देवेन्द्र व चितरंजन, पुत्रियां भावना, नीता, दुर्गा व हेमा तथा बहिन विजया शीला व कमला नागदा का वृहद व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

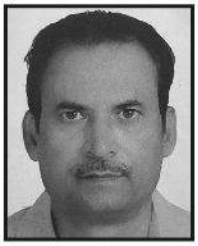

उदयपुर। श्री वेलिंगटन जोसफ पुत्र स्व. श्री एन जेम्स का 11 अक्टूबर 2019 को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती रेणुबाला कोहली, पुत्र रोनिल जोसफ व पुत्री रिशिका सचिन सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

HAPPY DEEPAVALI

LAXMI ENGINEERING WORKS

FEW OF OUR OTHER PRODUCT

✦ Jaw Crusher ✦ Bucket Elevator ✦ Belt Conveyor ✦ 3,4 Roller Mill
✦ Hammer Mill ✦ Ball Mill ✦ Whizzer Classifier ✦ Screw Conveyor
✦ Microzine Plant for 15 & 20 ✦ Microns ✦ Material Handling Equipments

OUR SPECIALTY : CUSTOM BUILT PLANTS & MACHINERY

E- 176, Road No. 5, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur - 313003 Tel. : 0294-2490060, 2490735
E-mail : info@laxmiengineering.com | govind@laxmiengineeering.com Website : www.laxmiengineering.com

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
AADHAR PRODUCTS
डिसाइड®
वाशिंग पाउडर
डिसाइड वाशिंग पाउडर
डिसाइड गोल्ड
एडवाइज़ वाशिंग पाउडर
Decide
डिसाइड बर्तन बार
एडवाइज़ डिटर्जेंट टिकिया
डिसाइड रिफाइन्ड फ्री फ्लो आयोडाईज़्ड नमक
डिसाइड Rose beauty soap RICH ROSE AROMA
डिसाइड Lime beauty soap FOR LUMINOUS FRESHNESS with natural fragrance
डिसाइड MILK & ALMOND beauty soap FOR SMOOTH & SOFT SKIN with natural fragrance
हमारे अन्य उत्पाद
➤ डिसाइड वाशिंग पाउडर
➤ डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
➤ डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
➤ डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
➤ एडवाइस वाशिंग पाउडर
➤ एडवाइस डिटर्जेंट केक
➤ डिसाइड डिशवाश बार
➤ डिसाइड डिशवाश टब
➤ डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
➤ डिसाइड नमक
➤ डिसाइड बाथ सोप
AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
F-264, F-264A, RIICO Ind. Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India
CIN : U15412RJ2005PTC020174
FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com
www.aadharproducts.in

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं
भीण्डर मेसनरी स्टोन माईन्स एण्ड क्रेशर समिति
कार्यालय : सूरजपोल बस स्टेण्ड, भीण्डर, जिला–उदयपुर (राज.) 313603
श्रीनाथ क्रशिंग प्लांट - 9829798667
स्वास्तिक क्रशिंग प्लांट - 9414234471
कमल क्रशिंग प्लांट - 9602566380
सुख भगवान क्रशिंग प्लांट - 9694582176
सिद्धार्थ क्रशिंग प्लांट - 9982865582
E-mail : bhindercrusherassociation@gmail.com

मांगीलाल साहू
Mobile : 9829798667
CHIRAG
CONSTRUCTIONS
"AA Class" Civil & Road Contractor
Out Side Girver Pole Bhinder, Distt. Udaipur (Raj.)
Ph. : 02957-220079, 02957-220442

Founded on Trust. Envisioning Infinite Possibilities.

Becoming a leading Agri Chem company took us foresight, acumen and ability. But it all started with our foundation of trust. Our principles of complete business transparency and an adherence to the highest standards have made us global experts and a partner of choice in our business. We are confident that our belief in trust will lead us to infinite possiblities by leveraging our capabilities across the Agri Sciences value chain by providing integrated and innovative services & solutions by partnering with the best.

OUR BUSINESS PRINCIPLES

ADAPTABILITY
Constantly transforming ourselves like water, we are nimble footed and highly responsive to change.

TRUST
We work with integrity of purpose, honesty in action and fairness in all our dealings.

SPEED
Blazing ahead, we constantly strive to work with speed in the way we observe, think and act.

INNOVATION
The constant quest for horizon, the never ending search for a better, newer way to do things. Innovation is a way of life for us.

Inspired by Science

PI Industries Ltd
www.piindustries.com | info@piindustries.com

Rajasthan State Mines and Minerals Limited

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505
GSTIN 08AAACR7857H1Z0

Mining Prosperity from Beneath the Surface

OUR PRODUCTS

Rock Phosphate

- + 30% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.5% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.54% P_2O_5 Beneficiated Concentrate (200 mesh size)
- + 18% P_2O_5 Powder (RAJPHOS) An Organic Direct Application Fertilizer

Lignite

- Lignite with calorific value of 2800-3200 Kcal/Kg.
- GOI has allotted Lignite blocks having reserve of more than 400 million tons

Gypsum

- Run Of Mine (ROM) Gypsum-used in Cement industries and land reclamation
- Run of Mine (ROM) Selenite- used for manufacture of Plaster of Paris & Ceramics

Limestone

- +95% $CaCO_3$ Low Silica<1.5%, Steel Melting Shop (SMS) grade Limestone

Power

- 106.3 MW capacity Wind Energy Project in operation, with generating capacity of 1650 Lac KWH (units) grid quality clean power per year.
- Projects registered under CDM, UNFCCC (Kyoto Protocol) for CERs earnings.
- 5 MW Solar project also in operation at Gajner, Bikaner

Industrial Beneficiation Plant, Jhamar Kotra

Panoramic View of Giral Lignite Mines, Barmer

Ariel View of Solar Plant at Bikaner

Limestone Crushing Plant at Sanu Mines, Jaisalmer

Wind Energy Farm at Bada Bagh, Jaisalmer

OUR STRENGTHS

- Consolidating leadership in Fertilizer, Steel, Cement, and Power Sector.
- One of the Biggest Revenue Contributing PSU to state exchequer.
- Only Producer of SMS grade Limestone & largest producer of natural Gypsum & High Grade Rock Phosphate in the country.
- Achieved unprecedented growth in Productivity, Turnover, Revenue and Commanding Share in Industrial Mineral Sector of India.
- Established rare distinction of being the first PSU in India to earn foreign exchange by successfully trading Carbon Credit in International Market.
- Taking care for society under CSR. Contribution for Health & Medical, Education, Water Supply, Infrastructure and Community Development, Environment Protection and Plantation in Project Districts.

OUR PROJECTS

Petroleum & Natural Gas

- Wholly owned subsidiary company formed in the name of Rajasthan State Petroleum Corporation Limited for carrying out activities in Petroleum & Natural Gas Sector in Rajasthan.
- A joint venture Company in the name of Rajasthan State Gas Limited with joint venture partner GAIL Gas Ltd has been incorporated for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

Venture to mine out Lignite & Sand

- A joint venture company M/s Barmer Lignite Mining Company Limited has been incorporated with joint venture partner Rajwest Power Limited wherein RSMML hold 51% equity.
- A newly formed strategic business unit has been established to explore business opportunities in sand.

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com